with Compliments to
Janab Manzoor Malik
Kashmir Research Institute
Ravi Nadan
9/6/09

सद बर्ग

صد برگ

یوگی مدن

योगी मदन

Year of Publication : 2006

Publishers : Charu Prakashan
E-293, East of Kailash,
New Delhi.

Printed at : Utkarsh Art Press Pvt. Ltd.
New Delhi.

Composed By : Vision Computers,
Molvi Ganj, Lucknow.
Ph. : 9838644678

Photographs and
Cover Designed By : Vijay Hangal, Mumbai.

Price : Rs. 350/-

Dedicated to
My elder sister....
Shashi Hangal

गुलों में रंग नहीं वह बहारे-नाज़ नहीं
चमन को छोड़ के वह जाने-गुलिस्ताँ जो गया
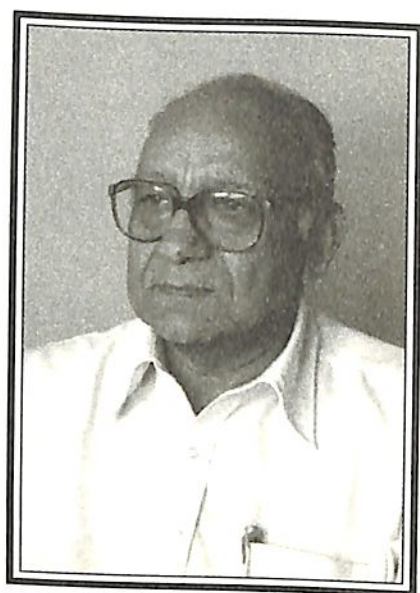
योगी मदन
(28.03.1936 – 10.09.2004)

शख़्सियत

"योगी जी के व्यक्तित्व के प्रति आकर्षण असीमित होता था, जिसे भुलाना सहज नहीं। आत्मप्रशंसा से निरंतर दूर उसके अभिव्याख्य चरित्र को कहना संभव नहीं।............भूख प्यास से अनभिज्ञ था वह साधक। अनुशासित, सुनियोजित उसकी भाषा का जादू बहुत प्रभावी था। उसके शब्द जैसे तारों से जुड़े किसी वाद्य यंत्र की झंकार हों। .... उस की ज़िन्दगी में एक ख़ुशबू–ए–ख़ुदा थी। मेरी सन्तुष्टि उस का ध्येय रहा। मेरी परेशानी नहीं देख पाते थे। कहते, 'हम हैं तो क्या ग़म है'..................

सद बर्ग

शेरो–शायरी उनकी अभिरुचि का अंग थे। विगत वर्ष एक शेर भेजा था, जो यूँ है–

बातिल यह सफ़र, यह वक़्ते-रवाँ
बातिल यह दिल बातिल है जहाँ
बातिल है हर मंज़िल का निशाँ
दौराने-ज़माँ इक पल ठहरा

जैसे जाते जाते ही मुझे संसार की मिथ्यावादिता का रहस्य खोलते चले गए हों। और खुद भ्रम की एक लकीर बन अन्तर्हित हो गए।............ .... आज उसको, उसकी महक को, उसकी आवाज़ को कोने कोने में ढूँढती हूँ।"

राजकिशोरी रावल (आयु 96 वर्ष)
शिक्षाविद्, साहित्यकार,
जम्मू

"........ योगी जी हर दिल अज़ीज़ और सबकी मुसीबत में मददगार दोस्त थे। वह अपना हो या पराया, किसी भी मुसीबतज़दा शख़्स के लिए जो कुछ भी बन पड़ता था, करने के लिए तैयार रहते थे। यहाँ तक कि यह सब करते रहने की वजह से उन्हें अपना घर बसाने की भी चिन्ता न रही।....... उनकी गहरी सोच और शायरी का लोगों पर गहरा असर होता था।"

पद्म भूषण, ए. के. हंगल
फ़िल्म अभिनेता,
मुम्बई

".......योगी जी निहायत संजीदा और ख़ामोश तबियत के मालिक थे। उनमें वह सारी ख़ूबियाँ थीं जो एक बाशऊर इंसान में हो सकती हैं। वह बहुत ही सुलझे हुए अन्दाज़ में सौ बातों की एक बात करते जिससे उनकी गहरी सोच और गहरे मुताले का अन्दाज़ा लग जाता था। अदब, फ़लसफ़े और शेरो–शायरी से उन्हें काफ़ी दिलचस्पी थी।...... ऐसी मतानत और हलीमी कि बहुत लोगों को उन्होंने आख़िरी दम तक यह अहसास न होने दिया कि वह ख़ुद एक अच्छे शायर भी थे। दुख है उन गुलों पर जो बिन खिले ही मुरझा गए।"

– प्रान किशोर

प्रागाश प्रोडक्शन्स,

(टी. वी. सीरियल्स एवं फिल्म निर्माता), पुणे

"........Yogi Madan was at times serious, particularly when discussing matters of life and hereafter, ...generally never tolerated social & family injustices and would always strive hard to bring a just reproachment...... He loved music and enjoyed intellectual discussions. He took great enjoyment in travelling and reading. An extraordinary conversational-ist, he never lost his cool and always maintained his poise. No one can forget his ever smiling face. In him, Nature had its true representative."

- D.V. Dikshit, IAS (Retd.)

Formerly Divisional Comissioner,

(Vindhyachal Division, Mirzapur),

And Secretary, Finance, (U.P. Govt., Lucknow)

"......Yogi Ji chose his own life and its pattern and was far from being an escapist...... He was a great disciplinarian in personal habits and had a very holistic view towards his personal health. With his etiquette and mannerism people often took him to be a retired army officer..... In adverse situations or otherwise he always maintained his poise...... I was lucky to have learnt a lot from his company."

- Col. Priya Vrata (Retd.)

Allahabad

"सरल हृदय योगी जी एक जीवट व्यक्तित्व के धनी थे। अनेक मानवीय गुणों एवं आदर्श मानव मूल्यों से सम्पन्न वे अनेक विषयों पर समान अधिकार रखते थे। ...... जीवन के अनुभव और विभिन्न आंचलिक संस्करण प्रभावोत्पादक शैली में प्रस्तुत करने में वह निपुण थे। संक्षेप में कहा जा सकता है 'एक बार जो मिला, सदा सदा के लिए उन्हीं का हो गया।' उनकी वाणी के माधुर्य में काव्य स्वतः मुखरित हो उठता था।"

– प्रो० सोम दत्त दीक्षित

शिक्षाविद्, साहित्यकार

पूर्व निदेशक

(भाषाएँ व केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

भारत सरकार, नई दिल्ली)

''.....योगी जी की शायराना अभिव्यक्ति एक विशाल हृदय से उत्प्लावित क्रियात्मक तेजस्विता है। .....उनके व्यक्तित्व के संबंध में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि वे टूटे और गिरों का सहारा थे।......''

— **कुसुम मिश्रा**

शिक्षाविद्, साहित्यकार,

दुर्गापुर

सौम्य, मधुर भाषी व सरल योगी भैया संक्षिप्त परिचय में सहज ही सब को अपना बना लेते थे। प्रसाद की निम्न पंक्तियाँ उन पर सटीक बैठती हैं,

'प्रतिमा में सजीवता सी बस गई सुछवि आँखों में
थी एक लकीर हृदय में जो अलग रही लाखों में'

सुश्री रेखा

साहित्यकार,

लखनऊ

अर्ज़ किया है.......

मैं शायर नहीं हूँ और न ही उर्दू भाषा में किसी तरह की महारत का मैं दावा करता हूँ। 1993 की एक सुबह थी और मैं अटपटी सी एक धुन गुनगुना रहा था। अकस्मात ही मन में कुछ भाव उभरे और शब्दों में रूपान्तरित होते हुए धुन की लय में बैठते चले गए। एक शेर का जन्म हुआ और फिर एक छोटी सी कविता का। शब्द उर्दू के थे, अतः उर्दू काव्य में ही मेरा क़दम दाख़िल हुआ। तब से मैं इस रोचक मानसिक स्थिति को निहारता रहा हूँ। किसी धुन में खो जाना, एक भाव का जन्म होना और फिर शब्दों का लय में अपना स्थान खोजना। यही प्रक्रिया मेरी ग़ज़लों और गीतों को जन्म देती रही। उर्दू में मेरी कोई तरबियत नहीं हुई है। उर्दू की मेरी जानकारी सिर्फ़ व्यावहारिक ही रही है। उर्दू में कविता लिखना मेरे लिए भी हैरत की बात थी।

मेरा लेखन स्वान्तः सुखाय था। इन कविताओं को प्रकाशित करने में मेरी कोई रूचि नहीं थी। लेकिन जब मैने इन्हें कुछ क़रीबी दोस्तों और प्रियजनों को सुनाया तो उन्होंने मुझे इन्हें प्रकाशित करवाने पर मजबूर कर दिया।

आज मैं अपनी सौ ग़ज़लों और गीतों का संकलन 'सदबर्ग' (सौ पंखड़ियाँ) के नाम से पेश कर रहा हूँ। अगर पाठकों को यह पसन्द आए तो मुझे ख़ुशी होगी।

हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए मैने इन कविताओं में लिखे गए कुछ कठिन उर्दू शब्दों को हिन्दी अनुवाद के साथ कविता के अन्त में दिया है। कविताएँ समझने में उन्हें इससे आसानी होगी।

जो पाठक गण उर्दू लिपि से वाक़िफ़ हैं उनके लिए उर्दू लिपि में भी साथ–साथ छापा गया है। असल में उर्दू की शायरी उर्दू लिपि में ही शाया होनी चाहिए थी। लेकिन देवनागरी लिपि अधिक लोगों में प्रचलित होने के कारण इसे इस लिपि के माध्यम से भी प्रकाशित करने

का निर्णय लिया गया।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया है मेरा इन कविताओं को प्रकाशित करने का कोई इरादा न था। इसलिए इनके प्रकाशन का शत-प्रतिशत श्रेय उन प्रियजनों को जाता है जिन्होंने इसके लिए मुझे प्रेरित किया। कुछ विशेष सज्जनों के नाम उल्लेख करना चाहूँगा। प्रो0 अनु कपूर (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने सर्वप्रथम संकलन के प्रकाशन का आग्रह किया था और इस सम्बंध में उपयोगी जानकारी दी थी। मेरे बड़े भाई श्री रवि मदन (श्रीनगर) के निरंतर आग्रह करते रहने के कारण यह प्रकाशन संभव हो सका। डा0 उर्मिला जुत्शी (लखनऊ) एक मात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने मेरी हर कविता (इस संकलन की या अन्य) पढ़ी है और समय समय पर अपनी राय देकर उन्हें निखारने में भी मेरी मदद की है। इन सबका मैं तहे–दिल से आभारी हूँ।

–योगी मदन

तआरुफ

योगी मदन की शख़्सियत ऐसी थी कि उनसे मिलने वाले ज़्यादातर लोग उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे। कोई भी संवेदनशील व्यक्ति उनके मन में छिपी गहरी वेदना को महसूस कर सकता था। कुछ ही देर उनसे बात करने पर लगता था कि जैसे ज़माने भर के ग़म उन्होंने अपने दिल में समेट रखे थे। नम्रता और स्वाभिमान की वह प्रतिमूर्ति थे।

स्त्रियों का वह सम्मान करते थे। अपनी माँ को वह स्त्रीत्व की पराकाष्ठा मानते थे। नारी मन की कोमलता उन्हें आकृष्ट करती थी। उनका मानना था कि स्त्री विलक्षण गुणों से परिपूर्ण होती है। सहनशीलता, धैर्य, क्षमा करने की शक्ति, त्याग और स्नेह करने की क्षमता को अक्सर पुरुष उसकी कमज़ोरी समझ कर उसे प्रताड़ित करता है और उसका शोषण करता है। पर उनका कहना था कि स्त्री में इन गुणों के साथ साथ स्वाभिमान होना भी नितान्त आवश्यक है। माँ आनन्दमयी, रेहाना तैयब जी, और काका साहब कालेलकर द्वारा स्थापित संस्था 'गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा सन्निधि' से संबंधित सरोजिनी नानावती (दिल्ली) से वह संपर्क में रहते थे। उनके अपने परिवार के तथा मित्रों के बच्चे बच्चियों से उनका व्यवहार मित्रवत रहता। उनकी छोटी बड़ी उलझनों और परेशानियों को सुलझाने में उनकी मदद किया करते। बच्चों को शुद्ध भाषा और उचित शब्दों के प्रयोग की सलाह देते। किसी के भी प्रति अनुचित शब्द या भाषा प्रयोग होते देख कर उन्हें कष्ट होता था। बच्चों के वह प्रेरणा स्रोत थे।

जान पहचान के बुजुर्ग लोगों (जिनको देखने वाला कोई न होता था) का ख़याल रखना भी वह अपना कर्तव्य समझते थे। उनके लिए खाना, कपड़ा, दवा आदि की व्यवस्था के अलावा उन्हें डाक्टर के यहाँ ले जाना, बैंक ले जाना यहाँ तक कि मृत्यु हो जाने पर श्मशान घाट

ले जाने की ज़िम्मेदारी भी वह ही निभाते थे। एक बार की बात है उनके दूर की एक महिला संबंधी की मृत्यु होने पर उन्हें श्मशान घाट तक ले जाने के लिए उन्हें अपने अलावा केवल दो व्यक्ति ही कांधा देने के लिए मिल पाए थे। इस बात से वह बहुत दुखी हुए थे।

योगी जी एक मिलनसार व्यक्ति थे और समाज में उनका सम्मान था। कश्मीर की अनेक सामाजिक संस्थाओं से वह अपरिहार्य रूप से जुड़े हुए थे। श्रीनगर आर्य समाज तथा उसके द्वारा चलाए गए आर्य समाज स्कूल– दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ–साथ Kashmir Hotel Association तथा Youth Hostel Association of India में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ थीं। Youth Hostel Association की ओर से निकलने वाली नियमित पत्रिका "The Youth Hosteller" में उनके लेख और कार्टून नियमित तौर पर निकला करते थे।

उन्हें भ्रमण और देशाटन का भी शौक़ था। भारत में अमरनाथ से कन्याकुमारी तक तथा भारत के आस–पास के देशों और योरोप के लगभग सभी देशों का उन्होंने भ्रमण किया था। वेदान्त का उन्होने गहन अध्ययन किया था।

सन् 1993 में योगी जी ने जब अपनी पहली कविता की रचना की तब वह यहीं लखनऊ में थे। उन्होंने कविता लिख कर मुझे दिखाई। मैं तो इस क्षेत्र में बिल्कुल अनाड़ी थी। फिर भी मैने दाद दी और कहा यह तो ग़ज़ल बन गई। उन्हें बहुत अच्छा लगा। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार थीं।

यह दयारे-ग़ैर है ऐ मेरे दिल
कौन समझेगा मेरी मजबूरियाँ

o

हम यहाँ तो रह न पाएंगे जनाब
हम सुखन कोई, न कोई हमज़बाँ

और उस के बाद से जब भी, जहाँ भी, वह कोई कविता लिखते थे तो, यह मेरी ख़ुशक़िस्मती थी, मुझे अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए मेरे पास भेज देते थे। मुझे बहुत अच्छा लगता था। पढ़ कर मुझे बहुत आश्चर्य होता था। उनमें यह प्रतिभा अचानक ही प्रस्फुटित हुई थी। मुझे लगा कि काव्यात्मक प्रतिभा के साथ साथ ग़ज़ल कहने की सलाहियत भी उनमें थी।

समय बीतता रहा और वह लिखते रहे और ग़ज़लों की संख्या लगभग 200 तक पहुँच गई। उनके मित्रों और संबंधियों के लगातार ज़ोर डालते रहने से वह अपनी ग़ज़लें छपाने के लिए राज़ी हो गए। संकलन का नाम रखा 'सदबर्ग' और भूमिका भी लिख दी। लेकिन कुछ समय बाद ही दुर्भाग्यवश अचानक ही यह समाचार मिला कि 10 सितम्बर 2004 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। फिर जब शोक सन्तप्त परिवार इस आकस्मिक झटके से उबरा तब उनके बड़े भाई रवि मदन ने उन की कविताओं का संकलन छपवाने का यह काम मुझे सौंपा। मुझे लगा कि जिस किताब को छपवाने की योगी जी ने इतनी तैयारी कर ली थी उसे प्रकाशित कराने से बढ़कर मैं उन्हें और क्या श्रद्धान्जलि दे सकती हूँ। और मैंने स्वीकार कर लिया।

अब तो यह लाज़मी हो गया था कि मैं उनकी ग़ज़लें इस्लाह के लिए किसी अच्छे शायर को दिखा लूँ क्योंकि उनका यह पहला ही प्रयास था और वह यह चाहते भी थे। इस काम में मेरी मित्र सुरैया ख़ान (जो खुद भी शायरा हैं) ने मेरी बहुत मदद की। उन्होंने मुझे मशहूर शायर बशीर फ़ारूक़ी से मिलवाया जो इस्लाह के लिए राज़ी हो गए। योगी जी ने कवर बनाने के लिए अपने मित्र और बहनोई विजय हंगल से पहले ही बात कर ली थी सो विजय हंगल ने कवर बना कर भी मेरे पास भेज दिया।

सब सामान जमा हो जाने के बाद अब मेरे सामने काम आया उनकी लिखी हुई ग़ज़लों और गीतों को एक क्रम देना। यह अपने आप में बहुत बड़ा काम था। उम्र जिस क्रम से बढ़ती जाती है, ज़िन्दगी उस

क्रम से नहीं गुज़रती। आरज़ू, जुस्तजू, अहसास, जज़्बात, आशा–निराशा, अनुराग–विराग, जुनून और प्रलाप के उन लम्हों को एक क्रम में बाँधना बहुत मुश्किल काम था।

फ़ारसी में ग़ज़ल का अर्थ है स्त्रियों से बात करना। उर्दू भाषा में ग़ज़ल अरबी और फ़ारसी की गलियों से होती हुई ही आई है। इस लिए उर्दू ग़ज़ल भी मुख्य रूप से हुस्न और इश्क़, जाम और साक़ी से जुड़ती हुई चलती है। मुहब्बत इन्सान की ज़िन्दगी का एक शाश्वत सत्य है। यह प्रेम कभी लौकिक तो कभी पारलौकिक होता है। योगी जी ने प्रेम की इन दोनों ही अनुभूतियों का सुन्दर चित्रण किया है।

सागर-ए-इश्क़ छलकता ही रहा
मैं संभलता कि संभलता ही रहा

o

बताऊँ क्या किसी को मैं कि जो दिल पर गुज़रती है
कि जब नज़रे–इनायत की इधर सौग़ात आती है

प्रेम में वियोग का स्थान संयोग से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। वियोग में मन अपने प्रिय की आरज़ू करता है।

मेरी ख़िल्वत में जो हैं पुर वह ख़लाएँ कर दो
अपने रंगों ही से तस्वीर मेरी भी भर दो

o

फ़ासले जो वक्त के हैं वह रहें
दिल न हो दिल से जुदा ऐ ज़िन्दगी

वह अपने प्रिय को याद करता है।

है दिल ग़मगीं कहें किस बात को हम
लिए यादों में हैं सदमात को हम

लम्हे उलझ के रह गए बस तेरी याद में
हमको मिज़ाजे-वक्त की कुछ न ख़बर रही

और शिकवा शिकायत भी करता है।

गुज़ारें ज़िन्दगी कैसे कि वह गुलरुख़ ही क़ातिल है
इस तरह जिएँ कैसे कि जीना कारे-मुश्किल है

o

सैकड़ों उज़्रो–गिले उनको रहे
वह न बदले मैं सुधरता ही रहा

कभी आत्म विश्लेषण करने के बाद शायर को लगता है कि शायद ग़लती उसी की है।

गिला तुमसे नहीं बेज़ाब्ता है ज़िन्दगी मेरी
कहीं कोई रही तो होगी नाशाइस्तगी मेरी

o

हो गया वही जो बस होना था
कौन चाहे है यूँ बुरा अपना

ग़ज़ल के अशआर की सबसे बड़ी ख़ूबी होती है कि उसमें जीवन के अनुभव व्यक्त होते हैं।

फ़लक के पार की बातें बहुत ही ख़ूब हैं लेकिन
करूँ मैं क्या कि क़दमों के तले है रह गुज़र अपनी

o

ज़ुबाँ तो बस ज़ुबाने–दिल है यारो
ख़िरद अल्फ़ाज़ में उलझी पड़ी है

शायर अपने मन की अनुभूतियों को व्यक्त करने के साथ साथ सारे जहान की चिन्ता भी करता है।

ग़रीबे-शहर की हालत वही रही जो थी
अमीरे-शहर तेरा इक़्तेदार देख लिया

०

है इन्साँ की यह कैसी बालादस्ती
कहीं इन्सानियत की बू नहीं है

०

कौन देखे है अब हिजाबो-हया
सब पे उर्यानियत का वार हुआ

योगी मदन अपनी ग़ज़लों में ख़ुद व्याप्त हैं। उनकी शायरी में जीवन के मूल्यों की रक्षा में तैनात, सब से मुहब्बत करने वाली उनकी शख़्सियत झलकती है।

दर्दे–दिल दर्दे–जिगर हैं ऐसे हमदम ज़ीस्त के
ज़िन्दगी भर जो मेरे दिल से जुदा हो न सके

दुनिया की भीड़ में वह तन्हा दिखाई देते हैं।

मुहब्बत शब की तनहाई से हो जाए अगर अपनी
तो फिर यह आरज़ू क्यों हो कि हो जाए सहर अपनी

०

क्या क्या हम अहसास बताएँ
शाम हुई और जी घबराया

योगी मदन के ग़म में अनोखापन है।

ग़म से उल्फ़त है लब पे आह नहीं
अब मुझे और कोई चाह नहीं

०

किस को थामें अपना समझें और किसे अपनाएँ हम
एक लम्हे को ठहरता ही नहीं बहता ज़माँ

उनकी ग़ज़लों में जीवन के संवेदनात्मक लम्हों का लेखा जोखा मिलता है। जीवन के साथ उनका गहरा संबंध हर पृष्ठ पर मिलता है।

कौन जाने दिल की उनके बेबसी
न कहा अपना न बेगाने हुए

कश्मीर के आतंकवाद से उन्हें गहरा सदमा पहुँचा था जो उनकी शायरी में भी मुखरित हो उठा था।

गुलिस्ताँ थे कभी बादे-सबा में झूमते एक दिन
हवा के नम वह झोंके थे गुलों को चूमते एक दिन
है कुछ जुस्तजू बाक़ी न दिल में हौसला बाक़ी
बहुत देखी यह दुनिया थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें
नहीं अब कुछ तमन्ना, थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें

लेकिन तब भी उन्होंने अपने आप को टूटने बिखरने नहीं दिया।

जले हैं आशियाँ उजड़े हैं सपने
समेटे हैं मगर जज़्बात को हम
o
यही बेहतर है अब इस ज़िन्दगी में
निभाएँ वक्त को हालात को हम

और जब कश्मीर के हालात में कुछ सुधार नज़र आने लगा तो उनके मन में भी आशा की एक नई किरन जागी।

अब बहुत दूर नहीं बादे–सहर ऐ लोगो
क़ाफ़िले ख़ुशबू के हैं इस तरफ़ आने वाले

छँटेगी रात अंधियारी सहर अब हाने वाली है
मिलेगी राह उजियारी सहर अब हाने वाली है

०

उजाला ही उजाला है शबे-वीराँ हुई रौशन
वही रौनक़ है रौशन कूचा व बाज़ार हैं फिर से

०

जो गुज़री हैं न आएँगी घटाएँ रंजो-ग़म की अब
ख़ुशी के अब्र छाए हैं सहर आसार हैं फिर से

उनकी ग़ज़लों में उनकी आध्यात्मिक और वेदान्तिक विचारधारा के भी दर्शन होते हैं।

हाले-वहदत में कहाँ अपनी शनाख़्त अपनी तमीज़
है मुहब्बत में कहीं खोई सदाक़त अपनी

०

बुत परस्ती नहीं है इश्क़ इबादत अपनी
ज़ाते-वाहिद से है मौसूम मुहब्बत अपनी

०

मैं तो उसकी रज़ा पे हूँ राज़ी
आप इसको मेरी अदा कहिए

०

मालिके-कुल तेरी दुनिया में है क्या तेरे सिवा
तुझ से क्या माँगें भला हम तेरी रहमत के सिवा

अब मैं कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण लोगों के बारे में दो शब्द कहना चाहूँगी। सब से पहले मैं बशीर फ़ारूक़ी साहब का तहे-दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने योगी मदन की इन ग़ज़लों और नज़्मों को इस्लाह से नवाज़ा। श्रीमती सुरैया ख़ान, श्री देव व्रत दीक्षित, सरदार अमनदीप सिंह साहनी और श्री देव व्रत रावल ने मुझे समय समय पर, जैसी भी ज़रूरत मुझे महसूस हुई, अपनी बेशक़ीमती सलाह और मदद

मुहैया कराई जिसके लिए मै उनकी मशकूर हूँ। श्री विजय हंगल की भी मैं आभारी हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्त जीवन से समय निकाल कर योगी जी के विचारानुसार इस पुस्तक के कवर की रचना की। श्री रवि मदन ने इस पुस्तक के छपने का आर्थिक भार तत्परता से संवहन किया इसके लिए मैं उनके प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। अन्त में मै उन सब महानुभावों को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने योगी जी के व्यक्तित्व के विषय में अपने विचार भेजे और पुस्तक छपने के लिए शुभ कामनाएँ भेजीं।

योगी जी ने अपनी यह पुस्तक 'सदबर्ग' अपनी बड़ी बहन शशि हंगल (मुंबई), जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, को समर्पित करने का निश्चय किया था। पर भाग्य की विडम्बना देखिए कि जब वह समय आया तो वह ख़ुद भी इस दुनिया में नहीं रहे। उनका यह काम भी अब मेरी तरफ़ से हो रहा है।

योगी जी की ग़ज़लों के प्रथम प्रकाशन का कार्य शुरू–शुरू में तो मुझे मेरी क्षमता के बाहर लगता था। परन्तु अब यह पाठकों के सामने है। यदि उन्हें यह पसन्द आएगा तो उसका श्रेय स्वयं योगी जी को तथा इसको प्रकाशित कराने में जिन महानुभावों ने मेरी मदद की है उनको जाता है। लेकिन यदि इसमें कोई त्रुटि दिखाई देती है तो उसके लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। आशा है पाठकगण इसी नज़र से इन ग़ज़लों का रसास्वादन करेंगे।

– डा० उर्मिला ज़ुत्शी
लखनऊ

'सदबर्ग'–मेरी नज़र में

कोई अदीब या फ़नकार अपने माहौल के असारात के अन्दर से नमूदार होता है। किसी भी सच्चे शायर की शेरी तख़लीक़ात उसके दाख़ली और ख़ारिजी हालात की आइनादार होती है। अगर योगी मदन के शेरी मजमुए 'सदबर्ग' का मुतालिआ किया जाए तो यह बात पूरी तरह वाज़ेह हो जाती है कि उनकी ज़िन्दगी पर जो अवामिल असर अन्दाज़ हुए हैं उनकी ग़ज़लों और नज़्मों पर भी उनका गहरा असर है। उनकी मुसीबत ज़दा बहन और उसकी मफ़लूज बेटी का जो ग़म अंगेज़ असर उनके ज़ेहन पर था उस की भरपूर अक्कासी उनके अशआर में मिलती है।

हम किसे मंज़िल कहें और किसको मंज़िल का निशाँ
जिस तरफ़ उठती हैं नज़रें बिखरा बिखरा है जहाँ

o

इरादे ही तो हैं रहबर रहे–पुरख़ार में यारो
इरादों पर ही तो क़ायम है यह राहे–सफ़र अपनी

o

यह दिल ही जाने गुज़रती है कैसे तनहाई
किसी से क्या कहें कहने की कोई बात नहीं

o

रह गई दिल की बात बस दिल में
जो है लब पर वह दिल की बात नहीं

उनके अशआर के मुताले से यह पता चलता है कि वह एक मिलनसार मुनकसिरूल मिज़ाज और दूसरों के दर्द को महसूस करने वाले नेज़ दूसरों की मुसीबतों में काम आने वाले शख़्स थे। ग़मे–जानाँ और ग़में–दौराँ दोनो ही अपने भरपूर तआस्सुर के साथ उनकी ग़ज़लों में नुमाया हैं।

बिखरती लम्हा लम्हा जिन्दगी है
किसी में अब कहाँ संजीदगी है

०

मेरा नहीं यह सारे ज़माने का दर्द है
बहलाएँ कैसे दिल को, सुकूँ हो निगाहों में

०

मुझको अक्सर यह सोच रहती है
ज़िन्दगी अपनी बेवफ़ा क्यों है

उन्होंने ज़ाती तजुर्बात और मुशाहिदात को तख़लीक़ी इकाइयों से मुंतक़िल करने की मुख़लिसाना कोशिश की है।

राज़े–दिल तो बस बराए–राज़ हैं
है ख़बर दुनिया को हर एक बात की

०

कह रही है यह दिल की बेचैनी
कोई नज़दीकतर रहा तो है

योगी मदन को फ़लसफ़ा में बहुत दिलचस्पी थी।

सजदे में सर किसी ने न देखा कभी मेरा
यारो यह बन्दगी मेरी क्या बन्दगी नहीं

०

यह भेदों की दुनिया है हम ने न जानी
चली लेके हमको कहाँ ज़ीस्त जाने

वह ग़मे– हबीब और ग़महाये–रोज़गार के मुख़्तलिफ रंगों से सुख़न की तस्वीर में रंग भरने का हुनर जानते थे।

सद्द बर्ग

नहीं रास आई यह रस्मों की दुनिया
यहाँ से कहीं और अपना जहाँ हो

o

कह न पाए कुछ भी हम पहुँचे जब उनके सामने
दास्ताने–शौक़ अपनी फिर अधूरी रह गई

o

बेबसी में गुज़र रहे हैं दिन
ज़ीस्त को रंज से निजात नहीं

मुझे यक़ीन है कि योगी मदन का यह शेरी मजमुआ 'सदबर्ग' अवामो–ख़वास दोनो ही में क़द्र की निगाह से देखा जाएगा।

—बशीर फ़ारुक़ी

संदर्भ

1. हम किसे मंज़िल कहें और किस को मंज़िल का निशाँ
2. आए वह दिल को फिर क़रार हुआ
3. हम तो दानिस्ता ही दीवाने हुए
4. ग़म से उल्फ़त है लब पे आह नहीं
5. क्या बात मुहब्बत की हो बयाँ वह बात नहीं अन्दाज़ नही
6. मुहब्बत शब की तनहाई से हो जाए अगर अपनी
7. उसने मुझको जो न दीवाना बनाया होता
8. बिखरती लम्हा-लम्हा ज़िन्दगी है
9. फिर दीप जले झिलमिल झिलमिल फिर रात सुहानी आई है
10. चले थे सूए-सहरा जानिबे-गुलशन मगर पहुँचे
11. चाहता हूँ मैं कि ख़्वाबों में रहूँ
12. वहाँ हूँ मैं कि जहाँ दिन नहीं है रात नहीं
13. यूँ तो कहने को कोई बात नहीं
14. हों न अल्फ़ाज जहाँ कुछ न कहो
15. साग़र-ए-इश्क़ छलकता ही रहा
16. गिला तुम से नहीं बेज़ाब्ता है ज़िन्दगी मेरी
17. अब क्या बताऊँ दिल पे है क्या-क्या गुज़र रही
18. क्या मेरा आग़ाज़ क्या अंजाम है
19. जब तलक तारीकियाँ हैं रात की
20. बहारों में वह अब जादू नहीं है
21. छँटेगी रात अंधियारी सहर अब होने वाली है
22. है दिल ग़मगीं, कहें किस बात को हम
23. हम तो ख़्वाबों को लिए दिल में बहलते ही रहे
24. मेरी ख़िल्वत में जो हैं, पुर वह ख़लायें कर दो
25. चले राह अंजान, हम हैं दिवाने
26. यारो, वह ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं
27. वह राज़ क्या है जो है छुपा उन निगाहों में
28. आज क्यों जश्ने–चरागाँ में वह नूर उभरा नहीं
29. बुत परस्ती नहीं है इश्क़ इबादत अपनी
30. मैं तेरी बज़्म में हूँ तेरी इनायत ही तो है
31. दिले-हज़ीं ने न पाया क़रार देख लिया
32. दवा समझे हैं, है वह अलालत लादवा मेरी

ہم کسے منزل کہیں اور کس کو منزل کا نشاں
جس طرف اٹھتی ہیں نظریں بکھرا بکھرا ہے جہاں

مانتا ہوں میں کہ ہے گردش ہی فطرت زیست کی
بعد مرنے کے ملے منزل، یقیں اس کا کہاں

کس کو تھامیں، اپنا سمجھیں اور کسے اپنائیں ہم
ایک لمحے کو ٹھہرتا ہی نہیں بہتا زماں

آسماں دیکھیں کہ دیکھیں پتھروں کی رہگزر
ہے ڈگر ایسی قدم سے ہے قدم رہتا نہاں

بس بھلا دی ہم نے منزل اور منزل کی طلب
چل رہے ہیں ہم جدھر لے جائے ہے اب کارواں
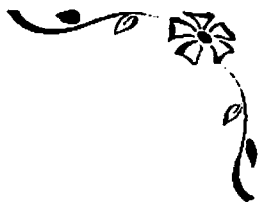
हम किसे मंज़िल कहें और किस को मंज़िल का निशाँ
जिस तरफ उठती हैं नज़रें बिखरा बिखरा है जहाँ

मानता हूँ मैं कि है गर्दिश[1] ही फ़ितरत[2] ज़ीस्त[3] की
बाद मरने के मिले मंज़िल, यक़ीं[4] इसका कहाँ

किस को थामें, अपना समझें और किसे अपनायें हम
एक लम्हे को ठहरता ही नहीं बहता ज़माँ

आस्माँ देखें कि देखें पत्थरों की रहगुज़र
है डगर ऐसी क़दम से है क़दम रहता निहाँ[5]

बस भुला दी हमने मंज़िल और मंज़िल की तलब[6]
चल रहे हैं हम जिधर ले जाए है अब कारवाँ

1. गर्दिश– परेशानी, 2. फ़ितरत– स्वभाव, 3. ज़ीस्त– ज़िन्दगी, 4. यक़ीं– विश्वास
5. निहाँ– छुपा, 6. तलब– चाह

آئے وہ دل کو پھر قرار ہوا
زرد موسم بھری بہار ہوا

کون دیکھے ہے اب حجاب و حیا
سب پہ عریانیت کا وار ہوا

جب سے دیکھا ہے ان کو نظروں نے
دل عنایت کا خواستگار ہوا

کوچۂ گل ہو یا دیارِ خزاں
ہر طرف جشنِ نو بہار ہوا

आए वह दिल को फिर क़रार[1] हुआ
ज़र्द[2] मौसम भरी बहार हुआ

कौन देखे है अब हिजाबो-हया[3]
सब पे उरयानियत[4] का वार हुआ

जब से देखा है उनको नज़रों ने
दिल इनायत[5] का ख़्वास्तगार[6] हुआ

कूच-ए-गुल हो या दयारे-ख़िज़ाँ[7]
हर तरफ जश्ने-नौबहार हुआ

---

1. क़रार– चैन, 2. ज़र्द– पीला, 3. हिजाबो–हया– परदा और शर्म, 3. उरयानियत– बेशर्मी, 5. इनायत– कृपा, 6. ख़्वास्तगार– ख़्वाहिश रखने वाला, 7. दयारे ख़िज़ाँ– पतझड़ का घर

ہم تو دانستہ ہی دیوانے ہوئے
ایک شمعِ گل کے پروانے ہوئے

کون جانے دل کی ان کے بے بسی
نہ کہا اپنا، نہ بیگانے ہوئے

نام کوچے کا جولب پر لائے ہم
تم سمجھنا ہم بھی دیوانے ہوئے

میری جلوہ گاہ کا کیا ہو بیاں
سارے سبزہ زار ویرانے ہوئے

हम तो दानिस्ता[1] ही दीवाने हुए
एक शम्मे-गुल[2] के परवाने हुए

कौन जाने दिल की उनके बेबसी
न कहा अपना, न बेगाने हुए

नाम कूचे का जो लब पर लाए हम
तुम समझना हम भी दीवाने हुए

मेरी जलवागाह[3] का क्या हो बयाँ
सारे सब्ज़ाज़ार[4] वीराने हुए

1. दानिस्ता– समझ बूझ कर, 2. शम्मे-गुल– फूल जैसी शमा, 3. जलवागाह– महफ़िल, 4. सब्ज़ाज़ार– हरियाली

غم سے الفت ہے لب پہ آہ نہیں
اب مجھے اور کوئی چاہ نہیں

کیا بتاؤں تجھے میں کیفِ حیات
جب مجھے زندگی کی چاہ نہیں

ترک دنیا ہی بس ہے میرے لئے
دہر میں اور کوئی راہ نہیں

اتنی گہرائیوں میں ہوں اب میں
اک سمندر ہوں جس کی تھاہ نہیں

زیست میں میری ہیں موڑ ہی موڑ
کوئی منزل نہیں ہے راہ نہیں

ہر طرف عشرتوں کے ہیں سامان
پھر بھی تو دل میں کوئی چاہ نہیں

ग़म से उल्फ़त है लब पे आह नहीं
अब मुझे और कोई चाह नहीं

क्या बताऊँ तुझे मैं कैफ़े-हयात[1]
जब मुझे ज़िन्दगी की चाह नहीं

तर्के-दुनिया[2] ही बस है मेरे लिए
दहर[3] में और कोई राह नहीं

इतनी गहराइयों में हूँ अब मैं
इक समन्दर हूँ जिसकी थाह नहीं

ज़ीस्त[4] में मेरी हैं मोड़ ही मोड़
कोई मंज़िल नहीं है राह नहीं

हर तरफ इशरतों[5] के हैं सामान
फिर भी तो दिल में कोई चाह नहीं

1. कैफ़े-हयात– ज़िन्दगी का मज़ा, 2. तर्के-दुनिया– दुनिया छोडना, 3. दहर– दुनिया, 4. ज़ीस्त– ज़िन्दगी, 5. इशरतों– आरामों

کیا بات محبّت کی ہو بیاں وہ بات نہیں انداز نہیں
میں لاؤں کہاں سے طرزِ بیاں، اب پاس مرے الفاظ نہیں

بے تاب نگاہوں میں کوئی کچھ راز چھپائے گا کب تک
آنکھوں میں بھی وہ بات نہیں وہ راز بھی اب وہ راز نہیں

آئی تو تھی شب وصل مگر بس خوفِ سحر میں بیت گئی
عالم ہو تو عالم ایسا ہو انجام نہیں آغاز نہیں

بے وقت یہ تم نے چھیڑ دیا کیوں بربطِ دل کے تاروں کو
سوئے ہوئے سُر ہیں لَے سوئی اور ساز میں بھی آواز نہیں

کچھ پل کے لئے میں شاد تو ہوں حالات کی دھوندلی راہوں میں
کچھ پل ہی مری تقدیر سہی تقدیر پہ پھر بھی ناز نہیں

क्या बात मुहब्बत की हो बयाँ वह बात नहीं अन्दाज़ नहीं
मैं लाऊँ कहाँ से तर्ज़े-बयाँ, अब पास मेरे अल्फ़ाज़ नहीं

बेताब निगाहों में कोई कुछ राज़ छुपाएगा कब तक
आँखों में भी वह बात नहीं वह राज़ भी अब वह राज़ नहीं

आई तो थी शबे-वस्ल[1] मगर बस ख़ौफ़े-सहर[2] में बीत गई
आलम हो तो आलम ऐसा हो अंजाम[3] नहीं आग़ाज़[4] नहीं

बेवक़्त यह तुमने छेड़ दिया क्यों बरबते-दिल[5] के तारों को
सोए हुए सुर हैं लय सोई और साज़ में भी आवाज़ नहीं

कुछ पल के लिए मैं शाद[6] तो हूँ हालात की धुँधली राहों में
कुछ पल ही मेरी तक़दीर सही तक़दीर पे फिर भी नाज़ नहीं

1. शबे-वस्ल– मिलन की रात, 2. ख़ौफ़े-सहर– सुबह का डर, 3. अंजाम– अन्त, 4. आग़ाज़– शुरूआत, 5. बरबते-दिल– दिल का साज़, 6 शाद– ख़ुश

محبت شب کی تنہائی سے ہو جائے اگر اپنی
تو پھر یہ آرزو کیوں ہو کہ ہو جائے سحر اپنی

سمٹ جائیں خودی میں یوں کہ ہم مدہوش ہو جائیں
بکھر جائیں کچھ اس صورت نہ ہو ہم کو خبر اپنی

بہت حاصل ہوا ہے ہم کو اس تیرہ فضائی سے
یہی بہتر ہے اپنے حق میں آئے نہ سحر اپنی

کہاں تک خواب اپنا ساتھ دیتے اس خرابے میں
بہت محدود ہے اے دوستو حدِّ نظر اپنی

فلک کے پار کی باتیں بہت ہی خوب ہیں لیکن
کروں میں کیا کہ قدموں کے تلے ہے رہ گزر اپنی

ارادے ہی تو ہیں رہبر رہِ پُرخار میں یارو
ارادوں پر ہی تو قائم ہے یہ راہِ سفر اپنی

मुहब्बत शब[1] की तनहाई से हो जाए अगर अपनी
तो फिर यह आरज़ू[2] क्यों हो कि हो जाए सहर[3] अपनी

सिमट जायें ख़ुदी[4] में यूँ कि हम मदहोश हो जायें
बिखर जायें कुछ इस सूरत न हो हमको ख़बर अपनी

बहुत हासिल हुआ है हम को इस तीराफ़ज़ाई[5] से
यही बेहतर है अपने हक़ में आए न सहर अपनी

कहाँ तक ख़्वाब अपना साथ देते इस ख़राबे में
बहुत महदूद[6] है ऐ दोस्तो हद्दे–नज़र[7] अपनी

फ़लक[8] के पार की बातें बहुत ही ख़ूब हैं लेकिन
करूँ मैं क्या कि क़दमों के तले है रह गुज़र अपनी

इरादे ही तो हैं रहबर[9] रहे-पुरख़ार[10] में यारो
इरादों पर ही तो क़ायम है यह राहे-सफ़र अपनी

1.शब– रात, 2. आरज़ू– इच्छा, 3. सहर– सुबह, 4. ख़ुदी– अहम्, 5. तीराफ़ज़ाई– अंधियारा, 6. महददू– सीमित, 7. हद्दे–नज़र– दृष्टि की सीमा, 8. फ़लक– आसमान, 9. रहबर– पथ प्रदर्शक, 10. रहे-पुरख़ार– काँटों भरा रास्ता

اس نے مجھ کو جو نہ دیوانہ بنایا ہوتا
بات کا سب نے نہ افسانہ بنایا ہوتا

اس نے اک بار اگر دل کو نوازا ہوتا
میں نے پھر دل میں ہی بت خانہ بنایا ہوتا

بزم جاناں میں مقام اپنا بھی ہوتا جو اگر
کبھی اپنا کبھی بیگانہ بنایا ہوتا

تم نے اک بار کبھی مجھ کو بھی دیکھا ہوتا
میں نے اس دل کو ہی نذرانہ بنایا ہوتا

ایک نعمت ہے ترا جام تصوّر لیکن
راہ میں میری بھی مے خانہ بنایا ہوتا

بے مروّت ہے بہرحال یہ باغِ عالم
کاش اپنوں کو بھی اپنا نہ بنایا ہوتا

उसने मुझको जो न दीवाना बनाया होता
बात का सबने न अफ़साना बनाया होता

उसने एक बार अगर दिल को नवाज़ा[1] होता
मैंने फिर दिल में ही बुतख़ाना[2] बनाया होता

बज़्मे-जानाँ[3] में मुक़ाम अपना भी होता जो अगर
कभी अपना कभी बेगाना बनाया होता

तुमने एक बार कभी मुझको भी देखा होता
मैने इस दिल को ही नज़राना[4] बनाया होता

एक नेमत[5] है तेरा जामे-तसव्वुर[6] लेकिन
राह में मेरी भी मयख़ाना बनाया होता

बेमुरव्वत है बहरहाल यह बाग़े-आलम
काश अपनों को भी अपना न बनाया होता

1. नवाज़ा– कृपा की, 2. बुतख़ाना– मन्दिर, 3. बज़्मे-जानाँ– महबूब की महफ़िल, 4. नज़राना– पेशकश, 5. नेमत– धन, 6. जामे-तसव्वुर– ख़्याल का प्याला

بکھرتی لمحہ لمحہ زندگی ہے
کسی میں اب کہاں سنجیدگی ہے

یقیں ہے ذات پر بس میری تجھ کو
مری ہر سانس تیری بندگی ہے

زباں تو بس زبانِ دل ہے یارو
خرد الفاظ میں الجھی پڑی ہے

محبت میں کہیں تو انتہا ہو
مٹی اب تک نہ میری تشنگی ہے

تمہیں پا کر میں خود کو کھو چکا ہوں
یہ میری جیت بھی اب ہار ہی ہے

बिखरती लम्हा-लम्हा ज़िन्दगी है
किसी में अब कहाँ संजीदगी[1] है

यक़ीं[2] है ज़ात पर बस मेरी तुझको
मेरी हर साँस तेरी बन्दगी है

ज़ुबाँ तो बस ज़ुबाने–दिल है यारो
ख़िरद[3] अल्फ़ाज़ में उलझी पड़ी है

मुहब्बत में कहीं तो इन्तेहा[4] हो
मिटी अब तक न मेरी तश्नगी[5] है

तुम्हें पा कर मैं खुद को खो चुका हूँ
यह मेरी जीत भी अब हार ही है

1. संजीदगी– गम्भीरता, 2. यक़ीं– विश्वास, 3. ख़िरद–अक़्ल, 4. इन्तेहा– आख़िर, 5. तश्नगी– प्यास

پھر دیپ جلے جھلمل جھلمل، پھر رات سہانی آئی ہے

رکھّے ہیں قدم کس نے در پر، دھرتی پہ کرن لہرائی ہے

ہر پھول میں مہکی ہے خوشبو، کلیوں نے بھی لی ہے انگڑائی

ہر گوشۂ دل میں گونجی کیوں پھر آج مدُھر شہنائی ہے

ہم بھول گئے ہیں پھر خود کو، آہٹ سی جو آئی ہے ان کی

یہ شامِ سفر دیکھو تو بھلا، کیا رنگِ بہاراں لائی ہے

پھر جانے گھڑی یہ کب آئے، جو زیست میں آئی ہے یہ شب

کہنے کو جو لب ترسے برسوں، وہ بات لبوں پر آئی ہے

سوچا نہ تھا جس کو خوابوں میں، دیکھا ہے وہ منظر آنکھوں نے

رکھّے ہیں قدم کس نے در پر، ہر سمت مسرّت چھائی ہے

फिर दीप जले झिलमिल झिलमिल फिर रात सुहानी आई है
रक्खे हैं क़दम किसने दर पर धरती पे किरन लहराई है

हर फूल में महकी है खुशबू कलियों ने भी ली है अंगड़ाई
हर गोशा-ए-दिल[1] में गूँजी क्यों फिर आज मधुर शहनाई है

हम भूल गए हैं फिर खुद को आहट सी जो आई है उनकी
यह शामे-सफ़र देखो तो भला क्या रंगे-बहाराँ लाई है

फिर जाने घड़ी यह कब आए, जो ज़ीस्त[2] में आई है यह शब[3]
कहने को जो लब तरसे बरसों, वह बात लबों पर आई है

सोचा न था जिस को ख़्वाबों में, देखा है वह मंज़र आँखों ने
रक्खे हैं क़दम किसने दर पर, हर सम्त[4] मसर्रत[5] छाई है

1. गोशा-ए-दिल– दिल का कोना, 2. ज़ीस्त– ज़िन्दगी, 3. शब–रात, 4. सम्त– तरफ़, 5. मसर्रत– खुशी

چلے تھے سوئے صحرا، جانبِ گلشن مگر پہونچے
چلے تھے ہم کدھر کو اور پہونچے تو کدھر پہونچے

چلے تھے بچ کے ہم ساحل سے اور طوفان دونوں سے
وہاں طوفاں تھا اور ساحل تھا لیکن ہم جدھر پہونچے

قدم اپنے رہے تھے یوں تو بے مقصد زمانے میں
رہِ ہستی میں لیکن ہم کدھر نکلے کدھر پہونچے

رہِ ویراں ہی کی تھی منتخب اپنی نگاہوں نے
بتائیں کیا رہِ ویراں سے ہوکر ہم کدھر پہونچے

چلا تھا جانبِ منزل تو میں بالکل اکیلا تھا
قدم اٹھنے سے پہلے ہی مرے پائے نظر پہونچے

عجب عالم تھا جب ہم خود سے گم تھے خود سے اوجھل تھے
ہوئے جب آئینہ پھر ہم ہی جانے ہم کدھر پہونچے
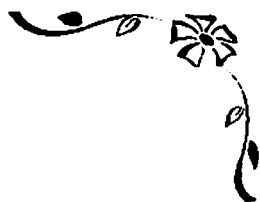
चले थे सूए-सहरा[1] जानिबे-गुलशन[2] मगर पहुँचे
चले थे हम किधर को और पहुँचे तो किधर पहुँचे

चले थे बच के हम साहिल[3] से और तूफ़ान दोनों से
वहाँ तूफ़ाँ था और साहिल था लेकिन हम जिधर पहुँचे

क़दम अपने रहे थे यूँ तो बेमक़्सद[4] ज़माने में
रहे-हस्ती[5] में लेकिन हम किधर निकले किधर पहुँचे

रहे-वीराँ[6] ही की थी मुन्तख़ब[7] अपनी निगाहों ने
बतायें क्या रहे-वीराँ से होकर हम किधर पहुँचे

चला था जानिबे-मन्ज़िल[8] तो मैं बिल्कुल अकेला था
क़दम उठने से पहले ही मेरे पाये-नज़र[9] पहुँचे

अजब आलम था जब हम खुद से गुम थे खुद से ओझल थे
हुए जब आइना फिर हम ही जाने हम किधर पहुँचे

1. सूए-सहरा– जंगल की ओर, 2. जानिबे-गुलशन– बाग़ की ओर, 3. साहिल– किनारा, 4. बेमक़्सद– बिना किसी उद्देश्य के, 5. रहे-हस्ती– ज़िन्दगी का रास्ता, 6. रहे-वीराँ– वीरान रास्ता, 7. मुन्तख़ब– चुना हुआ, 8. जानिबे-मन्ज़िल– मन्ज़िल की ओर, 9. पाये-नज़र– नज़र के पाँव

چاہتا ہوں میں کہ خوابوں میں رہوں
محفلوں اور ستاروں میں رہوں

تری محفل میں ہزاروں ہیں اگر
میں انہیں لوگوں میں ہزاروں میں رہوں

میرے صحرا میں بہاریں آئیں
اور گلشن کی فضاؤں میں رہوں

رسمِ دنیا سے کہیں دور چلوں
کہیں خلوت میں حجابوں میں رہوں

قیدِ ہستی مجھے راس آتی نہیں
دل کے آزاد اداروں میں رہوں

دور آکاش پہ دھرتی سے پرے
ابرِ باراں کی اڑانوں میں رہوں

نہ سہی ہونٹوں پہ اظہارِ سخن
میں خاموشی کی صداؤں میں رہوں

دل میں بس یہ حسرت ہے کہ میں
تری پاکیزہ دعاؤں میں رہوں
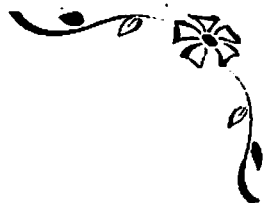
चाहता हूँ मैं कि ख़्वाबों में रहूँ
महफ़िलों और सितारों में रहूँ

तेरी महफ़िल में हज़ारों हैं अगर
मैं उन्हीं लोगों में हज़ारों में रहूँ

मेरे सहरा[1] में बहारें आयें
और गुलशन की फ़ज़ाओं[2] में रहूँ

रस्मे-दुनिया से कहीं दूर चलूँ
कहीं ख़िल्वत[3] में हिजाबों[4] में रहूँ

क़ैदे-हस्ती मुझे रास आती नहीं
दिल के आज़ाद इदारों[5] में रहूँ

दूर आकाश पे धरती से परे
अब्रे-बाराँ[6] की उड़ानों में रहूँ

न सही होंठों पे इज़हारे-सुख़न[7]
मैं ख़ामोशी की सदाओं में रहूँ

दिल में बस यह हसरत है कि मैं
तेरी पाक़ीज़ा दुआओं में रहूँ

1. सहरा– रेगिस्तान, 2. फ़ज़ाओं–ऋतुओं, 3. ख़िल्वत–तन्हाई, 4. हिजाबों–परदों, 5. इदारों– संस्थाओं, 6. अब्रे-बाराँ– बरसने वाला बादल, 7. इज़हारे-सुख़न–बातें करना

وہاں ہوں میں کہ جہاں دن نہیں ہے رات نہیں
میں خود کو بھولا ہوں ایسی بھی کوئی بات نہیں
یہ دل ہی جانے گزرتی ہے کیسے تنہائی
کسی سے کیا کہوں کہنے کی کوئی بات نہیں
مجھے وصال کی اک رات بھی نہ مل پائی
یہ زندگی بھی ہے کیا ہجر سے نجات نہیں
یہ دل تو ناداں ہے الفت کی بات کیا جانے
کہ سنگ زاروں میں چلنا تو سہل بات نہیں

वहाँ हूँ मैं कि जहाँ दिन नहीं है रात नहीं
मैं ख़ुद को भूला हूँ ऐसी भी कोई बात नहीं

यह दिल ही जाने गुज़रती है कैसे तन्हाई
किसी से क्या कहूँ कहने की कोई बात नहीं

मुझे विसाल[1] की इक रात भी न मिल पाई
यह ज़िन्दगी भी है क्या हिज्र[2] से निजात[3] नहीं

यह दिल तो नादाँ है उल्फ़त की बात क्या जाने
कि संगज़ारों[4] में चलना तो सहल बात नहीं

1. विसाल– मिलन, 2. हिज्र– जुदाई, 3. निजात– छुटकारा, 4. संगज़ारों– पथरीले इलाकों

یوں تو کہنے کو کوئی بات نہیں
چین سکھ سے مگر حیات نہیں

رہ گئی دل کی بات بس دل میں
جو ہے لب پر وہ دل کی بات نہیں

زندگی اپنی قیدِ غم ہی تو ہے
قیدِ غم سے مگر نجات نہیں

سوزِ دل اب دوا کا طالب ہے
قلب میں اب دعا کی بات نہیں

بے بسی میں گزر رہے ہیں دن
زیست کو رنج سے نجات نہیں

यूँ तो कहने को कोई बात नहीं
चैन सुख से मगर हयात[1] नहीं

रह गई दिल की बात बस दिल में
जो है लब पर वह दिल की बात नहीं

ज़िन्दगी अपनी क़ैदे-ग़म ही तो है
क़ैदे-ग़म से मगर निजात[2] नहीं

सोज़े-दिल[3] अब दवा का तालिब[4] है
क़ल्ब[5] में अब दुआ की बात नहीं

बेबसी में गुज़र रहे हैं दिन
ज़ीस्त[6] को रंज से निजात नहीं

1. हयात– ज़िन्दगी, 2. निजात– छुटकारा, 3. सोज़े-दिल– दिल का दर्द
4. तालिब– तलबगार, 5. क़ल्ब– दिल, 6. ज़ीस्त– ज़िन्दगी

ہوں نہ الفاظ جہاں کچھ نہ کہو
ہو نظر ہی جو بیاں کچھ نہ کہو

کب تلک راز رہے قلب کا راز
دلِ بے تاب عیاں کچھ نہ کہو

چشمِ پُرنم میں نہاں سب کچھ ہے
اشک تو خود ہیں بیاں کچھ نہ کہو

سوزِ دل کس سے بیاں کون کرے
بے زبانی ہو جہاں کچھ نہ کہو

کیوں رہے لفظ کی اور حرف کی یاد
ہے نہیں دل کی زباں کچھ نہ کہو

دل تو پُر لب ہے نہ اظہار سہی
چھلکے گا جو ہے نہاں کچھ نہ کہو

نہ سہی شہرت، عظمت نہ سہی
بھلی رسوائی یہاں کچھ نہ کہو

हों न अलफ़ाज़ जहाँ कुछ न कहो
हो नज़र ही जो बयाँ कुछ न कहो

कब तलक राज़ रहे क़ल्ब[1] का राज़
दिले-बेताब अयाँ[2] कुछ न कहो

चश्मे-पुरनम[3] में निहाँ[4] सब कुछ है
अश्क तो ख़ुद हैं बयाँ कुछ न कहो

सोज़े-दिल[5] किससे बयाँ, कौन करे
बेज़ुबानी हो जहाँ कुछ न कहो

क्यों रहे लफ़्ज़ की और हर्फ़ की याद
है नहीं दिल की ज़ुबाँ कुछ न कहो

दिल तो पुरलब[6] है न इज़हार[7] सही
छलकेगा जो है निहाँ कुछ न कहो

न सही शोहरत, अज़्मत[8] न सही
भली रुसवाई[9] यहाँ कुछ न कहो

1. क़ल्ब– दिल, 2. अयाँ– ज़ाहिर, 3. चश्मे-पुरनम– भीगी आँखें, 4. निहाँ– छुपा हुआ, 5. सोज़े-दिल– दिल का दर्द, 6. पुरलब– भरी हुई, 7. इज़हार– ज़ाहिर करना, 8. अज़्मत– बड़प्पन, 9. रूसवाई– बदनामी

ساغرِ عشق چھلکتا ہی رہا
میں سنبھلتا کہ سنبھلتا ہی رہا

منتظر کب سے نظر در پہ رہی
دلِ ناداں کہ بہلتا ہی رہا

زندگی شیشے کی مانند ہی رہی
لمحہ لمحہ میں بکھرتا ہی رہا

وہ جو خوابوں کے سہارے تھا چمن
بارِ یک اجڑا، اجڑتا ہی رہا

وصل کی شام بھی روکے نہ رکی
وقت آیا کہ گزرتا ہی رہا

سیکڑوں عذر و گلے ان کو رہے
وہ نہ بدلے، میں سدھرتا ہی رہا

सागर[1]-ए-इश्क़ छलकता ही रहा
मैं सम्भलता कि सम्भलता ही रहा

मुन्तज़िर[2] कब से नज़र दर पे रही
दिले-नादाँ कि बहलता ही रहा

ज़िन्दगी शीशे की मानिन्द[3] ही रही
लम्हा-लम्हा मैं बिखरता ही रहा

वह जो ख़्वाबों के सहारे था चमन
बारे-यक[4] उजड़ा, उजड़ता ही रहा

वस्ल[5] की शाम भी रोके न रुकी
वक़्त आया कि गुज़रता ही रहा

सैकड़ों उज़्रो-गिले[6] उनको रहे
वह न बदले, मैं सुधरता ही रहा

1. साग़र– पैमाना, 2. मुन्तज़िर– प्रतीक्षा में, 3. मानिन्द– तरह, 4. बारे-यक– एक बार, 5. वस्ल– मिलन, 6. उज़्रो-गिले– शिकवे शिकायत

گلہ تجھ سے نہیں بے ضابطہ ہے زندگی میری
کہیں کوئی رہی تو ہوگی ناشائستگی میری

بھلا کچھ تو رہے ہونگے مقاصد پیچ و خم کے
ہے اک الجھے ہوئے دھاگے کی صورت زندگی میری

مجھے کافر ہوئے مدّت ہوئی ایماں کہاں اپنا
مگر ہے عشق کے مذہب سے ہی وابستگی میری

کرم تیرا بہت تھا بھر دیا جو تو نے ساغر کو
زہے قسمت کہ اب بھی ہے جو کل تھی تشنگی میری

رہائی پاؤنگا میں قیدِ ہستی سے ضرور اک دن
نہ جانے زندگی کے بعد ہے کیا زندگی میری

गिला तुझ से नहीं बेज़ाब्ता[1] है ज़िन्दगी मेरी
कहीं कोई रही तो होगी नाशाइस्तगी[2] मेरी

भला कुछ तो रहे होंगे मक़ासिद[3] पेंच और ख़म[4] के
है इक उल्झे हुए धागे की सूरत ज़िन्दगी मेरी

मुझे काफ़िर हुए मुद्दत हुई ईमाँ कहाँ अपना
मगर है इश्क़ के मज़हब से ही वाबस्तगी[5] मेरी

करम तेरा बहुत था, भर दिया जो तूने साग़र[6] को
ज़हे क़िस्मत कि अब भी है जो कल थी तश्नगी[7] मेरी

रिहाई पाऊँगा मैं क़ैदे-हस्ती से ज़रूर एक दिन
न जाने ज़िन्दगी के बाद है क्या ज़िन्दगी मेरी

1. बेज़ाब्ता– अनियमित, 2. नाशाइस्तगी– बुराई या ग़लती, 3. मक़ासिद– आशय, 4. पेंच और ख़म– उलझाव, 5. वाबस्तगी– जुड़ाव, 6. साग़र– पैमाना, 7. तश्नगी– प्यास

اب کیا بتاؤں دل پہ ہے کیا کیا گزر رہی
وہ شام شام ہی رہی نہ وہ سحر رہی

لمحے الجھ کے رہ گئے بس تیری یاد میں
ہم کو مزاجِ وقت کی کچھ نہ خبر رہی

کیا پوچھتے ہو عالمِ فرقت کی بے بسی
کیا دل پہ اور جان پہ کیا کیا گزر رہی

کس سے کروں میں حالِ دلِ زار کا بیاں
شاید ہوں شاد عمر یہ باقی اگر رہی

اظہار تو نہ کر سکا میں اس سے عشق کا
دل میں چھپی چھپی سی تمنا مگر رہی

کیوں ہے اداس باغباں بادِ بہار سے
گل بھی کھلیں گے شاخِ شجر کل اگر رہی

अब क्या बताऊँ दिल पे है क्या-क्या गुज़र रही
वह शाम, शाम ही रही न वह सहर[1] रही

लमहे उलझ के रह गए बस तेरी याद में
हमको मिज़ाजे-वक्त की कुछ न ख़बर रही

क्या पूछते हो आलमे-फुर्क़त[2] की बेबसी
क्या दिल पे और जान पे क्या क्या गुज़र रही

किससे करूँ मैं हाले-दिले-ज़ार[3] का बयाँ
शायद हो शाद[4] उम्र यह बाक़ी अगर रही

इज़हार[5] तो न कर सका मैं उससे इश्क़ का
दिल में छुपी-छुपी सी तमन्ना मगर रही

क्यों है उदास बाग़बाँ[6] बादे-बहार[7] से
गुल भी खिलेंगे शाख़े-शजर[8] कल अगर रही

1. सहर– सुबह, 2. आलमे-फुर्क़त– जुदाई का आलम, 3. हाले-दिले-ज़ार– दुखी दिल का हाल, 4. शाद– ख़ुश, 5. इज़हार– ज़ाहिर करना, 6. बाग़बाँ– माली, 7. शाख़े-शजर– पेड़ की शाखा

کیا مرا آغاز کیا انجام ہے
کیا بتائیں کیسی صبح و شام ہے

غیر کس کو اور کسے اپنا کہیں
وصل کا ہر پل گزرتی شام ہے

آرزوؤں میں نہاں یہ خوف کیوں
خیر ہو کیا جانے کیا انجام ہے

ہم تو ہر پل ان کی الفت میں رہے
بے رخی کا ہم پہ کیوں الزام ہے

رہ نہ پائے گی یہاں اک بوند بھی
یوں کہ ان ہاتھوں میں اپنے جام ہے

پل ہی دو پل کی مسرت ہی سہی
کیسے کہہ دیں زندگی ناکام ہے

क्या मेरा आग़ाज़[1] क्या अंजाम[2] है
क्या बताएँ कैसी सुबहो-शाम है

ग़ैर किसको और किसे अपना कहें
वस्ल[3] का हर पल गुज़रती शाम है

आरज़ूओं[4] में निहाँ[5] यह ख़ौफ़ क्यों
ख़ैर हो क्या जाने क्या अंजाम है

हम तो हर पल उनकी उल्फ़त में रहे
बेरूख़ी का हम पे क्यों इल्ज़ाम है

रह न पाएगी यहाँ एक बूँद भी
यों कि इन हाथों में अपने जाम है

पल ही दो पल की मसर्रत[6] ही सही
कैसे कह दें ज़िन्दगी नाकाम है

1. आग़ाज़– शुरूआत, 2. अंजाम– नतीजा, 3. वस्ल– मिलन, 4. आरज़ूओं– इच्छाओं, 5. निहाँ– छुपा, 6. मसर्रत– ख़ुशी

جب تلک تاریکیاں ہیں رات کی
رازداری بھی ہے دل کی بات کی
کون جانے کیا ہو صورت صبح کی
پاسبانی کرتے رہیۓ رات کی
ٹوٹنے کو ہیں قفس کے تار تار
کون سوچے ہونے والی بات کی
رازِ دل تو بس برائے راز ہے
ہے خبر دنیا کو ہر اک بات کی
وصل میں بھی بے بسی ہے وقت کی
کیا بتائیں نازکی حالات کی

जब तलक तारीकियाँ[1] हैं रात की
राज़दारी भी है दिल की बात की

कौन जाने क्या हो सूरत सुबह की
पासबानी[2] करते रहिए रात की

टूटने को हैं क़फ़स[3] के तार-तार
कौन सोचे होने वाली बात की

राज़े-दिल तो बस बराए-राज़[4] है
है ख़बर दुनिया को हर इक बात की

वस्ल[5] में भी बेबसी है वक़्त की
क्या बताएँ नाज़ुकी[6] हालात की

1. तारीकियाँ– अंधेरे, 2. पासबानी– हिफ़ाज़त, 3. क़फ़स– पिंजरा, 4. बराए-राज़– नाम के राज़, 5. वस्ल– मिलन, 6. नाज़ुकी– नज़ाकत

بہاروں میں وہ اب جادو نہیں ہے
کھلے ہیں گل مگر خوشبو نہیں ہے

ہیں بکھرے خلق میں افراد یوں تو
سرِ مقتل کوئی بازو نہیں ہے

ہے انساں کی یہ کیسی بالادستی
کہیں انسانیت کی بو نہیں ہے

بہت بے تاب لب اظہار کو ہیں
مگر دل ہے کہ دل کی خو نہیں ہے

لئے ہوں ہاتھ میں اک جام میں بھی
مجھے قدموں پہ اب قابو نہیں ہے
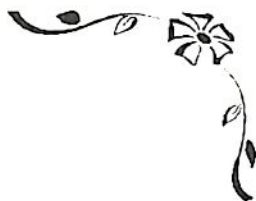
बहारों में वह अब जादू नहीं है
खिले हैं गुल मगर ख़ुशबू नहीं है

हैं बिखरे ख़ल्क़[1] में अफ़राद[2] यूं तो
सरे-मक़्तल[3] कोई बाज़ू नहीं है

है इन्सान की यह कैसी बालादस्ती[4]
कहीं इन्सानियत की बू नहीं है

बहुत बेताब लब इज़हार[5] को हैं
मगर दिल है कि दिल की ख़ू[6] नहीं है

लिए हूँ हाथ में इक जाम मैं भी
मुझे क़दमों पे अब क़ाबू नहीं है

1. ख़ल्क़– दुनिया, 2. अफ़राद– लोग, 3. सरे–मक़्तल– क़त्ल होने के लिए, 4. बालादस्ती– बुलन्दी, 5. इज़हार– ज़ाहिर करना 6. ख़ू– आदत
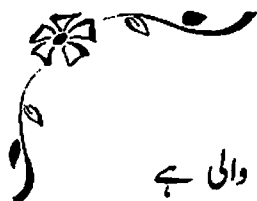
چھٹے گی رات اندھیاری سحر اب ہونے والی ہے
ملے گی راہ اجیاری سحر اب ہونے والی ہے

نہ جانے کیوں پریشاں اس قدر اب اہلِ عالم ہیں
بڑی نعمت ہے بیداری سحر اب ہونے والی ہے

اندھیرے میں ہی رہتے کب تلک یہ بام و در آخر
ہے آہٹ صبح کی پیاری سحر اب ہونے والی ہے

بہت کی اے شبِ غم ہم نے تیری ناز برداری
نہ ہو پلکوں پہ اب بھاری سحر اب ہونے والی ہے

دبے پاؤں چلی جائے گی دل سے دور تاریکی
ہے دل پر وجد سا طاری سحر اب ہونے والی ہے

छँटेगी रात अंधियारी सहर[1] अब होने वाली है
मिलेगी राह उजियारी सहर अब होने वाली है

न जाने क्यों परेशाँ इस क़दर अब अहले-आलम[2] हैं
बड़ी नेमत[3] है बेदारी[4] सहर अब होने वाली है

अँधेरे में ही रहते कब तलक यह बामो-दर[5] आख़िर
है आहट सुबह की प्यारी सहर अब होने वाली है

बहुत की ऐ शबे-ग़म[6] हमने तेरी नाज़बरदारी[7]
न हो पलकों पे अब भारी सहर अब होने वाली है

दबे पावों चली जाएगी दिल से दूर तारीकी[8]
है दिल पर वज्द[9] सा तारी[10] सहर अब होने वाली है

---

1. सहर– सुबह 2. अहले-आलम– दुनिया के लोग, 3. नेमत– धन, 4. बेदारी– जागना, 5. बामो-दर– कोठा और दरवाज़ा, 6. शबे-ग़म– ग़म की रात, 7. नाज़बरदारी– नखरे उठाना, 8. तारीकी– अंधेरा, 9. वज्द– बेख़ुदी, 10. तारी– छाई हुई

ہے دل غمگین کہیں کس بات کو ہم
لئے یادوں میں ہیں صدمات کو ہم
جلے ہیں آشیاں، اجڑے ہیں سپنے
سمیٹے ہیں مگر جذبات کو ہم
محبّت نے نہ دی کس دل کو آواز
تو اب کیوں روئیں ان حالات کو ہم
ہیں کھوئے بیخودی میں اس قدر ہم
نہ جانے نام کو ہم، ذات کو ہم
یہی بہتر ہے اب اس زندگی میں
نبھائیں وقت اور حالات کو ہم
رفاقت وقت نے ہے کب نبھائی
تو دیکھیں کیوں بھلا دن رات کو ہم

है दिल ग़मगीं[1], कहें किस बात को हम
लिए यादों में हैं सदमात[2] को हम

जले हैं आशियाँ, उजड़े हैं सपने
समेटे हैं मगर जज़्बात को हम

मुहब्बत ने न दी किस दिल को आवाज़
तो अब क्यों रोएँ इन हालात को हम

हैं खोए बेख़ुदी में इस क़दर हम
न जाने नाम को हम, ज़ात[3] को हम

यही बेहतर है अब इस ज़िन्दगी में
निभाएँ वक़्त और हालात को हम

रिफ़ाक़त[4] वक़्त ने है कब निभाई
तो देखें क्यों भला दिन रात को हम

1. ग़मगीं–दुखी 2. सदमात–ग़म 3. ज़ात–व्यक्तित्व 4. रिफ़ांक़त–दोस्ती

ہم تو خوابوں کو لئے دل میں بہلتے ہی رہے
بنا انجام کی پرواہ کے ہنستے ہی رہے
ادب آدابِ زمانہ کی کوئی فکر نہ کی
آگ کی طرح سے جذبات دہکتے ہی رہے
کیا بتائیں تمہیں ہم دردِ محبت کے مزے
لمحے فرقت کے بھی یادوں میں مہکتے ہی رہے
بے زباں بھی وہ رہا تو وہ نہ خاموش رہا
بھیگی پلکوں میں بھی الفاظ چھلکتے ہی رہے
کس نے انجام محبت کو بھلا دیکھا ہے
ہے بہکنا ہی محبت تو بہکتے ہی رہے

हम तो ख़्वाबों को लिए दिल में बहलते ही रहे
बिना अंजाम की परवाह के हँसते ही रहे

अदब–आदाबे-ज़माना[1] की कोई फ़िक्र न की
आग की तरह से जज़्बात दहकते ही रहे

क्या बताएँ तुम्हें हम दर्दे-मुहब्बत के मज़े
लमहे फ़ुरक़त[2] के भी यादों में महकते ही रहे

बेज़ुबाँ भी वह रहा तो वह न ख़ामोश रहा
भीगी पलकों में भी अल्फ़ाज़ छलकते ही रहे

किसने अंजामे-मुहब्बत को भला देखा है
है बहकना ही मुहब्बत तो बहकते ही रहे

1. अदब– आदाबे–ज़माना–ज़माने के तौर–तरीक़े, 2. फ़ुरक़त– जुदाई

میری خلوت میں جو ہیں، پُر وہ خلائیں کر دو
اپنے رنگوں ہی سے تصویر مری بھی بھر دو
آج اپنے ہی اندھیروں نے ہے گھیرا مجھ کو
آج سوئی ہوئی شمّع کو فروزاں کر دو
گردِ گردش میں کہیں کھوئے ہیں سپنے اپنے
میری پلکوں پہ وہی سپنے اجاگر کر دو
لمحے خاموش ہیں خاموش ہواؤں کی طرح
اپنی قربت سے ہی بیتاب یہ لمحے کر دو
تم مرے ساتھ چلو میرا مقدر بن جاؤ
میرے دامن میں بھی خوشبو کی بہاریں بھر دو
کون جانے کہ کہاں راہ ہے، منزل ہے کہاں
دل میں بس جاؤ مرے دل کو ہی منزل کر دو

मेरी ख़िल्वत[1] में जो हैं, पुर वह ख़लायें[2] कर दो
अपने रंगों ही से तस्वीर मेरी भी भर दो

आज अपने ही अंधेरों ने है घेरा मुझको
आज सोई हुई शमा को फ़रोज़ाँ[3] कर दो

गर्दे-गर्दिश[4] में कहीं खोए हैं सपने अपने
मेरी पलकों पे वही सपने उजागर कर दो

लम्हे ख़ामोश हैं ख़ामोश हवाओं की तरह
अपनी कुर्बत[5] से ही बेताब यह लम्हे कर दो

तुम मेरे साथ चलो मेरा मुक़द्दर[6] बन जाओ
मेरे दामन में भी ख़ुशबू की बहारें भर दो

कौन जाने कि कहाँ राह है, मंजिल है कहाँ?
दिल में बस जाओ मेरे दिल को ही मंज़िल कर दो

---

1. ख़िल्वत– तन्हाई, 2. ख़लाएँ– शून्य, 3. फ़रोज़ाँ– रौशन, 4. गर्दे-गर्दिश– परेशानी के गुबार, 5. कुर्बत– नज़दीकी, 6. मुक़द्दर– नसीब

چلے راہ انجان، ہم ہیں دیوانے
اکیلا سفر ہے، ہیں موسم سہانے

نہ ماضی ہی ہمراہ، نہ ہمراز اپنا
نہ دیکھے پلٹ کر گزرتے زمانے

جہاں ہی سفر ہے رکیں ہم کہاں پر
نشیمن کہاں ہو کہاں آشیانے

بشر ہی اگر ہو مسافر جہاں میں
کسے اپنا سمجھیں کسے ہم بے گانے

یہ بھیدوں کی دنیا ہے ہم نے نہ جانی
چلی لے کے ہم کو کہاں زیست جانے

کہ مبہم ہے طرزِ ادائے زمانہ
چلے اعتمادِ نظر آزمانے

قدم ہر ڈگر کا ہے فانی جہاں میں
رہے نہ نشاں بھی، اسے کون جانے

میں گزروں اکیلے ہجومِ جہاں سے
نہ اپنا ہے کوئی نہ ہی ہیں بے گانے

चले राह अंजान, हम हैं दिवाने
अकेला सफ़र है, हैं मौसम सुहाने
न माज़ी[1] ही हमरह[2], न हमराज़ अपना
न देखे पलट कर गुज़रते ज़माने
जहाँ ही सफ़र है रुकें हम कहाँ पर
नशेमन[3] कहाँ हो कहाँ आशियाने
बशर[4] ही अगर हो मुसाफ़िर जहाँ में
किसे अपना समझें किसे हम बेगाने
यह भेदों की दुनिया है हमने न जानी
चली लेके हम को कहाँ ज़ीस्त जाने
कि मुबहम[5] है तर्ज़ो-अदाए-ज़माना[6]
चले ऐतमादे-नज़र[7] आज़माने
क़दम हर डगर का है फ़ानी[8] जहाँ में
रहे ना निशाँ भी, इसे कौन जाने
मैं गुज़रूँ अकेले हुजूमे-जहाँ[9] से
न अपना है कोई न ही हैं बेगाने

1. माज़ी– भूतकाल, 2. हमरह– हमराह, 3. नशेमन– घोंसला, 4. बशर– इंसान 5. मुबहम– अस्पष्ट, 6. तर्ज़ो–अदाए–ज़माना– ज़माने के तरीक़े और अदा, 7. ऐतमादे-नज़र– नज़र का भरोसा, 8. फ़ानी– नश्वर, 9. हुजूमे–जहाँ– दुनिया की भीड़

یارو وہ زندگی تو کوئی زندگی نہیں
الفت کے رنگ میں جو کبھی بھی رنگی نہیں

بندہ ہوا میں، دل نے جو چاہی تھی بندگی
یارو یہ میری جیت شکستہ دلی نہیں

مجھ کو طلب ہے حسن کی بت کی طلب نہیں
پوجے نہ حسن کو وہ کوئی بندگی نہیں

ہم جی رہے ہیں اور کوئی ضابطہ نہیں
بندش میں ہم جئیں یہ کوئی زندگی نہیں

سجدے میں سر کسی نے نہ دیکھا کبھی مرا
یارو یہ بندگی مری کیا بندگی نہیں

اک عمر میری بیت گئی سوچتے ہوئے
یہ زندگی بھی کیا ہے کہ آسودگی نہیں

यारो, वह ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं
उल्फ़त के रंग में जो कभी भी रंगी नहीं

बन्दा हुआ मैं दिल ने जो चाही थी बन्दगी
यारो, यह मेरी जीत शिकस्तादिली[1] नहीं

मुझ को तलब[2] है हुस्न की बुत की तलब नहीं
पूजे न हुस्न को वह कोई बन्दगी नहीं

हम जी रहे हैं और कोई ज़ाब्ता[3] नहीं
बन्दिश में हम जियें यह कोई ज़िन्दगी नहीं

सजदे[4] में सर किसी ने न देखा कभी मेरा
यारो, यह बन्दगी मेरी क्या बन्दगी नहीं

एक उम्र मेरी बीत गई सोचते हुए
यह ज़िन्दगी भी क्या है कि आसूदगी[5] नहीं

1. शिकस्तादिली– दिल का टूटना, 2. तलब– चाह, 3. ज़ाब्ता– नियम, 4. सजदे– सर झुकाना, 5. आसूदगी– आराम

وہ راز کیا ہے جو ہے چھپا ان نگاہوں میں
بادِ خزاں، بتا مجھے کیا ہے فضاؤں میں

غم جو پڑے ہیں دل پہ ہمیں کو ہے بس پتہ
اپنی تمام زندگی گزری ہے آہوں میں

میرا نہیں یہ سارے زمانے کا درد ہے
بہلائیں کیسے دل کو، سکوں ہو نگاہوں میں

کیا غم ،غمِ وفا کا کہ غمگین دل ہو کیوں
رکھّا بھی کیا ہے گزری ہوئی ان خطاؤں میں

دانائی کا ہے کیوں تجھے غم، دل مجھے بتا
ہمدم رہا ہے تو ہی تو غم کی فضاؤں میں

دل کی عجب تھی وضع غضب کی تھی وہ ادا
جو کیف ٹوٹتا تھا ستم میں جفاؤں میں

वह राज़ क्या है जो है छुपा उन निगाहों में
बादे-ख़िज़ाँ[1] बता मुझे क्या है फ़िज़ाओं में

ग़म जो पड़े हैं दिल पे हमीं को है बस पता
अपनी तमाम ज़िन्दगी गुज़री है आहों में

मेरा नहीं यह सारे ज़माने का दर्द है
बहलाएँ कैसे दिल को, सुकूँ[2] हो निगाहों में

क्या ग़म ग़मे-वफ़ा का कि ग़मगीन[3] दिल हो क्यों
रखा भी क्या है गुज़री हुई उन ख़ताओं में

दानाई[4] का है क्यों तुझे ग़म, दिल मुझे बता
हमदम रहा है तू ही तो ग़म की फ़िज़ाओं में

दिल की अजब थी वज़्आ[5], ग़ज़ब की थी वो अदा
जो कैफ़[6] ढूँढता था सितम में जफ़ाओं में

1. बादे–ख़िज़ाँ– पतझड़ की हवा, 2. सुकूँ– चैन, 3. ग़मगीन– दुखी, 4. दानाई–समझदारी, 5. वज़्आ– ढंग, 6. कैफ़– लुत्फ़, मज़ा

آج کیوں جشنِ چراغاں میں وہ نور ابھرا نہیں

بات کیا رنگِ فضا میں ہے جو دل بہلا نہیں
کچھ سکوں دیتا نہیں اب جلوۂ رقصِ بہار
دل غمِ ہجراں کے بندھن سے ابھی نکلا نہیں
جستجو ہی زندگی ہے جستجو ہی اک ہنر
جستجو ہر دل میں ہے کوئی بھی دل تنہا نہیں
ہوتی ہیں یادیں یقیناً شادمانی کا سبب
آج یادِ یار سے بھی اپنا دل بہلا نہیں
اے غمِ ہجراں یہ تونے دل پہ کیا کچھ کر دیا
اب سکونِ دل وصالِ یار میں ملتا نہیں
میں فنا وحدت میں ہوں اے جانے جاں اے جانِ گل
اک سوا تیرے کسی کو میں نے تو چاہا نہیں

आज क्यों जश्ने–चरागाँ[1] में वह नूर उभरा नहीं
बात क्या रंगे-फ़िज़ा[2] में है जो दिल बहला नहीं

कुछ सुकूँ[3] देता नहीं अब जल्वा-ए-रक़्से–बहार[4]
दिल ग़मे-हिजराँ[5] के बंधन से अभी निकला नहीं

जुस्तजू[6] ही ज़िन्दगी है जुस्तजू ही एक हुनर
जस्तजू हर दिल में है कोई भी दिल तन्हा नहीं

होती हैं यादें यक़ीनन शादमानी[7] का सबब[8]
आज यादे-यार से भी अपना दिल बहला नहीं

ऐ ग़में-हिजराँ यह तूने दिल पे क्या कुछ कर दिया
अब सुकूने-दिल[9] विसाले-यार[10] में मिलता नहीं

मैं फ़ना[11] वहदत[12] में हूँ ऐ जाने-जाँ ऐ जाने-गुल
इक सिवा तेरे किसी को मैने तो चाहा नहीं

1. जश्ने–चरागाँ– दीवाली, 2. रंगे-फ़िज़ा– मौसम का रंग, 3. सुकूँ– चैन, 4. जलवा-ए-रक़्से-बहार– बहार के नाच का जलवा, 5. ग़मे-हिजराँ– जुदाई का ग़म, 6. जुस्तजू– तलाश, 7. शादमानी– ख़ुशी, 8. सबब– कारण, 9. सुकूने-दिल– दिल का चैन, 10. विसाले-यार– दोस्त से मुलाक़ात, 11. फना– मिट जाना, 12. वहदत– एकाकार

بت پرستی نہیں ہے عشق عبادت اپنی
ذاتِ واحد سے ہے موسوم محبّت اپنی

حالِ وحدت میں کہاں اپنی شناخت اپنی تمیز
ہے محبّت میں کہیں کھوئی صداقت اپنی

وہ جسے کچھ بھی نہیں ہوتا وفا کا احساس
ہے اسی جانِ تمنا سے شکایت اپنی

راز دار اس کے ہوئے ہم نہ رفیق اس کے ہوئے
جانے کس بات پہ ہے اس سے عداوت اپنی

دردِ دل سب کے مقدّر میں کہاں ہوتے ہیں
ایک نعمت ہے غموں کی یہ روایت اپنی

وہی وعدے جو نبھائے نہیں ہم نے جاناں
اُنہیں وعدوں کی عوض ہے یہ ندامت اپنی

منزلوں کو تو کبھی پا نہ سکے اپنے قدم
راستوں تک ہی رہی محدود مسافت اپنی

बुत परस्ती[1] नहीं है इश्क़ इबादत[2] अपनी
ज़ाते-वाहिद[3] से है मौसूम[4] मुहब्बत अपनी

हाले-वहदत[5] में कहाँ अपनी शनाख़्त[6] अपनी तमीज़[7]
है मुहब्बत में कहीं खोई सदाक़त[8] अपनी

वह जिसे कुछ भी नहीं होता वफ़ा का अहसास
है उसी जाने-तमन्ना से शिकायत अपनी

राज़दार उसके हुए हम न रफ़ीक़[9] उसके हुए
जाने किस बात पे है उससे अदावत[10] अपनी

दर्दे-दिल सबके मुक़द्दर में कहाँ होते हैं
एक नेमत[11] है ग़मों की यह रिवायत[12] अपनी

वही वादे जो निभाए नहीं हमने जानाँ
उन्हीं वादों की एवज़[13] है यह निदामत[14] अपनी

मंज़िलों को तो कभी पा न सके अपने क़दम
रास्तों तक ही रही महदूद[15] मसाफ़त[16] अपनी

1. बुतपरस्ती– मूर्तिपूजा, 2. इबादत– पूजा, 3. ज़ाते-वाहिद– एक ज़ात 4. मौसूम– नाम से, 5. हाले-वहदत– मिलन का हाल, 6. शनाख़्त– पहचान, 7. तमीज़– पहचान, 8. सदाक़त– सच्चाई, 9. रफ़ीक़– दोस्त, 10. अदावत– दुश्मनी, 11. नेमत– धन, 12. रिवायत– रिवाज, 13. एवज़– बदले में, 14. निदामत– शर्मिन्दगी, 15.महदूद– सीमित, 16 मसाफ़त– दूरी

میں تری بزم میں ہوں تیری عنایت ہی تو ہے
اور یہ شرکت بھی مری ایک عبادت ہی تو ہے

مت کہو مجھ سے نہیں کوئی تعلق تم سے
بے تعلّق ہوں میں تم سے یہ رقابت ہی تو ہے

آج تک سنتے رہے تیری نگاہوں کے بیاں
اب جو ہونٹوں پہ ہے اس میں بھی شکایت ہی تو ہے

تیرے قدموں کے نشاں پر ہیں نگاہیں میری
یہ بھی تیرا ہی اک اندازِ قیادت ہی تو ہے

دل کی ہم بات بتائیں گے تو رسوائی ہے
رازِ دل کہنے کی عادت میں ندامت ہی تو ہے

मैं तेरी बज़्म[1] में हूँ तेरी इनायत[2] ही तो है
और यह शिरकत[3] भी मेरी एक इबादत[4] ही तो है

मत कहो मुझसे नहीं कोई तअल्लुक[5] तुम से
बे तअल्लुक हूँ मैं तुम से यह रक़ाबत[6] ही तो है

आज तक सुनते रहे तेरी निगाहों के बयाँ
अब जो होठों पे है उसमें भी शिकायत ही तो है

तेरे क़दमों के निशाँ पर हैं निगाहें मेरी
यह भी तेरा ही एक अन्दाज़े-क़यादत[7] ही तो है

दिल की हम बात बताएंगे तो रूसवाई[8] है
राज़े-दिल कहने की आदत में निदामत[9] ही तो है

1. बज़्म– महफ़िल, 2. इनायत– कृपा, 3. शिरकत– भाग लेना, 4. इबादत– पूजा, 5. तअल्लुक– रिश्ता, 6. रक़ाबत– दुश्मनी, 7. क़यादत– अगुवाई, 8. रुसवाई– बदनामी, 9. निदामत– शर्मिन्दगी

دلِ حزیں نے نہ پایا قرار دیکھ لیا
یہ اور بات تجھے بار بار دیکھ لیا

اجڑتے دیکھا تھا گلشن کو جن نگاہوں سے
انہیں نگاہوں سے رنگِ بہار دیکھ لیا

غریبِ شہر کی حالت وہی رہی کہ جو تھی
امیرِ شہر ترا اقتدار دیکھ لیا

پڑا جو وقت تو پہچانا میں نے اپنوں کو
ہے کون کون مرا غمگسار دیکھ لیا

نہیں ہے دل میں مرے اب ملالِ سود و زیاں
ہے اس جہاں کا عجب کاروبار دیکھ لیا

दिले-हज़ीं[1] ने न पाया क़रार[2] देख लिया
यह और बात तुझे बार बार देख लिया

उजड़ते देखा था गुलशन को जिन निगाहों से
उन्हीं निगाहों से रंगे-बहार देख लिया

ग़रीबे-शहर की हालत वही रही कि जो थी
अमीरे-शहर तेरा इक़्तदार[3] देख लिया

पड़ा जो वक़्त तो पहचाना मैंने अपनों को
है कौन कौन मेरा ग़मगुसार[4] देख लिया

नहीं है दिल में मेरे अब मलाले-सूदो-ज़ियाँ[5]
है इस जहाँ का अजब कारोबार देख लिया

1. दिले-हज़ीं– ग़मज़दा दिल, 2. क़रार– चैन, 3. इक़्तदार–ताक़त, 4. ग़मगुसार– दुख भुलाने वाला 5. मलाले-सूदो-ज़ियाँ– लाभ हानि का दुख

دوا سمجھے ہیں، ہے وہ علالت لادوا میری
نہ میرے حق میں کام آئے گی اے ناصح دعاء میری

میں آگے بڑھ رہا ہوں اور منزل ہٹتی جاتی ہے
چلے کوسوں مگر کوسوں رہی ہے رہ جدا میری

نہیں آساں ہے رہ دل کی مخالف ہر قدم رہ کا
مگر آسان کردیگی رہِ منزل دعاء میری

سنا ہے عشق میں لازم ہے ہونا آہِ سوزاں کا
ہے شامل آہِ سوزاں عاشقی ہے جاں فزا میری

نہ جانے سوزِ دل کی انتہا کیا ہے محبت میں
بھلا ہو خیر ہو، ہے یہ ابھی تو ابتدا میری

تڑپنا دل کا کیا لازم ہے الفت میں، جدائی میں
کہ ہے دل کے تڑپنے میں ہی جینے کی ادا میری

سنا یہ ہے تمہارے لب سے کچھ شکوہ نہ ہو پایا
ابھی تک سوچ میں ہوں میں، ہے آخر کیا خطا میری

दवा समझे हैं, है वह अलालत[1] लादवा[2] मेरी
न मेरे हक़ में काम आएगी ऐ नासेह[3] दुआ मेरी

मैं आगे बढ़ रहा हूँ और मंज़िल हटती जाती है
चले कोसों मगर कोसों रही है रह जुदा मेरी

नहीं आसाँ है रह दिल की मुख़ालिफ़[4] हर क़दम रह का
मगर आसान कर देगी रहे-मंज़िल दुआ मेरी

सुना है इश्क़ में लाज़िम[5] है होना आहे-सोज़ाँ[6] का
है शामिल आहे-सोज़ाँ आशिक़ी है जाँफिज़ा[7] मेरी

न जाने सोज़े-दिल की इन्तहा[8] क्या है मुहब्बत में
भला हो ख़ैर हो है यह अभी तो इब्तदा[9] मेरी

तड़पना दिल का क्या लाज़िम है उल्फ़त में जुदाई में
कि है दिल के तड़पने में ही जीने की अदा मेरी

सुना यह है तुम्हारे लब से कुछ शिकवा[10] न हो पाया
अभी तक सोच में हूँ मैं, है आख़िर क्या ख़ता[11] मेरी

1. अलालत– बीमारी, 2. लादवा– जिसकी दवा न हो, 3. नासेह– नसीहत करने वाला, 4. मुख़ालिफ़– ख़िलाफ़ , 5. लाज़िम– ज़रूरी, 6. आहे-सोज़ाँ– दुख की आह, 7. जाँफिज़ा– जान को आराम देने वाला, 8. इन्तहा– सीमा, 9. इब्तदा– शरुआत, 10. शिकवा– शिकायत, 11. ख़ता– ग़लती

جانے کیوں اہلِ جہاں کو میں گوارا نہ ہوا
کہنا پڑتا ہے یہی اب کہ گزارا نہ ہوا

غیر تو غیر ہیں شکوہ بھی بھلا کیا ان سے
ہم جسے سمجھے تھے اپنا وہ ہمارا نہ ہوا

موجِ دریا پہ ہی بہتی رہی کشتی اپنی
دو کنارے تھے مگر کوئی کنارا نہ ہوا

حالِ دل سن کے مرا اس کے لبِ نازک میں
کوئی جنبش نہ ہوئی کوئی اشارہ نہ ہوا

عمر کے پل تو بکھرتے ہی رہے بے ترتیب
حسنِ ترتیب سے جینا ہی ہمارا نہ ہوا

باغباں تو ہی بتا اس میں خطا کس کی ہے
کیوں بہاروں میں بہاروں کا نظارا نہ ہوا

کیوں کروں تجھ سے، زمانے سے کہ اپنوں سے گلہ
کیوں نہ کہہ دوں کہ مقدّر ہی ہمارا نہ ہوا

जाने क्यों अहले-जहाँ[1] को मैं गवारा न हुआ
कहना पड़ता है यही अब कि गुज़ारा न हुआ

ग़ैर तो ग़ैर हैं शिकवा भी भला क्या उनसे
हम जिसे समझे थे अपना वह हमारा न हुआ

मौजे-दरिया[2] पे ही बहती रही कश्ती अपनी
दो किनारे थे मगर कोई किनारा न हुआ

हाले-दिल सुन के मेरा उसके लबे-नाज़ुक में
कोई जुंबिश[3] न हुई कोई इशारा न हुआ

उम्र के पल तो बिखरते ही रहे बेतरतीब[4]
हुस्ने-तरतीब से जीना ही हमारा न हुआ

बाग़बाँ[5] तू ही बता इस में ख़ता किसकी है
क्यों बहारों में बहारों का नज़ारा न हुआ

क्यों करूँ तुझसे ज़माने से कि अपनों से गिला
क्यों न कह दूँ कि मुक़द्दर[6] ही हमारा न हुआ

---

1. अहले–जहाँ–दुनिया के लोग 2. मौजे-दरिया–नदी की लहर, 3. जुंबिश–हरकत
4. बेतरतीब–बिना तरीके के, 5. बाग़बाँ–माली, 6. मुक़द्दर–तक़दीर

چلے آئیں گے ہم تیری طرف دل میں اگر ہوگا
یہ دیکھیں گے کہ کیا رنگِ جہاں طرزِ سفر ہوگا

چلا ہے دل اگر اپنی ڈگر تو مجھ کو ڈر کیسا
بلا سے میری ہو رستہ اگر کچھ پُرخطر ہوگا

سحر ہے دور تر، کافی ابھی ہے رات بھی باقی
ملن ہوگا محبّت میں اگر اپنی اثر ہوگا

نہ پہنچوں گا بھلا پھر کیوں نہ میں تا منظرِ منزل
جو منزل تک پہنچنے کا ارادہ پختہ تر ہوگا

وہ دن آئے گا میں ایسا بھی اک گلشن بناؤں گا
جہاں گل چاندنی ہر اک گلِ شاخِ شجر ہوگا

चले आएंगे हम तेरी तरफ़ दिल में अगर होगा
यह देखेंगे कि क्या रंगे-जहाँ तर्ज़े-सफ़र[1] होगा

चला है दिल अगर अपनी डगर तो मुझको डर कैसा
बला से मेरी हो रस्ता अगर कुछ पुरख़तर[2] होगा

सहर[3] है दूर तर, काफ़ी अभी है रात भी बाक़ी
मिलन होगा, मुहब्बत में अगर अपनी असर होगा

न पहँचूँगा भला फिर क्यों न मैं ता मंज़रे-मंज़िल[4]
जो मंज़िल तक पहुँचने का इरादा पुख़्तातर[5] होगा

वह दिन आएगा मैं ऐसा भी एक गुलशन बनाऊँगा
जहाँ गुल चाँदनी हर एक गुले-शाख़े-शजर[6] होगा

1 तर्ज़े-सफ़र– सफर का अंदाज़, 2. पुरख़तर– ख़तरों से भरा 3. सहर– सुबह, 4. ता मंज़रे-मंज़िल– मंज़िल के मंज़र तक, 5. पुख़्तातर– मज़बूत, 6. गुले-शाख़े-शजर– पेड़ की डाल का फूल

تجھے کیا بتاؤں میں حالِ دل، رخِ خوشنما پہ نہ جا صنم
مرا دردِ دل تو ہے لادوا غمِ لادوا پہ نہ جا صنم

تجھے جب سے چاہا ہے اے صنم ہے عجیب حالِ زبوں مرا
جو بھرم مرا ہے وہ لادوا غمِ لادوا پہ نہ جا صنم

ترے غم وہ تحفے ہیں زیست کے کہ نہیں ہے انکا کوئی جواب
ترا غم ہی میری حیات ہے دلِ غمزدہ پہ نہ جا صنم

مری لغزشیں نہیں لغزشیں مری گردشیں نہیں گردشیں
میں ہوں رہ گزاروں سے آشنا مرے ظاہرا پہ نہ جا صنم

تو مری خوشی پہ نگاہ رکھ تو مری ہنسی پہ نگاہ رکھ
بڑے غم ہیں دل میں چھپے ہوئے دلِ غمزدہ پہ نہ جا صنم

तुझे क्या बताऊँ मैं हाले-दिल रुख़े-ख़ुशनुमा[1] पे न जा सनम
मेरा दर्दे-दिल तो है लादवा[2] ग़मे-लादवा पे न जा सनम

तुझे जब से चाहा है ऐ सनम है अजीब हाले-ज़बूँ[3] मेरा
जो भरम मेरा है वह लादवा ग़मे-लादवा पे न जा सनम

तेरे ग़म वह तोहफ़े हैं ज़ीस्त[4] के कि नहीं है उनका कोई जवाब
तेरा ग़म ही मेरी हयात[5] है दिले-ग़मज़दा[6] पे न जा सनम

मेरी लग़ज़िशें[7] नहीं लग़ज़िशें, मेरी गरदिशें[8] नहीं गरदिशें
मैं हूँ रहगुज़ारों से आशना[9] मेरे ज़ाहिरा[10] पे न जा सनम

तू मेरी ख़ुशी पे निगाह रख तू मेरी हँसी पे निगाह रख
बड़े ग़म हैं दिल में छिपे हुए दिले-ग़मज़दा पे न जा सनम

1. रूख़े-ख़ुशनुमा– प्रसन्न चेहरा, 2. लादवा– जिसकी दवा न हो, 3. हाले-ज़बूँ– परेशानी, 4. ज़ीस्त– ज़िन्दगी, 5. हयात– ज़िन्दगी, 6. ग़मज़दा– दुखी, 7. लग़ज़िशें– ग़लतियाँ 8. गरदिशें– परेशानियाँ, 9. आशना– वाक़िफ़, 10 ज़ाहिरा– प्रकट

ہم ترے غم کو ہیں غم اپنا بنانے والے
اشک ترے ہیں اب ان آنکھوں میں آنے والے

صرف تیرے ہی قدم اب نہ پڑیں کانٹوں پر
ہم تو ہیں تجھ سے ترا عہد نبھانے والے

یہ نہیں تیری خطا یہ ہے زمانے کا چلن
شبِ ظلمت میں مجھے چھوڑ کے جانے والے

کیا ہوا گر جو ہے دشوار سفر سوئے سحر
ہم بھی مشکل کو ہیں آسان بنانے والے

اب بہت دور نہیں بادِ سحر اے لوگو
قافلے خوشبو کے ہیں اس طرف آنے والے

نم نہ ہو آنکھ تری دل میں نہ غم تیرے رہیں
عمر بھر ہم ہیں ترا ساتھ نبھانے والے

हम तेरे ग़म को हैं ग़म अपना बनाने वाले
अश्क[1] तेरे हैं अब इन आँखों में आने वाले

सिर्फ़ तेरे ही क़दम अब न पड़ें काँटों पर
हम तो हैं, तुझसे तेरा अहद[2] निभाने वाले

यह नहीं तेरी ख़ता[3] यह है ज़माने का चलन
शबे-ज़ुल्मत[4] में मुझे छोड़ के जाने वाले

क्या हुआ गर जो है दुश्वार[5] सफ़र सूए-सहर[6]
हम भी मुश्किल को हैं आसान बनाने वाले

अब बहुत दूर नहीं बादे-सहर[7] ऐ लोगो
क़ाफ़िले ख़ुशबू के हैं इस तरफ़ आने वाले

नम न हो आँख तेरी दिल में न ग़म तेरे रहें
उम्र भर हम हैं तेरा साथ निभाने वाले

---

1. अश्क– आसूँ, 2. अहद– वादा, 3. ख़ता– ग़लती, 4. शबे-ज़ुल्मत– दुखों की रात, 5. दुश्वार– कठिन, 6. सूए-सहर– सुबह की तरफ़, 7. बादे-सहर– सुबह की हवा

وہ بھی کوئی دل ہے جس میں آرزو نہ ہو
وہ بھی کوئی پھول ہے کہ جس میں بو نہ ہو

داستانِ زیست کا عنواں تلاش بھی
جینا فضول دل میں اگر جستجو نہ ہو

فرقت میں فاصلے تو رہیں گے مگر کہو
دل میں رہے جو ہر پہر کیا رو بہ رو نہ ہو

بیکار ہے وہ شخص کہ جس کو طلب نہ ہو
ہوں نعمتیں ہزار مگر آرزو نہ ہو

رسمِ حیا سہی مگر ایسا بھی کیا صنم
نظروں میں میری اور تری گفتگو نہ ہو

اے چاند تو حسین ہے لیکن میں تیرا حسن
دیکھوں تو جب کہ وہ مرے رو بہ رو نہ ہو

वह भी कोई दिल है जिसमें आरज़ू[1] न हो
वह भी कोई फूल है कि जिस में बू न हो

दास्ताने-ज़ीस्त[2] का उनवाँ[3] तलाश भी
जीना फ़ुज़ूल दिल में अगर जुस्तजू[4] न हो

फ़ुर्क़त में फ़ासले तो रहेंगे मगर कहो
दिल में रहे जो हर पहर क्या रूबरू[5] न हो

बेकार है वह शख़्स[6] कि जिसको तलब[7] न हो
हों नेमतें[8] हज़ार मगर आरज़ू न हो

रस्मे-हया सही मगर ऐसा भी क्या सनम
नज़रों में मेरी और तेरी गुफ्तगू[9] न हो

ऐ चाँद तू हसीन है लेकिन मैं तेरा हुस्न
देखूँ तो जब कि वह मेरे रूबरू न हो

1. आरज़ू– इच्छा, 2. दास्ताने-ज़ीस्त–ज़िन्दगी की कहानी, 3. उनवाँ– शीर्षक, 4. जुस्तजू– तलाश, 5. रूबरू– सामने, 6. शख़्स– व्यक्ति, 7. तलब– चाह, 8. नेमतें– दौलतें, 9. गुफ्तगू– बात चीत

گزاریں زندگی کیسے کہ وہ گل رخ ہی قاتل ہے
اسی طرح جئیں کب تک کہ جینا کارِ مشکل ہے

نہ دل میں آرزو باقی نہ شوقِ جستجو باقی
مخالف ہیں ہوائیں اور ازحد دور منزل ہے

ہجومِ خلق ہے اور گردشیں ہی گردشیں ہر سو
مری حدِّ نظر میں کوئی جادہ ہے نہ منزل ہے

ملا نہ ہم سخن کوئی جو میرا رنگِ رخ سمجھے
جو سمجھا ہے تو وہ سمجھا جو آئینہ مقابل ہے

کہاں وہ ہم سفر جس کو میں اپنا ہم قدم سمجھوں
ہے میرا ہر قدم تنہا نہ رستہ ہے نہ منزل ہے

गुज़ारें ज़िन्दगी कैसे कि वह गुलरुख़[1] ही क़ातिल है
इसी तरह जिएँ कब तक कि जीना कारे-मुश्किल[2] है

न दिल में आरज़ू[3] बाक़ी न शौक़े-जुस्तजू[4] बाक़ी
मुख़ालिफ़[5] हैं हवाएँ और अज़हद[6] दूर मंज़िल है

हुजूमे-ख़ल्क़[7] है और गर्दिशें[8] ही गर्दिशें हर सू[9]
मेरी हद्दे-नज़र में कोई जादा[10] है न मंज़िल है

मिला न हमसुख़न[11] कोई जो मेरा रंगे-रुख़[12] समझे
जो समझा है तो वह समझा जो आइना मुक़ाबिल[13] है

कहाँ वह हम सफ़र जिसको मैं अपना हम क़दम समझूँ
है मेरा हर क़दम तन्हा न रस्ता है न मंज़िल है

---

1. गुलरूख़– महबूब, 2. कारे-मुश्किल– मुश्किल काम, 3. आरज़ू– इच्छा, 4. जुस्तजू– तलाश, 5. मुख़ालिफ़– ख़िलाफ़, 6. अज़हद– हद से ज़्यादा, 7. हुजूमे-ख़ल्क़– दुनिया की भीड़, 8. गर्दिशें– परेशानियाँ, 9. हर सू– हर तरफ़, 10. जादा– राह, 11. हमसुख़न– बात करने वाला, 12. रंगे-रूख़– चेहरे का रंग, 13. मुक़ाबिल– सामने

نہ جانے پھر سحر آئے نہ آئے
ملن کا یہ پہر آئے نہ آئے
ہمیں تو آرزو کرنا ہے یارو
مراد اپنی یہ بر آئے نہ آئے
ہمیں تو انتظار ان کا بہت ہے
پیام ان کا ادھر آئے نہ آئے
تجلی دیکھ لی ہم نے تو اس کی
قیامت اب ادھر آئے نہ آئے
خزاں اب ہم کو راس آنے لگی ہے
بہاروں کی سحر آئے نہ آئے
رہیں گے ہم تو اس کی دھڑکنوں میں
وہ جانِ جاں ادھر آئے نہ آئے
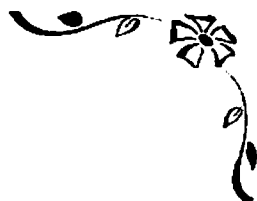
न जाने फ़िर सहर[1] आये न आये
मिलन का यह पहर आये न आये

हमें तो आरज़ू[2] करना है यारो
मुराद[3] अपनी यह बर[4] आये न आये

हमें तो इन्तेज़ार उनका बहुत है
पयाम[5] उनका इधर आये न आये

तजल्ली[6] देख ली हमने तो उसकी
क़यामत अब इधर आये न आये

ख़िज़ाँ[7] अब हमको रास आने लगी है
बहारों की सहर आये न आये

रहेंगे हम तो उसकी धड़कनों में
वह जाने-जाँ इधर आये न आये

1. सहर– सुबह, 2. आरज़ू– इच्छा, 3. मुराद– ख़्वाहिश, 4. बर– पूरी, 5. पयाम– पैग़ाम, 6. तजल्ली– जलवा, रौशनी, 7. खिज़ाँ– पतझड़

آخر آخر وقت تو آیا
تم نے میرا ساتھ نبھایا

ہم جب دل میں سوچ رہے تھے
اس نے پردہ رخ سے اٹھایا

مشکل کیا کیا راہ میں آئی
وقت نے ہر پل خود کو نبھایا

دل نے کی پھر دل سے بات
بھول گئے ہم اپنا پرایا

ہوش کہاں جو دَہر کو دیکھیں
ہم نے خود کو بھی ہے بھلایا

عمر ہوئی ہے یوں ہی جیتے
ہجر میں تیرے دل بہلایا

ان کا کیا احسان بتائیں
ان کو پاکر خود کو پایا

کیا کیا ہم احساس بتائیں
شام ہوئی اور جی گھبرایا

आख़िर आख़िर वक्त तो आया
तुमने मेरा साथ निभाया

हम जब दिल में सोच रहे थे
उसने परदा रुख़[1] से उठाया

मुश्किल क्या क्या राह में आई
वक़्त ने हर पल खुद को निभाया

दिल ने की फिर दिल से बात
भूल गये हम अपना पराया

होश कहाँ जो दहर[2] को देखें
हमने खुद को भी है भुलाया

उम्र हुई है यूँही जीते
हिज्र[3] में तेरे, दिल बहलाया

उन का क्या अहसान बतायें
उनको पा कर खुद को पाया

क्या क्या हम एहसास बतायें
शाम हुई और जी घबराया

1. रूख़– चेहरा, 2. दहर– दुनिया, 3. हिज्र– जुदाई

زندگی میں خوشی کا باب آئے
میرے خط کا کوئی جواب آئے

آج کس سے ہم اپنی بات کہیں
وہ ہمیں یاد بے حساب آئے

وصل کا کچھ سکون حاصل ہو
لمحہ بن کر کوئی گلاب آئے

زندگی اب ہے جیسے شام ڈھلے
کون چاہے ہے اب شباب آئے

میں تو تیرا ہوں مجھ سے پردہ کیا
میرے گھر میں تو بے حجاب آئے

وقت کہتا ہے ہم سے شاد رہو
وقت اچھا کہ اب خراب آئے

ज़िन्दगी में ख़ुशी का बाब[1] आए
मेरे ख़त का कोई जवाब आए

आज किससे हम अपनी बात कहें
वह हमें याद बे हिसाब आए

वस्ल[2] का कुछ सुकून[3] हासिल हो
लम्हा बन कर कोई गुलाब आए

ज़िन्दगी अब है जैसे शाम ढले
कौन चाहे है अब शबाब आए

मैं तो तेरा हूँ मुझ से परदा क्या
मेरे घर में तू बेहिजाब[4] आए

वक़्त कहता है हम से शाद[5] रहो
वक़्त अच्छा कि अब ख़राब आए

1. बाब– अध्याय, 2. वस्ल– मिलन, 3. सुकून– शांति, 4. बेहिजाब– बेपरदा, 5. शाद– ख़ुश

सब्द बर्ग

یا بھلا کہیئے یا برا کہیئے
جو کہے قلب آپ کا کہیئے
دل سنے گا ضرور دل کی صدا
گر گلہ ہے تو پھر گلہ کہیئے
جانے کیا راز ہے نظروں میں نہاں
دل میں جو کچھ بھی ہے چھپا کہیئے
میں تو اس کی رضا پہ ہوں راضی
آپ اس کو مری ادا کہیئے
آرزو کے گلاب سوکھ گئے
یہ تھا تقدیر میں لکھا کہیئے

या भला कहिए या बुरा कहिए
जो कहे क़ल्ब[1] आपका, कहिए

दिल सुनेगा जरूर दिल की सदा
गर गिला है तो फिर गिला कहिए

जाने क्या राज़ है नज़रों में निहाँ
दिल में जो कुछ भी है छुपा कहिए

मैं तो उसकी रज़ा[2] पे हूँ राज़ी
आप इस को मेरी अदा कहिए

आरजू[3] के गुलाब सूख गए
यह था तक़दीर में लिखा कहिए

1.क़ल्ब–दिल 2.रज़ा–मर्ज़ी 3. आरजू– इच्छा

الجھتے ہی رہیں دامن کہ ہو ہر رہ گذر تیری
قدم رکھیں جدھر بھی ہم وہی ٹھہرے ڈگر تیری

مہکتے گلستاں جھومیں ہمیشہ تیرے دامن میں
پتہ چل جائے خوشبو سے جو ہو راہِ سفر تیری

نہ جانے کون سا رشتہ ہے مجھ کو اس قدر باندھے
مہکتا ہے چمن میرا جو ہوتی ہے سحر تیری

ہیں جتنے راز تیرے وہ تو میرے دل پہ ظاہر ہیں
چھپائے لاکھ دل تیرا بتاتی ہے نظر تیری

گلہ کیا ہو مقدّر سے جو ہم پہنچے نہ منزل تک
کہاں سے لائیں ہم انداز تیرا اور ڈگر تیری

उलझते ही रहें दामन कि हो हर रहगुज़र तेरी
क़दम रक्खें जिधर भी हम वहीं ठहरे डगर तेरी

महकते गुलसिताँ झूमें हमेशा तेरे दामन में
पता चल जाए ख़ुशबू से जो हो राहे-सफ़र तेरी

न जाने कौन सा रिश्ता है मुझको इस क़दर बाँधे
महकता है चमन मेरा जो होती है सहर[1] तेरी

हैं जितने राज़ तेरे वह तो मेरे दिल पे ज़ाहिर हैं
छुपाए लाख दिल तेरा बताती है नज़र तेरी

गिला क्या हो मुक़द्दर[2] से जो हम पहुँचे न मंज़िल तक
कहाँ से लायें हम अन्दाज़ तेरा और डगर तेरी

1. सहर– सुबह, 2. मुक़द्दर– भाग्य

اے محبت یہ حادثہ کیوں ہے

ملا وہ دل جدا جدا کیوں ہے

مجھ کو اکثر یہ سوچ رہتی ہے

زندگی اپنی بے وفا کیوں ہے

مل رہے ہیں افق پہ عرش و زمیں

ایک منزل ہے پر جدا کیوں ہے

میرے مالک مجھے یہ بتلا دے

زندگی کے لئے قضا کیوں ہے

ہوں بھلے کتنے ہی نشاط کے دن

غمِ دل کی مگر صدا کیوں ہے

دل تو جذبات کا نشیمن ہے

دل میں پھر سنگ کی ادا کیوں ہے

ऐ मुहब्बत यह हादसा क्यों है
मिला वह दिल जुदा जुदा क्यों है

मुझको अक्सर यह सोच रहती है
ज़िन्दगी अपनी बेवफ़ा क्यों है

मिल रहे हैं उफ़क़[1] पे अर्शो-ज़मीं[2]
एक मंज़िल है पर जुदा क्यों है

मेरे मालिक मुझे यह बतला दे
ज़िन्दगी के लिए क़ज़ा[3] क्यों है

हों भले कितने ही निशात[4] के दिन
ग़म दिल की मगर सदा क्यों है

दिल तो जज़्बात का नशेमन[5] है
दिल में फिर संग[6] की अदा क्यों है

1. उफ़क़– क्षितिज, 2. अर्शो-ज़मीं– आसमान और ज़मीन, 3. क़ज़ा– मौत, 4. निशात– खुशी, 5. नशेमन– घोंसला, 6. संग– पत्थर

ان کے وعدوں پہ اعتبار نہیں
کیسے کہہ دوں کہ انتظار نہیں

مدتیں گزریں گفتگو نہ ہوئی
کیسے مانوں کہ ان کو پیار نہیں

آج کی شام وہ جدا بھی نہیں
پھر بھی دل کو مرے قرار نہیں

ان کو ہم بھول ہی نہیں پاتے
کیا کریں دل پہ اختیار نہیں

ہے زباں پر تو اعتماد مجھے
ہاں، مقدّر پہ اعتبار نہیں

وہ نہ آئے تو انجمن کیسی
کیا وہ گلشن جو پر بہار نہیں

उन के वादों पे ऐतबार नहीं
कैसे कह दूँ कि इन्तेज़ार नहीं

मुद्दतें गुज़रीं गुफ़्तगू[1] न हुई
कैसे मानूँ कि उन को प्यार नहीं

आज की शाम वह जुदा भी नहीं
फिर भी दिल को मेरे क़रार नहीं

उनको हम भूल ही नहीं पाते
क्या करें दिल पे अख़्तियार[2] नहीं

है जुबाँ पर तो एतमाद[3] मुझे
हाँ, मुक़द्दर[4] पे ऐतबार नहीं

वह न आए तो अंजुमन[5] कैसी
क्या वह गुलशन जो पुरबहार नहीं

1. गुफ्तगू– बात चीत, 2. अख़्तियार– क़ाबू, 3. एतमाद– भरोसा, 4. मुक़द्दर– तक़दीर, 5. अंजुमन– महफ़िल

ہزاروں ہی شبیں گزری نظر وہ رات آتی ہے
رہی جو دل کی ہی دل میں وہ لب پر بات آتی ہے

میں بہلا تو لیا کرتا ہوں دل کو ان کی یادوں سے
جو ان کے روبرو ہو پر کہاں وہ بات آتی ہے

ہے باندھا دل کو خود ہم نے ہی ایسے جال کے بس میں
جو پہلے تھی اڑانوں میں کہاں وہ بات آتی ہے

کہاں وہ زینتِ محفل کہاں میں درد کا مارا
مجھے تو یاد ہردم گردشِ حالات آتی ہے

رہا دشمن دہر اپنا، رہے محتاط ہم لیکن
رہا ہے خوف پھر بھی اب کہ بس اب مات آتی ہے

بتاؤں کیا کسی کو میں کہ جو دل پر گزرتی ہے
کہ جب نظر عنایت کی اِدھر سوغات آتی ہے

چھلک جائے نہ میرے صبر کا پیمانہ اے یارو
نہاں کب تک رہے دل میں زباں پر بات آتی ہے

हज़ारों ही शबें[1] गुज़रीं नज़र वह रात आती है
रही जो दिल की ही दिल में वह लब पर बात आती है

मैं बहला तो लिया करता हूँ दिलको उनकी यादों से
जो उनके रूबरू[2] हो पर कहाँ वह बात आती है

है बाँधा दिल को ख़ुद हमने ही ऐसे जाल के बस में
जो पहले थी उड़ानों में कहाँ वह बात आती है

कहाँ वह ज़ीनते-महफ़िल[3] कहाँ मैं दर्द का मारा
मुझे तो याद हरदम गर्दिशे-हालात[4] आती है

रहा दुश्मन दहर[5] अपना, रहे मुहतात[6] हम लेकिन
रहा है ख़ौफ़ फिर भी अब कि बस अब मात आती है

बताऊँ क्या किसी को मैं कि जो दिल पर गुज़रती है
कि जब नज़रे-इनायत[7] की इधर सौग़ात[8] आती है

छलक जाए न मेरे सब्र का पैमाना ऐ यारो
निहाँ[9] कब तक रहे दिल में ज़ुबाँ पर बात आती है

---

1. शबें– रातें, 2. रूबरू– सामने, 3. ज़ीनते-महफ़िल– महफ़िल की सजावट, 4. गर्दिशे-हालात– वक़्त की परेशानियाँ, 5. दहर– दुनिया, 6. मुहतात– संकुचित, 7. नज़रे-इनायत –कृपा दृष्टि, 8. सौग़ात– भेंट, 9. निहाँ– छुपा

میری دنیا میں وہ صد رشکِ سحر آہی گیا
دل کے گلشن پہ بہاروں کا اثر آہی گیا

رات کی تاریکیوں میں منتظر تھے کب سے ہم
لے کے عارض پر وہ صبحوں کی خبر آہی گیا

لوٹ آئے پھر مرے گزرے ہوئے دن ایک بار
دیدِ اوّل کا نظارہ پھر نظر آہی گیا

مدتوں سے تھے خزاں کے رنگ میں ڈوبے ہوئے
کم سے کم یہ تو ہوا دورِ ثمر آہی گیا

بہہ رہے تھے زندگی کے بحر میں بے ذوق ہم
تشنگی کا شکریہ ذوقِ سفر آہی گیا

मेरी दुनिया में वह सद रश्के-सहर[1] आ ही गया
दिल के गुलशन पे बहारों का असर आ ही गया

रात की तारीकियों[2] में मुन्तज़िर[3] थे कब से हम
लेके आरिज़[4] पर वह सुबहों की ख़बर आ ही गया

लौट आए फिर मेरे गुज़रे हुए दिन एक बार
दीदे-अव्वल[5] का नज़ारा फिर नज़र आ ही गया

मुद्दतों[6] से थे ख़िजाँ[7] के रंग में डूबे हुए
कम से कम यह तो हुआ दौरे-समर[8] आ ही गया

बह रहे थे ज़िन्दगी के बहर[9] में बेज़ौक़[10] हम
तश्नगी[11] का शुक्रिया ज़ौक़े-सफ़र आ ही गया

1. सद रश्के-सहर– सैकड़ों की इच्छित सुबह, 2. तारीकियों– अंधेरों, 3. मुन्तज़िर– प्रतीक्षा में, 4. आरिज़– गाल, 5. दीदे-अव्वल– प्रथम दर्शन 6. मुद्दतों– बहुत समय, 7. ख़िज़ाँ– पतझड़, 8. दौरे-समर– नतीजे का समय 9. बहर– दरिया, 10. बेज़ौक़– बिना शौक़ के, 11. तश्नगी– प्यास

اپنا غم بارہا کہا تو ہے
گونجتی ہی رہی صدا تو ہے

کہہ رہی ہے یہ دل کی بے چینی
کوئی نزدیک تر رہا تو ہے

اہلِ محفل بھی کہہ رہے ہیں یہی
نام اس نے مرا لیا تو ہے

وہ کہاں غیر اب وہ اپنا ہے
ساتھ میں دو قدم چلا تو ہے

میرا اپنا نہیں ہے وہ نہ سہی
اس نے ہمدم مجھے کہا تو ہے

چند روزہ یہ زندگانی سہی
فیض اک دن مجھے ملا تو ہے

عمر گزری میں انتظار میں ہوں
ہجر بھی ایک واسطہ تو ہے

میں نے دہلیز دیکھ لی تیری
تیرے ملنے کا آسرا تو ہے
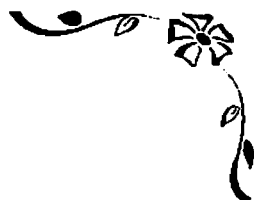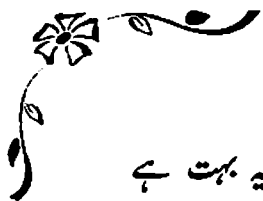
अपना ग़म बारहा[1] कहा तो है
गूँजती ही रही सदा[2] तो है

कह रही है यह दिल की बेचैनी
कोई नज़दीकतर रहा तो है

अहले-महफ़िल[3] भी कह रहे हैं यही
नाम उसने मेरा लिया तो है

वह कहाँ ग़ैर अब वह अपना है
साथ में दो क़दम चला तो है

मेरा अपना नहीं है वह न सही
उसने हमदम मुझे कहा तो है

चन्दरोज़ा[4] यह ज़िन्दगानी सही
फ़ैज़[5] एक दिन मुझे मिला तो है

उम्र गुज़री मैं इन्तिज़ार में हूँ
हिज्र[6] भी एक वास्ता तो है

मैने दहलीज़ देख ली तेरी
तेरे मिलने का आसरा तो है

1. बारहा– बार बार, 2. सदा– आवाज़, 3. अहले-महफ़िल– महफ़िल के लोग, 4. चन्दरोज़ा– कुछ दिनों की, 5. फ़ैज–लाभ, 6. हिज्र– जुदाई,

اس طرح سے آپ آئے بہت ہے یہ بہت ہے
ہم آپ کے کہلائے بہت ہے یہ بہت ہے

اے جانِ جہاں جانِ وفا یہ بھی کرم ہے
خوابوں میں مرے آئے بہت ہے یہ بہت ہے

اشکوں سے مری پلکیں تھیں بوجھل میں دکھی تھا
تم ایسے میں پاس آئے بہت ہے یہ بہت ہے

دیدار کی شمعیں جلیں آنکھیں ہوئیں روشن
ہم دیکھ تمہیں پائے بہت ہے یہ بہت ہے

इस तरह से आप आए बहुत है यह बहुत है
हम आपके कहलाए बहुत है यह बहुत है

ऐ जाने-जहाँ जाने-वफ़ा यह भी करम[1] है
ख़्वाबों में मेरे आए बहुत है यह बहुत है

अश्कों से मेरी पलकें थीं बोझल मैं दुखी था
तुम ऐसे में पास आए बहुत है यह बहुत है

दीदार[2] की शमाएँ जलीं आँखें हुईं रौशन
हम देख तुम्हें पाए बहुत है यह बहुत है

1. करम– कृपा, 2. दीदार– दर्शन,

کیا ہوئی ہم سے خطا اے زندگی
تو ہے کیوں ہم سے خفا اے زندگی

ہم بھی ہر پل بحرِ الفت میں بہے
اس طرح نزدیک آ اے زندگی

فاصلے جو وقت کے ہیں وہ رہیں
دِل نہ ہو دِل سے جدا اے زندگی

باعثِ تسکینِ دل ہے آج بھی
ذِکر لیل وصل کا اے زندگی

قیس کی طرح سے میں بھی عشق میں
عمر بھر رُسوا ہوا اے زندگی

دیکھنا اک دن رہِ وحدت میں ہم
ہو ہی جائیں گے فنا اے زندگی

क्या हुई हमसे ख़ता[1] ऐ ज़िन्दगी
तू है क्यूँ हम से ख़फ़ा ऐ ज़िन्दगी

हम भी हर पल बहरे-उल्फ़त[2] में बहे
इस तरह नज़दीक आ ऐ ज़िन्दगी

फ़ासले जो वक़्त के हैं वह रहें
दिल न हो दिल से जुदा ऐ ज़िन्दगी

बाइसे-तसकीने-दिल[3] है आज भी
ज़िक्र लैले-वस्ल[4] का ऐ ज़िन्दगी

क़ैस[5] की तरह से मैं भी इश्क़ में
उम्र भर रूसवा[6] हुआ ऐ ज़िन्दगी

देखना एक दिन रहे-वहदत[7] में हम
हो ही जाएंगे फ़ना[8] ऐ ज़िन्दगी

1. ख़ता– ग़लती, 2. बहरे-उल्फ़त– प्यार का दरिया, 3. तसकीने-दिल– दिल की शान्ति, 4. लैले-वस्ल– मिलन की रात, 5. क़ैस– मजनूँ का असली नाम, 6. रूसवा– बदनाम, 7. रहे-वहदत– एकाकार होने की राह, 8. फ़ना–नष्ट

تیری محفل میں چلے آئیں اجازت ہو اگر
ہم بھی تو جانیں جو شکوہ جو شکایت ہو اگر

اپنی نظروں میں میں عاصی و گنہگار سہی
ہو نہ کیوں پھر تری رحمت جو ندامت ہو اگر

جذبۂ عشق تو چھن جاتا ہے دیواروں سے
در و دیوار ہیں کیا دل میں محبت ہو اگر

کوئی شکوہ نہ کیا تجھ سے مرے دل نے کبھی
ہم کرم چاہیں تجھے ہم سے عداوت ہو اگر

دور ہوتے ہیں محبت سے اندھیرے شب کے
ہے محبت ہی اجالا شبِ ظلمت ہو اگر

ہم اگر دور ہوں اک بار تو کچھ دور نہیں
اے صنم تیری صداقت میں محبت ہو اگر

तेरी महफ़िल में चले आएँ इजाज़त हो अगर
हम भी तो जानें जो शिकवा जो शिकायत हो अगर

अपनी नज़रों में मैं आसी[1] व गुनहगार सही
हो न क्यों फिर तेरी रहमत[2] जो निदामत[3] हो अगर

जज़्बा-ए-इश्क़[4] तो छन जाता है दीवारों से
दरो-दीवार[5] हैं क्या दिल में मुहब्बत हो अगर

कोई शिकवा न किया तुझ से मेरे दिल ने कभी
हम करम[6] चाहें तुझे हम से अदावत[7] हो अगर

दूर होते हैं मुहब्बत से अंधेरे शब[8] के
है मुहब्बत ही उजाला शबे-ज़ुल्मत[9] हो अगर

हम अगर दूर हों एक बार तो कुछ दूर नहीं
ऐ सनम तेरी सदाक़त[10] में मुहब्बत हो अगर

1. आसी– ख़तावार, 2. रहमत– दया, 3. निदामत– शर्मिन्दगी, 4. जज़्बा-ए-इश्क़– प्रेमभाव, 5. दरो-दीवार– दरवाज़े और दीवारें, 6. करम– कृपा, 7. अदावत– दुश्मनी, 8. शब– रात, 9. शबे-ज़ुल्मत– दुख की रात, 10. सदाक़त– सच्चाई,

ہم نہ اپنوں کی محبت نہ رفاقت سمجھے
اور نہ اغیار کا اندازِ عداوت سمجھے

اپنے اغراض پہ رہتی ہے سبھی کی نظریں
کون دنیا میں بھلا کس کی ضرورت سمجھے

چاہنا میرا انہیں اور انہی پر مٹنا
اس کو ناصح مری عادت مری فطرت سمجھے

ان کا ہر بات پہ ناراض و خفا ہو جانا
آج تک ہم نہ یہ اندازِ شکایت سمجھے

دل نے کیا دل سے کہا کیا ہے نگاہوں کی زباں
کٹ گئی عمر نہ جذبوں کی نزاکت سمجھے

وہ کوئی دل ہے جو سمجھے نہ کسی کا غمِ دل
عشق سمجھے نہ محبّت نہ ہی الفت سمجھے

یوں تو شاعر ہیں بہت کتنے ہی ایسے شاعر
شاعری کو جو میری طرح عبادت سمجھے

हम न अपनों की मुहब्बत न रिफ़ाक़त[1] समझे
और न अग़यार[2] का अन्दाज़े-अदावत[3] समझे

अपने अग़राज़[4] पे रहती हैं सभी की नज़रें
कौन दुनिया में भला किस की ज़रूरत समझे

चाहना मेरा उन्हें और उन्हीं पर मिटना
उसको नासेह[5] मेरी आदत मेरी फ़ितरत[6] समझे

उनका हर बात पे नाराज़ो-ख़फ़ा हो जाना
आज तक हम न ये अन्दाज़े-शिकायत समझे

दिल ने क्या दिल से कहा क्या है निगाहों की ज़ुबाँ
कट गई उम्र न जज़्बों[7] की नज़ाक़त समझे

वह कोई दिल है जो समझे न किसी का ग़मे-दिल
इश्क़ समझे न मुहब्बत न ही उल्फ़त समझे

यूँ तो शायर हैं बहुत कितने ही ऐसे शायर
शायरी को जो मेरी तरहा इबादत[8] समझे

---

1. रिफ़ाक़त– दोस्ती, 2. अग़यार– ग़ैर, 3. अदावत– दुश्मनी, 4. अग़राज़– मतलब, 5. नासेह– नसीहत करने वाला, 6. फ़ितरत– स्वभाव, 7. जज़्बों– भावनाओं, 8. इबादत– पूजा

میرے چمن میں آئی نہ بادِ بہار پھر
بادِ بہار کا ہے مجھے انتظار پھر

دیکھا تھا ایک بار مجھے اس نے پیار سے
آیا نہ میرے دردِ جگر کو قرار پھر

پھر ایک بار چھا گئیں دل پر اداسیاں
مجھ کو طلب نے ان کی کیا بے قرار پھر

ہم پھر خموشیوں سے رہے محو گفتگو
خاموش یوں ہوا لبِ اظہارِ یار پھر

اس نے تو مجھ سے آنے کا وعدہ نہیں کیا
لیکن مجھے ہے اس کا بہت انتظار پھر

मेरे चमन में आई न बादे-बहार[1] फिर
बादे-बहार का है मुझे इन्तिज़ार फिर

देखा था एक बार मुझे उसने प्यार से
आया न मेरे दर्दे-जिगर[2] को क़रार[3] फिर

फिर एक बार छा गईं दिल पर उदासियाँ
मुझ को तलब[4] ने उनकी किया बेक़रार फिर

हम फिर ख़मोशियों से रहे महवे-गुफ़्तगू[5]
ख़ामोश यूँ हुआ लबे-इज़हारे-यार[6] फिर

उसने तो मुझ से आने का वादा नहीं किया
लेकिन मुझे है उसका बहुत इन्तिज़ार फिर

1. बादे-बहार– बहार की हवा, 2. दर्दे-जिगर– दिल का दर्द, 3. क़रार– चैन, 4. तलब– चाह, 5. महवे-गुफ़्तगू– बात में व्यस्त, 6. लबे-इज़हारे-यार– यार से इज़हार करने वाले ओंठ

کیا ملا مجھ کو ترے در سے محبت کے سوا
اب جہاں میرا نہیں کچھ بھی تو الفت کے سوا

دل تو ہے سرمست مرا مجھ کو نہیں کچھ بھی خبر
کوئی نشہ بھی نہیں اب نشۂ وحدت کے سوا

زندگانی جا رہی ہے میری تاریکی میں اب
ہم سفر کوئی نہیں ہے مرا ظلمت کے سوا

مالکِ کل تری دنیا میں ہے کیا تیرے سوا
تجھ سے کیا مانگیں بھلا ہم تری رحمت کے سوا

نعمتیں دونوں جہاں میں ہیں تو ہزاروں لیکن
کوئی نعمت نہیں افضل تری الفت کے سوا

क्या मिला मुझको तेरे दर से मुहब्बत के सिवा
अब जहाँ मेरा नहीं कुछ भी तो उल्फ़त के सिवा

दिल तो है सरमस्त[1] मेरा मुझको नहीं कुछ भी ख़बर
कोई नशा भी नहीं अब नश्शा-ए-वहदत[2] के सिवा

ज़िन्दगानी जा रही है मेरी तारीकी[3] में अब
हमसफ़र कोई नहीं है मेरा ज़ुल्मत[4] के सिवा

मालिके-कुल[5] तेरी दुनिया में है क्या तेरे सिवा
तुझसे क्या माँगें भला हम तेरी रहमत[6] के सिवा

नेमतें[7] दोनो जहाँ में हैं तो हज़ारों लेकिन
कोई नेमत नहीं अफ़ज़ल[8] तेरी उल्फ़त के सिवा

1. सरमस्त– मदहोश, 2. वहदत– एकाकार, 3. तारीकी– अंधेरा, 4. ज़ुल्मत– अंधेरा, 5. मालिके-कुल– सारी दुनिया का मालिक, भगवान, 6. रहमत– कृपा, 7. नेमतें– दौलतें, 8. अफ़ज़ल– बड़ा

सद बर्ग

اک نگاہِ ناز تیری جانے کیا کچھ کہہ گئی
زندگی جذبات کی رو میں ہماری بہہ گئی

اب یہ اہلِ انجمن پر ہے کہ سمجھیں یا نہیں
میری خاموشی کو ان سے جو تھا کہنا کہہ گئی

نقش بن کر بھی نہ ہم رہ پائے راہِ شوق میں
زندگی بھی کیا عجب ہم سے کہانی کہہ گئی

کہہ نہ پائے کچھ بھی ہم پہنچے جب ان کے سامنے
داستانِ شوق اپنی پھر ادھوری رہ گئی

بہہ گئی آنکھوں سے میری آنسوؤں کی جو قطار
یہ حقیقت ہے غموں کی داستانیں کہہ گئی

آئے بھی وہ اور بیٹھے پھر چلے بھی وہ گئے
میرے دل کی آرزو دل میں ہی میرے رہ گئی

इक निगाहे-नाज़ तेरी जाने क्या कुछ कह गई
ज़िन्दगी जज़्बात[1] की रव में हमारी बह गई

अब यह अहले-अंजुमन[2] पर है कि समझे या नहीं
मेरी ख़ामोशी को उनसे जो था कहना कह गई

नक़्श बन कर भी न हम रह पाए राहे-शौक़ में
ज़िन्दगी भी क्या अजब हम से कहानी कह गई

कह न पाए कुछ भी हम पहुँचे जब उनके सामने
दास्ताने-शौक़ अपनी फिर अधूरी रह गई

बह गई आँखों से मेरी आँसुओं की जो क़तार
यह हक़ीक़त है ग़मों की दास्तानें कह गई

आये भी वह और बैठे फिर चले भी वह गए
मेरे दिल की आरज़ू[3] दिल में ही मेरे रह गई

1. जज़्बात– भावनायें, 2. अहले-अंजुमन– महफ़िल के लोग, 2. आरज़ू– इच्छा

اس طرح سے وہ بچھڑے ہیں میری حیات سے
جیسے ہو کائنات جدا کائنات سے

یارو بہت ہوا جو میں ان تک پہنچ گیا
وہ تو بہت بلند ہے میری بساط سے

قیدِ حیات میں یوں ہی کب تک بندھا رہوں
کب دیکھئے نجات ملے اس حیات سے

بے درد ہو جہان تو میری ہے کیا خطا
میں تو نجات چاہتا ہوں قیدِ ذات سے

آخر کوئی تو مجھ سے کہے کچھ گلہ کرے
تکلیف کس کو پہونچی بھلا میری ذات سے

इस तरह से वह बिछड़े हैं मेरी हयात[1] से
जैसे हो कायनात[2] जुदा कायनात से

यारो बहुत हुआ जो मैं उन तक पहुँच गया
वह तो बहुत बुलन्द हैं मेरी बिसात से

क़ैदे-हयात में यूँ ही कब तक बंधा रहूँ
कब देखिए निजात[3] मिले इस हयात से

बेदर्द हो जहान तो मेरी है क्या ख़ता[4]
मैं तो निजात चाहता हूँ क़ैदे-ज़ात[5] से

आख़िर कोई तो मुझ से कहे कुछ गिला करे
तकलीफ किसको पहुँची भला मेरी ज़ात[6] से

1. हयात– ज़िन्दगी, 2. कायनात–ब्रह्माण्ड, 3. निजात– छुटकारा, 4. ख़ता– ग़लती, 5. क़ैदे-ज़ात– अपने आप से, 6. ज़ात–हस्ती,

ملا جو لطفِ سخن تیری آرزو میں مجھے
زباں نے اپنی ہی الجھایا آپ تو میں مجھے

وہ آئے جیسے چلی آئے اپنی ہی منزل
خبر نہ اپنے ہی در کی تھی جستجو میں مجھے

نظر کا اٹھنا و جھکنا یہ کہہ گیا مجھ سے
زباں کا لطف ملا دل کی گفتگو میں مجھے

کہوں تو کم ہے جو لکھوں تو وہ بھی ہے کم
ملا مزا جو بہاروں کے رنگ و بو میں مجھے

ادھر وہ دل ہے کہ ہر پل نوازتا ہے مجھے
ادھر یہ دل ہے کہ رکھّے ہے آرزو میں مجھے

मिला जो लुत्फ़े-सुख़न[1] तेरी आरज़ू[2] में मुझे
ज़ुबाँ ने अपनी ही उलझाया आप तू में मुझे

वह आए जैसे चली आए अपनी ही मंज़िल
ख़बर न अपने ही दर की थी जुस्तजू[3] में मुझे

नज़र का उठना व झुकना यह कह गया मुझसे
ज़ुबाँ का लुत्फ़ मिला दिल की गुफ़्तगू[4] में मुझे

कहूँ तो कम है जो लिखूँ तो वह भी है कम
मिला मज़ा जो बहारों के रंगो-बू में मुझे

उधर वह दिल है कि हर पल नवाज़ता[5] है मुझे
इधर यह दिल है कि रखे है आरज़ू में मुझे

1. लुत्फ़े-सुख़न– बात करने का मज़ा, 2. आरज़ू– इच्छा, 3. जुस्तजू– तलाश, 4. गुफ़्तगू– बातचीत, 5. नवाज़ता– कृपा करता

مہر تو ہوگی ایک بار سہی
دل کو اتنا ہی اعتبار سہی

ہم ہیں جس کے لئے بہت بیتاب
اب تو کہہ دو وہ ایک بار سہی

آپ کچھ تابِ ضبط بھی رکھئے
دل میں ہونے کو گو شرار سہی

اب تو چلنے کو ہیں قدم بیتاب
لاکھ دشوار راہ گزار سہی

اب تو ہم نے زبان دے ڈالی
ہو جو اس میں ہماری ہار سہی

زندگی بھر رہے گی اب تو طلب
اس تمنا میں غم ہزار سہی

मेहर[1] तो होगी एक बार सही
दिल को इतना ही एतबार[2] सही

हम हैं जिसके लिए बहुत बेताब
अब तो कह दो वह एक बार सही

आप कुछ ताबे-ज़ब्त[3] भी रखिए
दिल में होने को गो[4] शरार[5] सही

अब तो चलने को हैं क़दम बेताब
लाख दुश्वार[6] राह गुज़ार सही

अब तो हमने ज़बान दे डाली
हो जो इस में हमारी हार सही

ज़िन्दगी भर रहेगी अब तो तलब[7]
इस तमन्ना में ग़म हज़ार सही।

1. मेहर– कृपा, 2. एतबार– भरोसा, 3. ताबे-ज़ब्त– संयम, 4. गो– चाहे, 5. शरार– चिन्गारी, 6. दुश्वार– कठिन, 7. तलब –चाह,

ہے قصور آخر اس میں کیا اپنا
ہو گیا کیوں صنم جدا اپنا

ہم نے چاہا تو تھا فقط جینا
ناخدا تو نہیں خدا اپنا

ہوگیا بس وہی جو ہونا تھا
کون چاہے ہے یوں برا اپنا

ان کی خاطر تو بس ہوئے رسوا
کیا کہیں کیا ہے ماجرا اپنا

کچھ تو ہم سے برا ہوا ہوگا
کیا ہے شکوہ تو کیا گلہ اپنا

لا دوا سا ہے اب تو یہ عالم
چارہ گر اب کہاں بھلا اپنا

है कुसूर आख़िर इसमें क्या अपना
हो गया क्यों सनम जुदा अपना

हमने चाहा तो था फ़क़त[1] जीना
नाख़ुदा[2] तो नहीं ख़ुदा अपना

हो गया बस वही जो होना था
कौन चाहे है यूँ बुरा अपना

उनकी ख़ातिर तो बस हुए रूसवा[3]
क्या कहें क्या है माजरा[4] अपना

कुछ तो हम से बुरा हुआ होगा
क्या है शिकवा[5] तो क्या गिला[6] अपना

लादवा[7] सा है अब तो यह आलम
चारागर[8] अब कहाँ भला अपना

1. फ़क़त– सिर्फ़, 2. नाख़ुदा– माँझी, 3. रुसवा– बदनाम, 4. माजरा– मामला, 5. शिकवा–शिकायत, 6. गिला– शिकायत, 7. लादवा– जो दवा से ठीक न हो, 8. चारागर– मददगार

شام ڈھلتے ہی کوئے بتاں آ گیا
بے سبب ہی نہ جانے کہاں آ گیا

رہگذر بھی یہی اور ہے منزل یہی
دل ہے شاداں ترا آستاں آ گیا

یہ بھی تقدیر کا ہے کرم دوستو
دو قدم ہی چلے گلستاں آ گیا

ساقیا تیری نظروں کا اٹھنا ہے یوں
جیسے جامِ مَے ارغواں آ گیا

قیدِ غم سے ملی زندگی کو نجات
ہو کے وہ دفعتاً مہرباں آ گیا

پھر میں سرمست ہوں پھر میں دلشاد ہوں
پھر مجھے یادِ شہرِ بتاں آ گیا

शाम ढलते ही कूए-बुताँ[1] आ गया
बेसबब ही न जाने कहाँ आ गया

रह गुज़र भी यही और है मंज़िल यही
दिल है शादाँ[2] तेरा आस्ताँ[3] आ गया

यह भी तक़दीर का है करम दोस्तो
दो क़दम ही चले गुलसिताँ[4] आ गया

साक़िया तेरी नज़रों का उठना है यूँ
जैसे जामे-मय[5] अरग़वाँ[6] आ गया

क़ैदे-ग़म से मिली ज़िन्दगी को निजात[7]
हो के वह दफ़अतन[8] मेहरबाँ आ गया

फिर मैं सरमस्त[9] हूँ फिर मैं दिलशाद[10] हूँ
फिर मुझे याद शहरे-बुताँ[11] आ गया

---

1. कूए-बुताँ– जानम की गली, 2. शादाँ– ख़ुश, 3. आस्ताँ– मज़ार, 4. गुलसिताँ– बाग़, 5. जामे-मय– शराब का जाम, 6. अरग़वाँ– सुर्ख़ नारंगी रंग, 7. निजात– छुटकारा, 8. दफ़अतन– अचानक, 9. सरमस्त–मदहोश, 10 दिलशाद– ख़ुश, 11. शहरे-बुताँ– जानम का शहर

سوزِ فرقت ہی سہارا اب مرا
بیچ دریا ہی کنارا اب مرا
وہ جو بیٹھے ہیں تعلق توڑ کر
چھوٹا جینے کا سہارا اب مرا
ٹوٹ سب بندھن گئے باندھے تھے جو
ہے کہاں دامن سہارا اب مرا
آنکھ نے سپنا سجایا تھا کبھی
چھن گیا دلکش نظارہ اب مرا
سیرِ ساحل تھی کبھی وجہِ سکوں
نذرِ طوفاں ہے کنارہ اب مرا

सोज़े-फुर्क़त[1] ही सहारा अब मेरा
बीच दरिया ही किनारा अब मेरा

बह जो बैठे हैं तअल्लुक़[2] तोड़कर
छूटा जीने का सहारा अब मेरा

टूट सब बंधन गए बांधे थे जो
है कहाँ दामन सहारा अब मेरा

आँख ने सपना सजाया था कभी
छिन गया दिलकश[3] नज़ारा अब मेरा

सैरे-साहिल[4] थी कभी वजहे-सुकूँ[5]
नज़रे-तूफ़ाँ[6] है किनारा अब मेरा।

1. सोज़े-फुर्क़त– जुदाई का दर्द, 2. तअल्लुक़– सम्बंध, 3. दिलकश– सुन्दर, 4. सैरे-साहिल– किनारे पर सैर, 5. वजहे-सुकूँ– चैन का कारण, 6. नज़रे-तूफ़ाँ– तूफ़ान की नज़र

جانے کیوں یاد وہ دلدار سرِ نو آیا
وہ تصور میں کئی بار سرِ نو آیا

دلِ بیتاب بیاں جس کو کبھی کر نہ سکا
آج دل میں وہی انکار سرِ نو آیا

وہ کہ جو دل سے اٹھی آہ تھی ہے یاد مجھے
پھر خیالوں میں وہ انکار سرِ نو آیا

کیا کہوں کیا تھا وہ احساسِ محبت یارو
وہ ملا کل تو مجھے پیار سرِ نو آیا

تھا قیاسوں سے پرے اس کی نگاہوں کا نشہ
اس نے دیکھا تو مجھے پیار سرِ نو آیا

بڑی بے باکی سے بیتابی سے وہ مجھ سے ملا
کل مرے پاس غمِ یار سرِ نو آیا
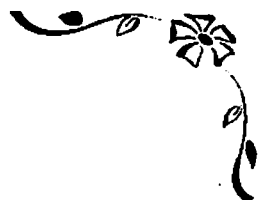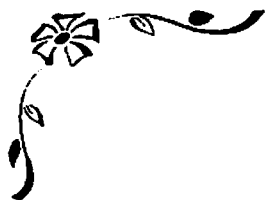
जाने क्यों याद वह दिलदार सरे-नौ[1] आया
वह तसव्वुर[2] में कई बार सरे-नौ आया

दिले-बेताब बयाँ जिसको कभी कर न सका
आज दिल में वही इनकार सरे नौ आया

वह कि जो दिल से उठी आह थी है याद मुझे
फिर ख़यालों में वह इनकार सरे-नौ आया

क्या कहूँ क्या था वह अहसासे-मुहब्बत यारो
वह मिला कल तो मुझे प्यार सरे-नौ आया

था क़यासों[3] से परे उसकी निगाहों का नशा
उसने देखा तो मुझे प्यार सरे-नौ आया

बड़ी बेबाक़ी[4] से बेताबी से वह मुझसे मिला
कल मेरे पास ग़मे-यार सरे-नौ आया

1. सरे-नौ– नये सिरे से, 2. तसव्वुर–ख़्याल, 3. क़यासों– उम्मीदों, 4. बेबाक़ी– तपाक से

وہ غمِ دنیا ہوا یا وہ غمِ فرقت ہوا
جو بھی ٹھہرا قلب میں میرے وہی رخصت ہوا

ان کی قربت میں دلِ پرشوق کا کیا پوچھنا
وقت یوں گذرا کہ لمحہ لمحۂ حیرت ہوا

صورتِ انکار میں اقرار کا انداز تھا
دولتِ اقرار لے کر اس سے میں رخصت ہوا

پورا ہو عہدِ وفا ہم منتظر ہی بس رہے
انتظار اپنا بھی گویا ساعتِ حیرت ہوا

वह ग़मे-दुनिया हुआ या वह ग़मे-फ़ुर्क़त[1] हुआ
जो भी ठहरा क़ल्ब[2] में मेरे वही रूख़सत[3] हुआ

उनकी कुरबत[4] में दिले-पुरशौक़[5] का क्या पूछना
वक्त यूँ गुज़रा कि लम्हा लम्हा-ए-हैरत[6] हुआ

सूरते-इनकार में इक़रार[7] का अन्दाज़ था
दौलते-इक़रार लेकर उससे मैं रूख़सत हुआ

पूरा हो अहदे-वफ़ा[8] हम मुन्तज़िर[9] ही बस रहे
इन्तिज़ार अपना भी गोया साअते-हैरत[10] हुआ

1. ग़मे-फ़ुर्क़त– जुदाई का ग़म, 2. क़ल्ब– दिल, 3. रूख़सत– विदा, 4. कुरबत– नज़दीकी, 5. दिले–पुरशौक़– शौक़ से भरा दिल, 6. लम्हा-ए-हैरत– आश्चर्य का पल, 7. इक़रार– कुबूल, 8. अहदे-वफ़ा– वादा निभाना, 9. मुन्तज़िर– इन्तिज़ार में, 10. साअते-हैरत– हैरत की घड़ी

تیرا دامن نہ ملا مجھ کو اگر
میں یہ سمجھوں گا ہے آہ بے اثر

تیرے در کا تشنۂ دیدار ہے
کون لے جائے تیرے گھر تک خبر

دردِ رسوائی لئے ہوں جی رہا
میرے زخموں کی تجھے ہے کچھ خبر

گھور اندھیرے ہیں نہیں راہیں پتہ
بڑھ رہا ہوں سوئے منزل بے خبر

زینتِ محفل سنا تم ہی رہے
تم پہ ہی ٹھہری رہی سب کی نظر

تو ادھر سے ہو کے گزرا ہے ابھی
راہ مہکی تو ہوئی مجھ کو خبر

तेरा दामन न मिला मुझको अगर
मैं यह समझूँगा है आह बेअसर

तेरे दर का तशन-ए-दीदार[1] है
कौन ले जाए तेरे घर तक ख़बर

दर्दे-रुसवाई[2] लिए हूँ जी रहा
मेरे ज़ख़्मों की तुझे है कुछ ख़बर

घोर अँधेरे हैं नहीं राहें पता
बढ़ रहा हूँ सूए-मंज़िल[3] बेख़बर

ज़ीनते-महफ़िल[4] सुना तुम ही रहे
तुम पे ही ठहरी रही सबकी नज़र

तू इधर से होके गुज़रा है अभी
राह महकी तो हुई मुझको ख़बर

1. तशन-ए-दीदार– दर्शन की प्यास, 2. दर्दे-रूसवाई– बदनामी का दर्द, 3. सूए-मंज़िल– मंज़िल की तरफ़, 4. ज़ीनते-महफ़िल– महफ़िल की सजावट

میں تجھ سے کہہ نہ سکا دردِ مختصر نہ سہی
ملی زباں ہی نہ جذبات کو اگر نہ سہی

کبھی تو آؤں گا ان کے خیال میں، میں بھی
نہیں ہے آج مری سمت وہ نظر نہ سہی

کبھی تو چھلکے گا آنکھوں کا میری پیمانہ
مرے غموں کی نہیں کچھ تجھے خبر، نہ سہی

تم ہی گمان میں ہو اور تم ہی نگاہ میں ہو
رہا ہے میرا یہ عالم تمہیں خبر نہ سہی

بڑھی نہ بات لبوں پر سکون سے آگے
نظر نظر سے نہ کہہ پائی کچھ اگر، نہ سہی

کریں گے ہم کبھی شکوہ نہ اپنے زخموں کا
نہیں تمہاری توجّہ اگر ادھر، نہ سہی

मैं तुझसे कह न सका दर्दे-मुख़्तसर,[1] न सही
मिली ज़ुबाँ ही न जज़्बात[2] को अगर, न सही

कभी तो आऊँगा उनके ख़याल में मैं भी
नहीं है आज मेरी सम्त[3] वह नज़र, न सही

कभी तो छलकेगा आँखों का मेरी पैमाना
मेरे ग़मों की नहीं कुछ तुझे ख़बर, न सही

तुम्हीं गुमान में हो और तुम्हीं निगाह में हो
रहा है मेरा यह आलम तुम्हें ख़बर न सही

बढ़ी न बात लबों पर सुकून[4] से आगे
नज़र नज़र से न कह पाई कुछ अगर न सही

करेंगे हम कभी शिकवा[5] न अपने ज़ख़्मों का
नहीं तुम्हारी तवज्जोह[6] अगर इधर, न सही

1. मुख़्तसर– संक्षिप्त, 2. जज़्बात–भावनाएँ 3. सम्त–तरफ़ 4. सुकून–चैन
5. शिकवा–शिकायत 6. तवज्जोह–ध्यान

درد سا اک دل میں اٹھا ہے صنم
جانے کیا کیا میں نے سوچا ہے صنم
میں نے سوچا تھا بھلا دوں رنج و غم
پھر لگا یوں، زخم تازہ ہے صنم
کم نہ ہوگا وہ کسی صورت بھی اب
تیرے جانے کا جو صدمہ ہے صنم
شمعِ محفل بھی نہیں تیرا جواب
کون اس محفل میں تجھ سا ہے صنم
اس طرح ٹوٹا نہ کوئی آئینہ
دل کا شیشہ جیسے ٹوٹا ہے صنم
ان کی آنکھوں میں ہیں آنسو کچھ اس طرح
جس طرح شبنم کا قطرہ ہے صنم

दर्द सा एक दिल में उट्ठा है सनम
जाने क्या क्या मैने सोचा है सनम

मैने सोचा था भुला दूँ रंजो-ग़म
फिर लगा यों, ज़ख़्म ताज़ा है सनम

कम न होगा वह किसी सूरत भी अब
तेरे जाने का जो सदमा है सनम

शमे-महफ़िल भी नहीं तेरा जवाब
कौन इस महफ़िल में तुझ सा है सनम

इस तरह टूटा न कोई आइना
दिल का शीशा जैसे टूटा है सनम

उनकी आँखों में हैं आँसू कुछ इस तरह
जिस तरह शबनम का क़तरा है सनम

सद बर्ग

اشکِ غم میں ہے ترے کتنا اثر دیکھ لیا
جو بھی تھا رازِ نہاں دیدۂ تر دیکھ لیا

کوئی ہمدرد نظر آتا نہیں تیرے سوا
میں نے سو بار اِدھر اور اُدھر دیکھ لیا

نہ سنا آج تلک حرفِ شکایت تجھ سے
تیری خاموش محبّت کا اثر دیکھ لیا

ہم کہ جس سمت گئے تیرا اجالا پایا
آج ہم نے تجھے اے نورِ سحر دیکھ لیا

اثرِ قیدِ قفس ذہن پہ پایا ہم نے
دیکھ کر سوئے قفس ہم نے جدھر دیکھ لیا

آرزو اپنی یہی ہے کہ رہوں گرمِ سفر
جب سے منزل کی طرف ایک نظر دیکھ لیا

تاب قدموں میں نہیں باقی میں جاؤں تو کہاں
میں نے تو چل کے تجھے راہِ سفر دیکھ لیا

अश्के-ग़म में है तेरे कितना असर देख लिया
जो भी था राज़े-निहाँ[1] दीदा-ए-तर[2] देख लिया

कोई हमदर्द नज़र आता नहीं तेरे सिवा
मैने सौ बार इधर और उधर देख लिया

न सुना आज तलक हर्फ़े-शिकायत[3] तुझ से
तेरी ख़ामोश मुहब्बत का असर देख लिया

हम कि जिस सम्त[4] गए तेरा उजाला पाया
आज हमने तुझे ऐ नूरे-सहर[5] देख लिया

असरे-क़ैदे-क़फ़स[6] ज़हन[7] पे पाया हमने
देख कर सूए-क़फ़स[8] हमने जिधर देख लिया

आरजू़[9] अपनी यही है कि रहूँ गर्मे-सफ़र[10]
जब से मंज़िल की तरफ़ एक नज़र देख लिया

ताब क़दमों में नहीं बाक़ी मैं जाऊँ तो कहाँ
मैंने तो चल के तुझे राहे-सफ़र देख लिया

1. राज़े-निहाँ– छिपा हुआ राज़, 2. दीदा-ए-तर– गीली आँखें, 3. हर्फ़े-शिकायत– शिकायत का शब्द, 4. सम्त– तरफ़, 5. नूरे-सहर– सुबह की रौशनी, 6. क़फ़स– पिंजरा, 7. ज़हन– दिमाग़, 8. सूए-क़फ़स– पिंजरे की तरफ़, 9. आरजू़– इच्छा, 10. गर्मे-सफ़र– व्यस्त रहना

عشق طوفاں نے مجھے یوں ساحلوں میں رکھ دیا
میرے دل کو آپ کے دل کی حدوں میں رکھ دیا

کون سی طاقت تھی جس نے کر دیا آساں سفر
دفعتاً لاکر مجھے دلکش رتوں میں رکھ دیا

بیقرار مضطرب تھی خستہ جاں تھی زندگی
اس نے میرے دل کو بڑھ کر حوصلوں میں رکھ دیا

ہر قدم دشوار ہے ہر موڑ پر مشکل میں ہوں
زندگی نے مجھ کو اپنی بندشوں میں رکھ دیا

اے پری پیکر ترے قلبِ حزیں کا شکریہ
سوز اپنا میرے دل کی دھڑکنوں میں رکھ دیا

इश्क़ तूफ़ाँ ने मुझे यूँ साहिलों[1] में रख दिया
मेरे दिल को आपके दिल की हदों में रख दिया

कौन सी ताक़त थी जिसने कर दिया आसाँ सफ़र
दफ़अतन[2] लाकर मुझे दिलकश रुतों[3] में रख दिया

बेक़रारो-मुज़तरिब[4] थी ख़स्ताजाँ[5] थी ज़िन्दगी
उसने मेरे दिल को बढ़ कर हौसलों में रख दिया

हर क़दम दुश्वार[6] है हर मोड़ पर मुश्किल में हूँ
ज़िन्दगी ने मुझ को अपनी बन्दिशों में रख दिया

ऐ परीपैकर[7] तेरे क़ल्बे-हज़ीं[8] का शुक्रिया
सोज़[9] अपना मेरे दिल की धड़कनों में रख दिया

1. साहिलों– किनारों, 2. दफ़अतन– अचानक, 3. दिलकश रुतों– सुहानी ऋतुओं, 4. बेक़रारो-मुज़तरिब– बेचैन, 5. ख़स्ताजाँ– बुरी हालत, 6. दुश्वार– कठिन, 7. परीपैकर– महबूब, 8. क़ल्बे-हज़ीं– ग़मज़दा दिल, 9. सोज़– दुख, दर्द

کیسے کہہ دیں کہ انتشار نہیں
کسی پہلو بھی تو قرار نہیں

لذّتِ وصل تو ہے بس اک خواب
غم ہیں اتنے کہ کچھ شمار نہیں

ہم پریشان ہیں تو کیا یارو
ان کے دل کو بھی تو قرار نہیں

جی رہا ہوں تری محبّت میں
ورنہ جینے سے مجھ کو پیار نہیں

اس کی نظروں میں میرا غم ہے عیاں
کیسے کہہ دوں وہ غمگسار نہیں

دل میں رہ جائے گا یہ شوقِ وصال
میری قسمت میں وصل یار نہیں

कैसे कह दें कि इन्तिशार[1] नहीं
किसी पहलू भी तो क़रार नहीं

लज़्ज़ते-वस्ल[2] तो है बस एक ख़्वाब
ग़म हैं इतने कि कुछ शुमार[3] नहीं

हम परेशान हैं तो क्या यारो
उन के दिल को भी तो क़रार नहीं

जी रहा हूँ तेरी मुहब्बत में
वरना जीने से मुझ को प्यार नहीं

उसकी नज़रों में मेरा ग़म है अयाँ[4]
कैसे कह दूँ वह ग़मगुसार[5] नहीं

दिल में रह जाएगा यह शौक़े-विसाल[6]
मेरी क़िस्मत में वस्ले-यार[7] नहीं

1. इन्तिशार– परेशानी, 2. वस्ल– मिलन, 3. शुमार– गिनती, 4. अयाँ– ज़ाहिर, 5. ग़मगुसार– ग़म को बाँटने वाला, 6. विसाल– मिलन, 7. वस्ले-यार– यार से मिलन

میں کیسے سچ نہ کہوں منھ میں کیا زباں نہیں
جہاں کا میں نہ ہوا اور مرا جہاں نہیں

گزر رہی ہے مری ساری عمر خوابوں میں
کہیں زمیں تو کہیں ماہ و آسماں نہیں

بچا نہیں کوئی صحرا، نہ ہی کوئی گلشن
کہیں ہمارے قدم کا کوئی نشاں نہیں

بہار کیا ہے جو گل چیں نہ ہو بہاروں میں
اجڑ نہ جائے چمن کیوں جو باغباں نہیں

ہوا بھی تیز ہے کچھ شور بھی ہے دریا میں
رکے ہوئے ہیں سفینے جو بادباں نہیں

मैं कैसे सच न कहूँ मुँह में क्या ज़बान नहीं
जहाँ का मैं न हुआ और मेरा जहान नहीं

गुज़र रही है मेरी सारी उम्र ख़्वाबों में
कहीं ज़मीं तो कहीं माहो-आसमान[1] नहीं

बचा नहीं कोई सहरा[2] न ही कोई गुलशन
कहीं हमारे क़दम का कोई निशान नहीं

बहार क्या है जो गुलचीं[3] न हो बहारों में
उजड़ न जाए चमन क्यों जो बाग़बान[4] नहीं

हवा भी तेज़ है कुछ शोर भी है दरिया में
रूके हुए हैं सफ़ीने[5] जो बादबान[6] नहीं

1. माहो–आसमान– चाँद और आसमान, 2. सहरा– जंगल, 3. गुलचीं– फूल चुनने वाला, 4. बाग़बान– माली, 5. सफ़ीने– नावें, 6. बादबान– माँझी

اب ہمیں کیا چاہئے دامن تمہارا مل گیا
دل بہت خوش ہے کہ جینے کا سہارا مل گیا

زندگی بھر ہم رہے طوفان میں اے زندگی
بس یہی لگتا رہا ہم کو کنارا مل گیا

ہم ہجومِ خلق میں کھوئے ہوئے تھے بے پناہ
یک بیک ہم چونک اٹھے دامن تمہارا مل گیا

کیا ہوا جو ہر طرف رسوا ہوئے ہم عشق میں
داستاں میں نامِ نامی تو تمہارا مل گیا

جن کو پالا تھا اندھیروں نے بڑے اخلاص سے
آج ہم کو ان اجالوں کا سہارا مل گیا

अब हमें क्या चाहिए दामन तुम्हारा मिल गया
दिल बहुत ख़ुश है कि जीने का सहारा मिल गया

ज़िन्दगी भर हम रहे तूफ़ान में ऐ ज़िन्दगी
बस यही लगता रहा हमको किनारा मिल गया

हम हुजूमे-ख़ल्क़[1] में खोए हुए थे बेपनाह
यकबयक[2] हम चौंक उठे दामन तुम्हारा मिल गया

क्या हुआ जो हर तरफ़ रुसवा[3] हुए हम इश्क़ में
दास्ताँ में नामे-नामी[4] तो तुम्हारा मिल गया

जिनको पाला था अँधेरों ने बड़े इख़्लास[5] से
आज हम को उन उजालों का सहारा मिल गया

1. हुजूमे–ख़ल्क़–दुनिया की भीड़, 2. यकबयक– एकाएक, 3. रूसवा– बदनाम, 4. नामे–नामी– नेकनामी, 5. इख़्लास– खुलूस, मोहब्बत

مجھے جینے کی عادت ہو گئی افتاد میں تیری
گزرتی جا رہی ہے زندگانی یاد میں تیری

کہاں سے وقت لاؤں جو سنبھالوں دین و دنیا کو
خوشی دل کی بہت ہے جانِ جاں بیداد میں تیری

نہیں آساں عیاں ہونا تیری صورت اور سیرت کا
بہت سوچا ہے قدرت نے مگر ایجاد میں تیری

خیالوں میں ترے کھویا ہوا ہوں میں زمانے سے
مگر یہ ظلمات آئے کہاں سے یاد میں تیری

میں کافر ہوں تعلق میرا دینِ عاشقی سے ہے
مجھے ملتی ہے لذت پیار کی بیداد میں تیری

मुझे जीने की आदत हो गई उफ़्ताद[1] में तेरी
गुज़रती जा रही है ज़िन्दगानी याद में तेरी

कहाँ से वक़्त लाऊँ जो संभालूँ दीनो-दुनिया[2] को
ख़ुशी दिल की बहुत है जाने-जाँ बेदाद[3] में तेरी

नहीं आसाँ अयाँ[4] होना तेरी सूरत और सीरत का
बहुत सोचा है कुदरत ने मगर ईजाद[5] में तेरी

ख़यालों में तेरे खोया हुआ हूँ मै ज़माने से
मगर यह ज़ुल्मात[6] आए कहाँ से याद में तेरी

मैं काफिर हूँ तअल्लुक़[7] मेरा दीने-आशक़ी से है
मुझे मिलती है लज़्ज़त प्यार की बेदाद में तेरी

1. उफ़्ताद– उठक पटक, 2. दीनो-दुनिया– धर्म और दुनिया, 3. बेदाद–ज़ुल्म, 4. अयाँ– ज़ाहिर, 5. ईजाद– आविष्कार, 6. ज़ुल्मात – अंधेरे, 7. तअल्लुक– सम्बंध

اِس جبیں پر لکھ دیا کاتب نے اپنا فیصلہ
جرم جانا ہی نہیں یہ بھی ہے کیسا فیصلہ
التجا ہو بھی تو کیا ہو تو کہیں کوئی شفیق
ہے یہی بہتر کہ مانے ہے جو اس کا فیصلہ
کچھ کسی کا بس نہیں مجبور ہے ہر آدمی
وہ اٹل ہے، جاوداں ہے جو ہے اس کا فیصلہ
کیوں اٹھائیں بوجھ ہم جو اس نے ڈالا ہم پہ ہے
کیوں نہ لوٹا دیں رہیں محروم کیوں تا فیصلہ
ان تمناؤں کا حاصل کچھ نہیں ہے زندگی
اب رہے بے آرزو ہم تا ابد تا فیصلہ
کون جانے کیا سفر، کیا ہے ابد کیا ہے ازل
کون کاتب قسمتوں کا کیا ہے اس کا فیصلہ

इस जबीं[1] पर लिख दिया कातिब[2] ने अपना फ़ैसला
जुर्म जाना ही नहीं यह भी है कैसा फ़ैसला

इल्तिजा[3] हो भी तो क्या हो तो कहीं कोई शफ़ीक़[4]
है यही बेहतर कि माने है जो उसका फ़ैसला

कुछ किसी का बस नहीं मजबूर है हर आदमी
वह अटल है जाविदाँ[5] है जो है उसका फ़ैसला

क्यों उठाएँ बोझ हम जो उसने डाला हम पे है
क्यों न लौटा दें, रहें महरूम[6] क्यों ताफ़ैसला[7]

इन तमन्नाओं का हासिल कुछ नहीं है ज़िन्दगी
अब रहें बेआरज़ू[8] हम ता अबद[9] ता फ़ैसला

कौन जाने क्या सफ़र क्या है अबद क्या है अज़ल[10]
कौन कातिब क़िस्मतों का क्या है उसका फ़ैसला

1. जबीं– माथा, 2. कातिब– लिखने वाला, 3. इल्तिजा– प्रार्थना, 4. शफ़ीक– मेहरबान, 5. जाविदाँ– हमेशा, 6. महरूम– वंचित, 7. ताफ़ैसला– फ़ैसले तक, 8. बेआरज़ू– बिना इच्छा के, 9. अबद–शाश्वत, 10 अज़ल– आदि

یہ اضطراب ہی کہیں غم کی دوا نہ ہو
غم ہائے روزگار سے تو یوں خفا نہ ہو

اے دوست تیرے نام میں ہی نشہ کم نہیں
کیوں غم ہو مجھ کو راہ میں گر میکدہ نہ ہو

ماتم کروں میں زیست کی تاریکیوں پہ کیوں
قسمت میں ہی میری یہ اندھیرا لکھا نہ ہو

مجبوریاں تھیں اس کی جو وہ اجنبی رہا
ممکن نہیں کہ اس کو میرا غم پتہ نہ ہو

यह इज़्तिराब[1] ही कहीं ग़म की दवा न हो
ग़महाये-रोज़गार[2] से तू यूँ ख़फ़ा न हो

ऐ दोस्त तेरे नाम में ही नश्शा कम नहीं
क्यों ग़म हो मुझ को राह में गर मैकदा न हो

मातम करूँ मैं ज़ीस्त[3] की तारीकियों[4] पे क्यों
क़िस्मत में ही मेरी यह अंधेरा लिखा न हो

मजबूरियाँ थीं उसकी जो वह अजनबी रहा
मुमकिन नहीं कि उसको मेरा ग़म पता न हो

1. इज़्तिराब– बेचैनी, 2. ग़महाये-रोज़गार–ज़माने के ग़म, 3. ज़ीस्त– ज़िन्दगी, 4. तारीकियों– अंधेरों

زندگی بھر کی وفاؤں کا صلہ مل ہی گیا
آج مجھ کو اے صنم دامن تیرا مل ہی گیا

میرے سینے میں میرے دل میں لہو ہو یا نہ ہو
ان کے پاؤں میں مجھے رنگِ حنا مل ہی گیا

تیرے دامن کی ہوا سے کھل گیا دل کا گلاب
بے سہارا زندگی کو آسرا مل ہی گیا

بس وہی ذکرِ حسیں سامانِ رسوائی بنا
میرے افسانے میں کچھ ذکرِ آپ کا مل ہی گیا

جس سے میں بچھڑا تھا جو تھا میری سانسوں کے قریب
کیوں نہ ہوں نازاں میں وہ جانِ وفا مل ہی گیا
اب سرِ ساحل رکے گی جا کے کشتی اے ندیم
مجھ کو سیلابِ بلا میں راستہ مل ہی گیا

ज़िन्दगी भर की वफ़ाओं का सिला मिल ही गया
आज मुझको ऐ सनम दामन तेरा मिल ही गया

मेरे सीने में मेरे दिल में लहू हो या न हो
उनके पावों में मुझे रंगे-हिना मिंल ही गया

तेरे दामन की हवा से खिल गया दिल का गुलाब
बेसहारा ज़िन्दगी को आसरा मिल ही गया

बस वही ज़िक्रे-हसीं[1] सामाने-रूसवाई[2] बना
मेरे अफ़साने में कुछ ज़िक्र आपका मिल ही गया

जिससे मैं बिछड़ा था जो था मेरी साँसों के क़रीब
क्यों न हूँ नाज़ाँ[3] मैं वह जाने-वफ़ा मिल ही गया

अब सरे–साहिल[4] रुकेगी जा के कश्ती ऐ नदीम[5]
मुझको सैलाबे-बला[6] में रास्ता मिल ही गया

1. ज़िक्रे-हसीं– हसीन का ज़िक्र, 2. रुसवाई– बदनामी, 3. नाज़ाँ– गर्वित, 4. सरे-साहिल– किनारे पर, 5. नदीम-दोस्त, 6. सैलाबे-बला– मुश्किलों की बाढ़

مہکا چمن چمن ہے کہ آئی بہار ہے
پھر بھی نہ جانے کس لئے دل بیقرار ہے

محفل کا ذکر خوب ہے لیکن مرے حضور
تنہائیوں کی بات بھی تو خوشگوار ہے

ہم دل کی بات کیسے کہیں کس طرح کہیں
ملتے نہیں ہیں لفظ، زباں بیقرار ہے

وہ صبحِ خوشگوار گئی اور وہ شب گئی
اب ہے بہار اور نہ بادِ بہار ہے

یارو یہ زندگی بھی کوئی زندگی ہوئی
ہر وقت میرے ذہن میں ایک انتشار ہے

بازیٔ عشق اس سے بھلے جیت جاؤں میں
لیکن یہ میری جیت بھی تو ایک ہار ہے

महका चमन चमन है कि आई बहार है
फिर भी न जाने किस लिए दिल बेक़रार है

महफ़िल का ज़िक्र ख़ूब है लेकिन मेरे हुज़ूर
तन्हाइयों की बात भी तो ख़ुशगवार है

हम दिल की बात कैसे कहें किस तरह कहें
मिलते नहीं हैं लफ़्ज़ ज़ुबाँ बेक़रार है

वह सुबहे-ख़ुशगवार गई और वह शब गई
अब है बहार और न बादे-बहार[1] है

यारो यह ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी हुई
हर वक़्त मेरे ज़हन में एक इन्तिशार[2] है

बाज़ी-ए-इश्क़ उस से भले जीत जाऊँ मैं
लेकिन यह मेरी जीत भी तो एक हार है

1. बादे-बहार– बहार की हवा, 2. इन्तिशार– परेशानी

کچھ ایسا ہو عالم کچھ ایسا جہاں ہو
محبت کا سنگم زمیں آسماں ہو

چلے دور اِن تنگ گلیوں سے اب ہم
جہاں پر نہ یہ گردشِ آسماں ہو

نظر کیا نظر جو ہو حدِّ زمیں تک
نظر وہ نظر ہے جو تا آسماں ہو

کہاں جائیں ہم رازِ دل اپنا لے کر
چھپے کیسے وہ غم جو رخ سے عیاں ہو

نہیں راس آئی یہ رسموں کی دنیا
یہاں سے کہیں اور اپنا جہاں ہو

कुछ ऐसा हो आलम, कुछ ऐसा जहाँ हो
मुहब्बत का संगम ज़मीं आसमाँ हो

चले दूर इन तंग गलियों से अब हम
जहाँ पर न यह गर्दिशे-आसमाँ[1] हो

नज़र क्या नज़र जो हो हद्दे-ज़मीं[2] तक
नज़र वह नज़र है जो ता[3] आसमाँ हो

कहाँ जाएँ हम राज़े-दिल अपना लेकर
छुपे कैसे वह ग़म जो रुख़[4] से अयाँ हो

नहीं रास आई यह रस्मों की दुनिया
यहाँ से कहीं और अपना जहाँ हो

1. गर्दिशे-आसमाँ– परेशानियों का आसमान, 2. हद्दे-ज़मी– ज़मीन की हदें, 3. ता– तक, 4. रुख़– चेहरा

کیا تم کو بتائیں ہم یارو وہ صبح نہیں وہ شام نہیں
لمحے تو گزر تے رہتے ہیں جینے کا کوئی پیغام نہیں

اک نشہ سا ہر دم رہتا ہے کس حال میں ہوں کیا بتلاؤں
یوں اس نے پلا دی نظروں سے اب مجھ کو خیالِ جام نہیں

ہم ڈر تے رہے رسوائی سے دنیا سے اسے بھی خوف رہا
ہے جس سے محبت دل کو مرے ہونٹوں پہ اسی کا نام نہیں

یہ آگ ہے دل کی اے یارو! بجھتی ہی نہیں یہ اشکوں سے
یہ ایسا فسانہ ہے جس کا آغاز تو ہے انجام نہیں

میں نے ہی ترے میخانے کو میخانہ بنایا اے ساقی
میرے ہی مقدر میں کوئی پیمانہ نہیں ہے جام نہیں

क्या तुमको बताएँ हम यारो वह सुबह नहीं वह शाम नहीं
लम्हे तो गुज़रते रहते हैं जीने का कोई पैग़ाम नहीं

एक नशा सा हरदम रहता है किस हाल में हूँ क्या बतलाऊँ
यूँ उसने पिलादी नज़रों से अब मुझको ख़याले-जाम नहीं

हम डरते रहे रुसवाई[1] से, दुनिया से उसे भी ख़ौफ़ रहा
है जिससे मुहब्बत दिल को मेरे होठों पे उसी का नाम नहीं

यह आग है दिल की ऐ यारो बुझती ही नहीं यह अश्कों से
यह ऐसा फ़साना है जिसका आग़ाज़[2] तो है अंजाम[3] नहीं

मैने ही तेरे मयख़ाने को मयख़ाना बनाया ऐ साक़ी
मेरे ही मुक़द्दर[4] में कोई पैमाना नहीं है जाम नहीं

1. रुसवाई– बदनामी, 2. आग़ाज़– शुरूआत, 3. अंजाम– नतीजा, 4. मुक़द्दर– नसीब

اک بات دلِ ناداں نے کہی اور بات کہاں تک جا پہنچی
خوشبو کی طرح سے پھیل گئی اور بات کہاں تک جا پہنچی

اظہار کیا تھا ہم نے مگر اظہار تو اِک اظہار ہی تھا
پھر بات لبوں تک آ نہ سکی اور بات کہاں تک جا پہنچی

تنہائی کی باتیں جا نکلیں آوارہ ہواؤں کی صورت
اک بات کہی اک بات سنی اور بات کہاں تک جا پہنچی

اس دشتِ جنوں کی راہیں تو بے خار نہیں بے سنگ نہیں
اس دشت میں ہم نے چپ سادھی اور بات کہاں تک جا پہنچی

یہ عشق کی راہیں ہیں ان میں عقل اور گماں کی بات کہاں
اک بات جنونِ دل نے کہی اور بات کہاں تک جا پہنچی

इक बात दिले-नादाँ[1] ने कही और बात कहाँ तक जा पहुँची
खुशबू की तरह से फैल गई और बात कहाँ तक जा पहुँची

इज़हार[2] किया था हमने मगर इज़हार तो इक इज़हार ही था
फिर बात लबों तक आ न सकी और बात कहाँ तक जा पहुँची

तनहाई की बातें जा निकलीं आवारा हवाओं की सूरत
इक बात कही, इक बात सुनी और बात कहाँ तक जा पहुँची

इस दश्ते-जुनूँ[3] की राहें तो बेख़ार[4] नहीं बेसंग[5] नहीं
इस दश्त में हमने चुप साधी और बात कहाँ तक जा पहुँची

यह इश्क़ की राहें हैं इनमें अक़्ल और गुमाँ की बात कहाँ
इक बात जुनूने-दिल[6] ने कही और बात कहाँ तक जा पहुँची

1. दिले-नादाँ– नादान दिल, 2. इज़हार– प्रकट करना, 3. दश्ते-जुनूँ– जुनून का जंगल, 4. बेख़ार– काँटों के बिना, 5. बेसंग– पत्थरों के बिना, 6. जुनूने-दिल– दिल का पागलपन

تھی بہاریں یا تھا وہ اک جلوۂ عکسِ بہار
تھی وصالِ یار کی وہ رات یا خوابِ بہار

تھا فروزاں وہ چمن بکھرے تھے ہر سو گل جہاں
تھا مگر وہ در حقیقت منظرِ برقِ بہار

تھا وہ وصلِ یار کا لمحہ مثالِ روئے گل
ایسا لگتا تھا زمیں ہے رشکِ فردوسِ بہار

ہر طرف اک بے بسی تھی ہر طرف اک بے کسی
ہم نے جانا حشر اُس کا جب ہوئی رخصت بہار

کیا خبر پھر لوٹ کر آئیں گے یہ دن یا نہیں
کیا خبر پھر مہر باں ہو یا نہ ہو صبحِ بہار

گل ہو یا گلشن فنا ہر دلکشی ہونے کو ہے
ہاں مگر ہے باعثِ تسکینِ دل فصلِ بہار

थीं बहारें या था वह एक जलवा-ए-अक्से-बहार[1]
थी विसाले-यार[2] की वह रात या ख़्वाबे-बहार

था फ़रोज़ाँ[3] वह चमन बिखरे थे हर सू[4] गुल जहाँ
था मगर वह दर हक़ीक़त मंज़रे-बर्क़े-बहार[5]

था वह वस्ले-यार का लम्हा मिसाले-रूए-गुल[6]
ऐसा लगता था ज़मीं है रश्के-फ़िरदौसे-बहार[7]

हर तरफ एक बेबसी थी हर तरफ एक बेकसी
हम ने जाना हश्र उस का जब हुई रुख़सत बहार

क्या ख़बर फिर लौट कर आयेंगे ये दिन या नहीं
क्या ख़बर फिर मेहरबाँ हो या न हो सुबहे-बहार

गुल हो या गुलशन फ़ना[8] हर दिलकशी होने को है
हाँ मगर है बाइसे-तसकीने-दिल[9] फ़स्ले-बहार[10]

1. जलवा–ए–अक्से–बहार– बहार के साये का जलवा, 2. विसाले-यार– यार का मिलन, 3. फरोज़ाँ– रौशन, 4. सू– तरफ, 5. मंज़रे-बर्क़े-बहार– बिजली चमकने का मंज़र, 6. मिसाले-रूए-गुल– फूल के चेहरे की मिसाल, 7. रश्क़े-फ़िरदौसे-बहार– जन्नत की बहार से भी अच्छी, 8. फ़ना– नष्ट, 9. बाइसे-तसकीने-दिल– दिल की शान्ति का कारण, 10. फ़स्ले-बहार– बहार का मौसम

सद्द बर्ग

کیا بتائیں تمہیں ہم حال جیۓ جانے کا
کیا کریں قصّہ بیاں صبر کے پیمانے کا

ہاتھ آیا نہیں کچھ بھی غمِ فرقت کے سوا
مختصر قصہ ہے یہ پیار کے افسانے کا

وہ سرِ بام اچانک ترا آنا جانا
ہے سہارا دلِ بیتاب کو بہلا نے کا

موت سے پہلے کئی بار ہوئی موت مگر
خوف کچھ زیادہ ہی اب دل کو ہے مرجانے کا

وقت پر وقت کی کچھ قدر نہ جانی ہم نے
غم ہے اب دل کو بہت وقت گزر جانے کا

بے نیا زی تری عادت تری فطرت ہی سہی
ایسی عادت میں تو کچھ رنگ ہے بیگانے کا

क्या बताएँ तुम्हें हम हाल जिए जाने का
क्या करें क़िस्सा बयाँ सब्र के पैमाने का

हाथ आया नहीं कुछ भी ग़मे-फ़ुर्क़त[1] के सिवा
मुख़्तसर[2] क़िस्सा है यह प्यार के अफ़साने का

वह सरे-बाम[3] अचानक तेरा आना जाना
है सहारा दिले-बेताब को बहलाने का

मौत से पहले कई बार हुई मौत मगर
ख़ौफ़ कुछ ज़्यादा ही अब दिल को है मर जाने का

वक्त पर वक्त की कुछ क़द्र न जानी हमने
ग़म है अब दिल को बहुत वक़्त गुज़र जाने का

बेनियाज़ी[4] तेरी आदत तेरी फ़ितरत[5] ही सही
ऐसी आदत में तो कुछ रंग है बेगाने का

1. ग़मे-फ़ुर्क़त– जुदाई का ग़म, 2. मुख़्तसर– संक्षिप्त, 3. सरे-बाम– घर पर,
4. बेनियाज़ी– कृपा न करना, 5. फ़ितरत– स्वभाव

सद्द वर्ग

دل کے جہاں میں میں ہوں کہاں اور کہاں نہیں
یہ ایسا بھید ہے جو مجھی پر عیاں نہیں

ہے چار دن کی زندگی اس کی بساط کیا
سب بے نشاں یہاں ہیں کسی کا نشاں نہیں

کس کو نہیں ہے عرش کو چھو نے کی آرزو
ہے کون آنکھ جس میں کہ خوابِ گراں نہیں

گردش ہی تو ہے رہنما ہر موڑ پر مری
اس گردشِ حیات سے میں بد گماں نہیں

تجھ کو غمِ شباب ہے مجھ کو غمِ عذاب
تو جس جہاں میں ہے وہ میرا جہاں نہیں

دورِ بہار تھا تو حسیں رنگِ گل بھی تھا
آئی خزاں تو رنگتِ گل کا نشاں نہیں

दिल के जहाँ में मैं हूँ कहाँ और कहाँ नहीं
यह ऐसा भेद है जो मुझी पर अयाँ[1] नहीं

है चार दिन की ज़िन्दगी इसकी बिसात क्या
सब बेनिशाँ यहाँ हैं किसी का निशाँ नहीं

किसको नहीं है अर्श[2] को छूने की आरज़ू[3]
है कौन आँख जिसमें कि ख़्वाबे-गिराँ[4] नहीं

गर्दिश[5] ही तो है रहनुमा[6] हर मोड़ पर मेरी
इस गर्दिशे-हयात से मैं बदगुमाँ नहीं

तुझ को ग़मे-शबाब[7] है मुझको ग़मे- अज़ाब[8]
तू जिस जहान में है वह मेरा जहाँ नहीं

दौरे-बहार था तो हसीं रंगे-गुल भी था
आयी ख़िज़ाँ[9] तो रंगते-गुल का निशाँ नहीं

1. अयाँ– प्रकट, 2. अर्श– आसमान, 3. आरजू– इच्छा , 4. ख़्वाबे-गिराँ– परेशान करने वाला ख़्वाब, 5. गर्दिश– परेशानी, 6. रहनुमा– पथप्रदर्शक, 7. शबाब– जवानी, 8. अज़ाब– कष्ट, तकलीफ, 9. खिजाँ–पतझड़

زندگی اپنی رکی ہے تو کہاں
کیوں گم ہے اس طرح منزل کا نشاں
دل میں اک انجان سی جو چاہ تھی
کھو گئی ہے وہ اداسی میں کہاں
ہم یہاں تو رہ نہ پائیں گے جناب
ہم سخن کوئی نہ کوئی ہم زباں
یہ دیارِ غیر ہے اے میرے دل
کون سمجھے گا مری مجبوریاں

ज़िन्दगी अपनी रुकी है तो कहाँ
क्यों गुम है इस तरह मंज़िल का निशाँ

दिल में एक अन्जान सी जो चाह थी
खो गई है वह उदासी में कहाँ

हम यहाँ तो रह न पायेंगे जनाब
हम सुख़न[1] कोई न कोई हम ज़बाँ

यह दयारे-ग़ैर[2] है ऐ मेरे दिल
कौन समझेगा मेरी मजबूरियाँ

1. हम सुख़न– हमारी बात कहने वाला, 2. दयारे-ग़ैर– ग़ैर का घर

بہاریں آ گئیں پھر سے کہ دل گلزار ہے پھر سے
چمک اٹھّے اسی صورت در و دیوار ہیں پھر سے
نسیم صبح کی بھینی مہک پھیلی فضاؤں میں
بھرے پتوں اور پھولوں سے اب اشجار ہیں پھر سے
نہ جانے تشنگی کیوں پھر سے جاگی گوشۂ دل میں
طلب گارِ مے و مینا سبھی مے خوار ہیں پھر سے
جو گزری ہیں نہ آئیں گی گھٹائیں رنج و غم کی اب
خوشی کے ابر چھائے ہیں سحر آثار ہیں پھر سے
اجالا ہی اجالا ہے شبِ ویراں ہوئی روشن
وہی رونق ہے روشن کوچۂ و بازار ہیں پھر سے

बहारें आ गईं फिर से कि दिल गुलज़ार है फिर से
चमक उट्ठे उसी सूरत दरो-दीवार[1] हैं फिर से

नसीमे-सुबह[2] की भीनी महक फैली फ़ज़ाओं[3] में
भरे पत्तों और फूलों से अब अशजार[4] हैं फिर से

न जाने तश्नगी[5] क्यों फिर से जागी गोशा-ए-दिल[6] में
तलबगारे-मयो-मीना[7] सभी मयख़्वार[8] हैं फिर से

जो गुज़री हैं न आएंगी घटायें रंजो-ग़म की अब
ख़ुशी के अब्र[9] छाए हैं सहर[10] आसार हैं फिर से

उजाला ही उजाला है शबे-वीराँ[11] हुई रौशन
वही रौनक़ है रौशन कूचा व बाज़ार[12] हैं फिर से

1. दरो-दीवार– दरवाज़े और दीवारें 2. नसीमे-सुबह– सुबह की हवा, 3. फ़ज़ाओं– ऋतुओं, 4. अशजार– पेड़, 5. तश्नगी– प्यास, 6. गोशा-ए-दिल– दिल का कोना, 7. तलबगारे-मयो-मीना– शराब पीने के इच्छुक, 8. मयख़्वार– शराब पीने वाले, 9. अब्र– बादल, 10. सहर– सुबह, 11. शबे-वीराँ– सुनसान रात, 12. कूचा व बाज़ार– गलियाँ और बाज़ार

اے محبت کیا کہیں ہم با وفا ہو نہ سکے
رنگ اپنے خون کے رنگِ حنا ہو نہ سکے

تھا چمن مہکا ہوا بادِ صبا تھی وجد میں
دل بجھا تھا ہم جو سرشارِ صبا ہو نہ سکے

وقت شعلہ بھی ہے شبنم بھی، یہی سمجھے نہ ہم
کٹ گئی یہ عمر ہم وقت آشنا ہو نہ سکے

ہم کو یہ احساس ہے اس پر پشیماں بھی ہیں ہم
زندگانی ہم ترے راز آشنا ہو نہ سکے

دردِ دل دردِ جگر ہے ایسے ہم دم زیست کے
زندگی بھر جو مرے دل سے جدا ہو نہ سکے

دیکھتے ہی رہ گئے ہم ان کی پلکوں کی نمی
وہ رہے چپ اور ہم درد آشنا ہو نہ سکے

ऐ मुहब्बत क्या कहें हम बा वफ़ा हो ना सके
रंग अपने ख़ून के रंगे-हिना हो ना सके

था चमन महका हुआ, बादे-सबा[1] थी वज्द[2] में
दिल बुझा था हम जो सरशारे-सबा[3] हो ना सके

वक़्त शोला भी है शबनम भी, यही समझे ना हम
कट गई यह उम्र, हम वक़्त आशना[4] हो ना सके

हमको यह अहसास है इस पर पशेमाँ[5] भी हैं हम
ज़िन्दगानी हम तेरे राज़ आशना हो ना सके

दर्दे-दिल दर्दे-जिगर हैं ऐसे हमदम ज़ीस्त[6] के
ज़िन्दगी भर जो मेरे दिल से जुदा हो ना सके

देखते ही रह गए हम उनकी पलकों की नमी
वह रहे चुप और हम दर्द आशना हो ना सके

1. बादे–सबा–सुबह की हवा 2. वज्द– बेखुदी, 3. सरशारे-सबा– ठन्डी हवा,
4. आशना– दोस्त, 5. पशेमाँ– शरमिन्दा 6. ज़ीस्त–ज़िन्दगी

सद्द बर्ग

کیا کروں تجھ سے صنم شکوہ گلہ کیسا گلہ
ہو نظر تدبیر پر پھر دل ربا کیسا گلہ

یہ مقدر ہی تو تھا ان سے شناسائی جو تھی
اب اگر وہ ہیں خفا، ہوں گے خفا کیسا گلہ

اب تو ہم کھوئے ہوئے ہیں بس ہجوم خلق میں
ہاں کبھی کوئی مرا ہمراز تھا کیسا گلہ

اب وہ ہم ہیں اور ہم وہ یہ بھی ہے اک معجزہ
کیسی قربت اور کیسا فاصلہ کیسا گلہ

پڑ رہے ہیں وہ قدم دل پر ہماری خیر ہو
دل کی ہر دھڑکن ہے ان کا نقشِ پا کیسا گلہ

क्या करूँ तुझ से सनम शिकवा गिला[1] कैसा गिला
हो नज़र तदबीर[2] पर फिर दिल रूबा कैसा गिला

यह मुक़द्दर[3] ही तो था उनसे शनासाई[4] जो थी
अब अगर वह हैं ख़फ़ा, होंगे ख़फ़ा कैसा गिला

अब तो हम खोए हुए हैं बस हुजूमे-ख़ल्क़[5] में
हाँ कभी कोई मेरा हमराज़ था कैसा गिला

अब वह हम हैं और हम वह यह भी है इक मोजज़ा[6]
कैसी कुर्बत[7] और कैसा फ़ासला कैसा गिला

पड़ रहे हैं वह क़दम दिल पर हमारी ख़ैर हो
दिल की हर धड़कन है उनका नक़्शे-पा[8] कैसा गिला

---

1. शिकवा गिला–शिकायत, 2. तदबीर– तरकीब 3. मुक़द्दर–तक़दीर 4.शनासाई–दोस्ती, 5. हुजूमे-ख़ल्क़– दुनिया की भीड़, 6. मोजज़ा– चमत्कार, 7. कुर्बत– नज़दीकी 8. नक़्शे-पा– पैरों के निशान

یاد کرتا ہے باچشم تر اے صنم
ایک دل تم کو شام و سحر اے صنم

ایک عالم ہے تنہائی کا ہر طرف
ہے پریشان دل اور جگر اے صنم

مہربانی تری ہے کہ ہے بے رخی
تو نے دیکھا ادھر سے ادھر اے صنم

تیرا دامن ملا اور نہ قربت ملی
میری آہیں ہوئیں ہیں بے اثر اے صنم

میں نے جانا اسے وہ بھی اک عمر پر
راستہ دل کا ہے پُر خطر اے صنم

याद करता है बाचश्मे-तर[1] ऐ सनम
एक दिल तुम को शामो–सहर ऐ सनम

एक आलम है तनहाई का हर तरफ़
हैं परेशाँ दिल और जिगर ऐ सनम

मेहरबानी तेरी है, कि है बेरूख़ी
तूने देखा इधर से उधर ऐ सनम

तेरा दामन मिला और न कुर्बत[2] मिली
मेरी आहें हुई हैं बेअसर ऐ सनम

मैने जाना इसे वह भी एक उम्र पर
रास्ता दिल का है पुरख़तर[3] ऐ सनम

1. बाचश्मे-तर– भीगी आँखें, 2. कुर्बत– नजदीकी, 3. पुरख़तर– ख़तरों से भरा

نہ لوٹا سوئے زمیں سوئے آسماں جو گیا
ملی نہ اس کی خبر کوئی پھر وہاں جو گیا
نہیں ہے آنکھ میں وہ خواب کے سوا کچھ بھی
سنا کے عمرِ گزشتہ کی داستاں جو گیا
اسی میں خیر ہے گرم سفر رہا جائے
وہ کھویا اپنے غباروں میں کارواں جو گیا
اداس اداس ہیں آنکھیں بجھا بجھا ہے دل
نگاہیں پھیر کے وہ ہو کے بدگماں جو گیا
گلوں میں رنگ نہیں وہ بہارِ ناز نہیں
چمن کو چھوڑ کے وہ جانِ گلستاں جو گیا

न लौटा सूए-ज़मीं[1] सूए-आस्माँ[2] जो गया
मिली न उसकी ख़बर कोई फिर वहाँ जो गया

नहीं है आँख में वह ख़्वाब के सिवा कुछ भी
सुना के उम्र गुज़िश्ता की दास्ताँ जो गया

इसी में ख़ैर है गर्मे-सफ़र[3] रहा जाए
वह खोया अपने गुबारों में कारवाँ जो गया

उदास उदास हैं आँखें बुझा बुझा है दिल
निगाहें फेर के वह होके बदगुमाँ जो गया

गुलों में रंग नहीं वह बहारे-नाज़ नहीं
चमन को छोड़ के वह जाने-गुलिस्ताँ जो गया

1. सूए-ज़मीं– ज़मीन की तरफ़, 2. सूए-आस्माँ– आसमान की तरफ़, 3. गर्मे-सफ़र– व्यस्त

تجھ بن جیا نہ جائے راما
تجھ بن جیا نہ جائے

راتیں اپنی کیسے بیتیں کیسے دن بیتے ہیں
جینے کی کچھ آس نہیں ہے کیسے ہم جیتے ہیں
پل پل راہ نہاریں پلکیں، پل پل راس نہ آئے
تجھ بن جیا جائے

رات اندھیری دن ہے اندھیرا، کیسا سانجھ سویرا
کوئی آئے دیپ جلائے، اجلائے یہ بسیرا
آس لئے کب سے بیٹھا دل کوئی کرن نہ آئے
تجھ بن جیا نہ جائے

بھولے نہ اک پل بھی ہم ہیں تیری ساری باتیں
تیری میری قسمیں وعدے، تیری میری راتیں
ہے سپنا اب کیا وہ سارا، سمے خود لوٹ کے آئے
تجھ بن جیا نہ جائے

तुझ बिन जिया न जाए रामा
तुझ बिन जिया न जाए

रातें अपनी कैसे बीतीं कैसे दिन बीते हैं
जीने की कुछ आस नहीं है कैसे हम जीते हैं
पल-पल राह निहारें पलकें, पल-पल रास न आए

तुझ बिन जिया जाए

रात अंधेरी दिन है अंधेरा, कैसा साँझ सवेरा
कोई आए दीप जलाए उजलाए यह बसेरा
आस लिए कब से बैठा दिल कोई किरन न आए

तुझ बिन जिया न जाए

भूले न इक पल भी हम हैं तेरी सारी बातें
तेरी मेरी क़समें वादे, तेरी मेरी रातें
है सपना अब क्या वह सारा समय खुद लौट के आए

तुझ बिन जिया न जाए

تم چلے آئے ادھر صد شکریہ
کی عنایت کی نظر صد شکریہ
ہم تصور میں ہی شاداں تھے بہت
ایک احساسِ محبت اور وفا دل میں لئے
جو بھی لمحہ تھا وہ الفت کا تھا چاہت کا تھا
کرب تھا وہ سوز تھا یا درد تھا
ہو گئی دید سحر صد شکریہ
تم چلے آئے ادھر صد شکریہ
تھا گماں اک دن تم آؤ گے ادھر
دفعتاً ہو جائے گی اک دن سحر
حسن چھا جائے گا تا حد نظر
دفعتاً لمحہ وہی آ ہی گیا
تم چلے آئے ادھر صد شکریہ
کی عنایت کی نظر صد شکریہ
دل میں تم ہو دل کی ہر دھڑکن میں تم
سانس کی مہکی فضاؤں میں تم ہی
زندگی کے سادے کاغذ پر تم ہی تو نقش ہو
جسم بھی تم ہی ہو اور سایہ بھی تم
تم چلے آئے ادھر صد شکریہ
کی عنایت کی نظر صد شکریہ

तुम चले आए इधर सद[1] शुक्रिया
की इनायत[2] की नज़र सद शुक्रिया
हम तसव्वुर[3] में ही शादाँ[4] थे बहुत
इक अहसासे–मुहब्बत[5] और वफ़ा दिल में लिए
जो भी लम्हा था वह उल्फ़त का था चाहत का था
कर्ब[6] था वह सोज़[7] था या दर्द था
हो गई दीदे–सहर[8] सद शुक्रिया
तुम चले आए इधर सद शुक्रिया
था गुमाँ[9] इक दिन तुम आओगे इधर
दफ़अतन[10] हो जाएगी इक दिन सहर[11]
हुस्न छा जाएगा ता–हद्दे–नज़र[12]
दफ़अतन लम्हा वही आ ही गया
तुम चले आए इधर सद शुक्रिया
की इनायत की नज़र सद शुक्रिया
दिल में तुम हो दिल की हर धड़कन में तुम
साँस की महकी फ़िज़ाओं[13] में तुम्हीं
ज़िन्दगी के सादे काग़ज़ पर तुम्हीं तो नक़्श[14] हो
जिस्म भी तुम ही हो और साया भी तुम
तुम चले आए इधर सद शुक्रिया
की इनायत की नज़र सद शुक्रिया

---

1. सद– सौ, 2. इनायत –कृपा, 3. तसव्वुर– ख़याल, 4. शादाँ– खुश, 5. अहसासे-मुहब्बत– प्रेम का भाव, 6. कर्ब– तकलीफ 7. सोज़– दुख, 8. दीदे-सहर– सुबह का दर्शन, 9. गुमाँ– ख़याल, 10. दफ़अतन– अचानक, 11. सहर– सुबह, 12. ताहद्दे-नज़र– दृष्टि की सीमा तक, 13. फ़िज़ाओं– ऋतुओं, 14. नक़्श– निशान

सद वर्ग

ہم پہ طاری بے خودی تھی کون دستک دے گیا
تھی خبر اپنی نہ ان کی کون دستک دے گیا

ہم نہ سمجھے تھے بہاریں کیا خزاں ہوتی ہے کیا
دھوپ کیا ہے چھاؤں اے اہلِ جہاں ہوتی ہے کیا
رات کیا ہے اور سحر اے مہرباں ہوتی ہے کیا

ہم پہ طاری بے خودی تھی کون دستک دے گیا
تھی خبر اپنی نہ ان کی کون دستک دے گیا

تھے خیالوں میں ہمارے بندشوں کے سلسلے
تھی یہ حسرت آرزوئں کا کنول کیسے کھلے
جو جہاں ہے اپنی سوچوں میں وہی ہم کو ملے

ہم پہ طاری بے خودی تھی کون دستک دے گیا
تھی خبر اپنی نہ ان کی کون دستک دے گیا

سوچ میں تھے ہم کبھی اپنا بھی کچھ انداز تھا
اپنی تھی وہ زندگی جس پر کہ ہم کو ناز تھا
دوست اپنے بھی تھے کچھ اپنا بھی ہم آواز تھا

ہم پہ طاری بے خودی تھی کون دستک دے گیا
تھی خبر اپنی نہ ان کی کون دستک دے گیا

हम पे तारी[1] बेख़ुदी थी कौन दस्तक दे गया
थी ख़बर अपनी न उनकी कौन दस्तक दे गया

हम न समझे थे बहारें क्या ख़िज़ाँ[2] होती है क्या
धूप क्या है छाँव ऐ अहले-जहाँ[3] होती है क्या
रात क्या है और सहर[4] ऐ मेहरबाँ होती है क्या

हम पे तारी बेख़ुदी थी कौन दस्तक दे गया
थी ख़बर अपनी न उनकी कौन दस्तक दे गया

थे ख़यालों में हमारे बन्दिशों के सिलसिले
थी यह हसरत आरज़ूओं[5] का कँवल कैसे खिले
जो जहाँ है अपनी सोचों में वही हमको मिले

हम पे तारी बेख़ुदी थी कौन दस्तक दे गया
थी ख़बर अपनी न उनकी कौन दस्तक दे गया

सोच में थे हम कभी अपना भी कुछ अन्दाज़ था
अपनी थी वह ज़िन्दगी जिस पर कि हमको नाज़ था
दोस्त अपने भी थे कुछ अपना भी हमआवाज़[6] था

हम पे तारी बेख़ुदी थी कौन दस्तक दे गया
थी ख़बर अपनी न उनकी कौन दस्तक दे गया

1. तारी– छाई, 2. ख़िज़ाँ– पतझड़, 3. अहले-जहाँ– दुनिया के लोग, 4. सहर– सुबह, 5. आरज़ूओं– इच्छाओं, 6. हमआवाज़– आवाज़ में आवाज़ मिलाने वाला

सद बर्ग

میں رشتۂ وفا میں
پرواز اک خلا میں
کہاں سے اوٹ لاؤں
دامن کو جو چھپاؤں
دامن نہ میرا دیکھو
بے داغ وہ نہیں ہے

جب زندگی ستم تھی
تقدیر بے کرم تھی
میں شاہدِ جہاں تھا
اور عاشقِ سحر تھا
کہتا میں کیسے ان سے
میری خطا نہیں ہے

رسوا میں ہو رہا ہوں
دنیا کی گردشوں سے
مجبور ہو چلا ہوں
میں عشق کا نشہ ہوں
کیا کوئی اس شہر میں
مجھ سے برا نہیں ہے

मैं रिश्ता-ए-वफ़ा में
पुरराज़[1] एक ख़ला[2] में
कहाँ से ओट लाऊँ
दामन को जो छुपाऊँ
दामन न मेरा देखो
बेदाग़ वह नहीं है

जब ज़िन्दगी सितम थी
तक़दीर बेकरम थी
मैं शाहिदे-जहाँ[3] था
और आशिक़े-सहर[4] था
कहता मैं कैसे उनसे
मेरी ख़ता[5] नहीं है

रूसवा[6] मैं हो रहा हूँ
दुनिया की गर्दिशों[7] से
मजबूर हो चला हूँ
मैं इश्क़ का नशा हूँ
क्या कोई इस शहर में
मुझसे बुरा नहीं है

1. पुरराज़ –राज़ों से भरा, 2. ख़ला–शून्य, 3. शाहिदे-जहाँ– दुनिया का गवाह, 4. आशिक़े-सहर– सुबह का चाहने वाला, 5. ख़ता–ग़लती, 6. रूसवा–बदनाम, 7. गर्दिशों– परेशानियों

تاخیر سہی، کچھ شب تو ہوئی
کچھ وقت تھما، کچھ دم ٹھہرا
اک بار سہی، کچھ لمحہ ہی
دورانِ زماں اک پل ٹھہرا

جیون کا سفر دشوار سہی
الجھا الجھا پُر خم ہرجا
دن ختم ہوا وہ شب تو ہوئی
دورانِ زماں اک پل ٹھہرا

اک پل تو ملا، کچھ درد تھما
کچھ بات بنی کچھ دل نے کہا
دامن کی ہوا سے دل تو کھلا
تنہائی نے کچھ افسانہ کہا

کس کو ہے خبر انجامِ سفر
اس پار ہے کیا احوالِ بشر
اس پار گئی ہے کس کی نظر
دورانِ زماں اک پل ٹھہرا

باطل یہ سفر، یہ وقتِ رواں
باطل یہ دل، باطل ہے جہاں
باطل ہے ہر منزل کا نشاں
دورانِ زماں اک پل ٹھہرا

ताख़ीर[1] सही, कुछ शब[2] तो हुई
कुछ वक़्त थमा, कुछ दम ठहरा
इक बार सही, कुछ लम्हा ही
दौराने-ज़माँ[3] इक पल ठहरा

जीवन का सफ़र दुश्वार[4] सही
उलझा उलझा पुरख़म[5] हरजा[6]
दिन ख़त्म हुआ वह शब तो हुई
दौराने-ज़माँ इक पल ठहरा

इक पल तो मिला, कुछ दर्द थमा
कुछ बात बनी कुछ दिल ने कहा
दामन की हवा से दिल तो खिला
तनहाई ने कुछ अफ़साना कहा

किस को है ख़बर अंजामे-सफ़र[7]
उस पार है क्या अहवाले-बशर[8]
उस पार गई है किसकी नज़र
दौराने-ज़माँ इक पल ठहरा

बातिल[9] यह सफ़र, यह वक़्ते-रवाँ[10]
बातिल यह दिल बातिल है जहाँ
बातिल है हर मंज़िल का निशाँ
दौराने-ज़माँ इक पल ठहरा

1. ताख़ीर– देरी, 2. शब– रात, 3. दौराने-ज़माँ– वक़्त की रफ़्तार, 4. दुश्वार– कठिन, 5. पुरख़म– टेढ़ा मेढ़ा, 6. हरजा– हर तरफ़, 7. अंजामे-सफ़र– सफ़र का नतीजा 8. बशर–आदमी, 9. बातिल– झूठा, 10 वक़्ते-रवाँ– चलता हुआ वक़्त

सद बर्ग

بہت دیکھی یہ دنیا تھک چکی ہیں اب مری نظریں
نہیں اب کچھ تمنا تھک چکی ہیں اب مری نظریں

گلستاں تھے کبھی بادِ صبا میں جھومتے اک دن
ہوا کے نم وہ جھونکے تھے گلوں کو چومتے اک دن
ہے کچھ اب جستجو باقی نہ دل میں حوصلہ باقی

بہت دیکھی یہ دنیا تھک چکی ہیں اب مری نظریں
نہیں اب کچھ تمنا تھک چکی ہیں اب مری نظریں

نہیں جانا کہ ہے جانا کہاں منزل کہاں اپنی
تھکا ذوقِ سفر ہوں اب نہیں ہے یاد منزل کی
نہیں لگتا ہے دل اب دہر کی رنگینیوں میں بھی

بہت دیکھی یہ دنیا تھک چکی ہیں اب مری نظریں
نہیں اب کچھ تمنا تھک چکی ہیں اب مری نظریں

बहुत देखी यह दुनिया, थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें
नहीं अब कुछ तमन्ना, थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें

गुलिस्ताँ थे कभी बादे-सबा[1] में झूमते इक दिन
हवा के नम वह झोंके थे गुलों को चूमते इक दिन
है कुछ अब जुस्तजू[2] बाक़ी न दिल में हौसला बाक़ी

बहुत देखी यह दुनिया, थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें
नहीं अब कुछ तमन्ना, थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें

नहीं जाना कि है जाना कहाँ मन्ज़िल कहाँ अपनी
थका ज़ौक़े-सफ़र[3] हूँ अब नहीं है याद मंज़िल की
नहीं लगता है दिल अब दहर[4] की रंगीनियों में भी

बहुत देखी यह दुनिया थक चुकी हैं अब मेरी नज़रें
नहीं अब कुछ तमन्ना, थक चुकी है अब मेरी नज़रें

1. बादे-सबा– सुबह की हवा 2. जुस्तजू– तलाश, 3. ज़ौक़े-सफ़र– सफर का शौक़, 4. दहर– दुनिया

ادھر دل کی بے تابیاں بڑھ رہی ہیں
ادھر وہ چلے ہیں خراماں خراماں
سرِ راہ ہیں منتظر میری نظریں
ادھر وہ چلے ہیں خراماں خراماں

ہیں خاموش شامیں تو ساکت سحر ہے
ہر لمحہ آ مد کی ان کی خبر ہے
اِدھر دل کی دھڑکن پہ گہرا اثر ہے
اُدھر وہ چلے ہیں خراماں خراماں

ہیں انکے قدم پر ہماری نگاہیں
تبسم سے ان کے ہی روشن ہیں راہیں
اب اُٹھنے کو ہے ان کی چشم محبت
وہ ہنس کر چلے ہیں خراماں خراماں

جھکی ان کی پلکیں جھکا آسماں ہے
اٹھی ان کی نظریں رکی گردشیں ہیں
چلے ہیں وہ نظروں کو اپنی جھکائے
چلے ہیں وہ ہنس کر خراماں خراماں

محبت میں خود کو ڈبوئے ہوئے ہیں
تصور میں اپنے وہ کھوئے ہوئے ہیں
نہ جاگے ہوئے ہیں نہ سوئے ہوئے ہیں
وہ ہنس کر چلے ہیں خراماں خراماں

इधर दिल की बेताबियाँ बढ़ रही हैं
उधर वह चले हैं ख़िरामाँ ख़िरामाँ[1]
सरे-राह हैं मुन्तज़िर[2] मेरी नजरें
उधर वह चले हैं ख़िरामाँ ख़िरामाँ
हैं ख़ामोश शामें तो साकित[3] सहर[4] है
हर लम्हा आमद[5] की उनकी ख़बर है
इधर दिल की धड़कन पे गहरा असर है
उधर वह चले हैं ख़िरामाँ ख़िरामाँ
हैं उनके क़दम पर हमारी निगाहें
तबस्सुम से उनके ही रौशन हैं राहें
अब उठने को है उन की चश्मे-मुहब्बत[6]
वह हँस कर चले हैं ख़िरामाँ ख़िरामाँ
झुकी उनकी पलकें झुका आसमाँ है
उठी उनकी नज़रें रुकी गर्दिशें[7] हैं
चले हैं वह नज़रों को अपनी झुकाए
चले हैं वह हँस कर ख़िरामाँ ख़िरामाँ
मुहब्बत में ख़ुद को डुबोए हुए हैं
तसव्वुर[8] में अपने वह खोए हुए हैं
न जागे हुए हैं न सोए हुए हैं
वह हँस कर चले हैं ख़िरामाँ ख़िरामाँ

1. ख़िरामाँ– धीरे, 2. मुन्तज़िर– प्रतीक्षा में, 3. साकित– ख़ामोश, 4. सहर– सुबह, 5. आमद– आना, 6. चश्मे-मुहब्बत– मुहब्बत की नज़र, 7. गर्दिशें– परेशानियाँ, 8. तसव्वुर– ख़याल

چلا کون آیا ہے دھیرے سے دل میں
نہ جانے یہ ہے کس کے قدموں کی آہٹ
یہ بھینی سی خوشبو جو مہکی ہے ہر سوٗ

چلا کون آیا ہے دھیرے سے دل میں

تخیل میں ایسا کبھی تو نہیں تھا
حسیں اتنا لمحہ کبھی تو نہیں تھا
دبے پاؤں دھیمی یہ چاپیں ہیں کس کی

چلا کون آیا ہے دھیرے سے دل میں

عجب سا اجالا ہے دشتِ جہاں میں
عجب حسن ہے بزمِ عمرِ رواں میں
یہ قدموں نے کس کے چھوا دھڑکنوں کو

چلا کون آیا ہے دھیرے سے دل میں

نہ سوچا تھا وہ دفعتاً یوں ملے گا
میری زندگی کا کنول یوں کھلے گا
اچانک یہ آنے کی خوشبو ہے کس کی

چلا کون آیا ہے دھیرے سے دل میں

चला कौन आया है धीरे से दिल में
न जाने यह है किस के क़दमों की आहट
यह भीनी सी ख़ुशबू जो महकी है हर सू[1]

चला कौन आया है धीरे से दिल में

तख़य्युल[2] में ऐसा कभी तो नहीं था
हसीं इतना लम्हा कभी तो नहीं था
दबे पाँव धीमी यह चापें हैं किसकी

चला कौन आया है धीरे से दिल में

अजब सा उजाला है दश्ते-जहाँ[3] में
अजब हुस्न है बज़्मे-उम्रे-रवाँ[4] में
यह क़दमों ने किसके छुआ धड़कनों को

चला कौन आया है धीरे से दिल में

न सोचा था वह दफ़अतन[5] यूँ मिलेगा
मेरी ज़िंदगी का कँवल यूँ खिलेगा
अचानक यह आने की ख़ुशबू है किसकी

चला कौन आया है धीरे से दिल में

1.सू–तरफ़ 2. तख़य्युल–कल्पना 3. दश्ते–जहाँ–दुनिया का जंगल
4. बज़्में–उम्रे–रवाँ– आयु की महफ़िल 5. दफ़अतन–अचानक

सद्व बर्ग

کھو گیا تارِ جہاں میں خواب اپنا
کہکشاں سا جھلملاتا خواب اپنا

آنکھ نے موندے تھے پلکوں میں وہ سپنے
تھے کبھی مل کر سنجوئے، تھے جو اپنے
کہ ہوئے بیدار ناحق کھو چکے اب
گردشِ دہر و زماں میں خواب اپنا

گر ہے سپنوں میں بنیادِ حقیقت
ہے حقیقی کس قدر بخود حقیقت
تم تو تھے سپنوں میں جو گر اس جہاں سے
تھا بھلے کوسوں قدم ہی خواب اپنا

غم علم گر ہیں نشانے رہ سفر کے
تو رہیں سپنے سہارے ہی سفر کے
آنکھ نہ حق ہی کھولی کیونکر ہماری
نہ ملا پھر کھو گیا وہ خواب اپنا

زندگی ہے زندگی لمحے لمحے کی
داستاں ہے یہ قضا کی ہر لمحے کی
خواب تھا کہ شادماں موجِ رواں تھا
کاش ہوتا بیکراں وہ خواب اپنا

کھو گیا تارِ جہاں میں خواب اپنا
کہکشاں سا جھلملاتا خواب اپنا

खोगया तारे–जहाँ में ख़्वाब अपना
कहकशाँ सा झिलमिलाता ख़्वाब अपना
आँख ने मूंदे थे पलकों में वह सपने
थे कभी मिल कर संजोए, थे जो अपने
के हुए बेदार,[1] नाहक़ खो चुके अब
गर्दिशे–दहरो–ज़माँ[2] में ख़्वाब अपना
गर है सपनों में बुनियादे–हक़ीक़त
है हक़ीक़ी[3] किस क़दर बख़ुद हक़ीक़त
तुम तो थे सपनो में जो गर इस जहाँ से
था भले कोसों क़दम ही ख़्वाब अपना
ग़म अलम गर हैं निशाने–रह सफ़र के
तो रहें सपने सहारे ही सफ़र के
आँख नाहक ही खुली क्यूँकर हमारी
ना मिला फिर खो गया वो ख़्वाब अपना
ज़िन्दगी है ज़िन्दगी लम्हे लम्हे की
दास्ताँ है ये क़ज़ा[4] की हर लम्हे की
ख़्वाब था कि शादमाँ मौजे-रवाँ था
काश होता बेकराँ[5] वह ख़्वाब अपना
खो गया तारे-जहाँ में ख़्वाब अपना
कहकशाँ सा झिलमिलाता ख़्वाब अपना

1. बेदार– जागना, 2. गर्दिशे-दहरो-ज़माँ– दुनिया भर की परेशानियाँ, 3. हक़ीक़ी– वास्तविक, 4. क़ज़ा– मौत, 5. बेकराँ– बिना किनारे का

نُپُر کو

نُپُر کو ہوں روشن فضائیں مبارک
ہوں دلدار و دلکش ہوائیں مبارک
ہوں آمد بہارِ چمن کی مبارک
مبارک ہوں دل کی صدائیں مبارک

مبارک ہو اس کو سفر زندگی کا
مبارک ہوں جینے کی راہیں مبارک
بفیضِ فلک برکتیں ہوں مبارک
ہوں موسم کی اس کو بہاریں مبارک

اسے خوشبوئے گلستاں ہو مبارک
اسے سبزو بادِ صبا ہو مبارک
ہو شہرت مبارک، ہو عزت مبارک
مسرت کی دلکش فضا ہو مبارک

مبارک ہو گل، گل کدہ ہو مبارک
نہ ہو رنج اس کو مسرت مبارک
نہ ہی اب اندھیرا رہے آرزو میں
مبارک ہو اس کو لطافت مبارک

नूपुर को

नूपुर को हों रौशन फ़िज़ायें मुबारक
हो दिल—दारो-दिलकश हवायें मुबारक
हो आमद[1] बहारे-चमन की मुबारक
मुबारक हों दिल की सदायें मुबारक

मुबारक हो उसको सफ़र ज़िन्दगी का
मुबारक हों जीने की राहें मुबारक
बफ़ैज़े-फ़लक[2] बरकतें हों मुबारक
हों मौसम की उसको बहारें मुबारक

उसे ख़ुशबू-ए-गुलिस्ताँ हो मुबारक
उसे सब्ज़ो-बादे-सबा हो मुबारक
हो शोहरत मुबारक हो इज़्ज़त मुबारक
मसर्रत[3] की दिलकश फिज़ा हो मुबारक

मुबारक हो गुल, गुलकदा हो मुबारक
न हो रंज उसको मसर्रत मुबारक
ना ही अब अंधेरा रहे आरजू[4] में
मुबारक हो उसको लताफ़त[5] मुबारक

1. आमद— आना, 2. बफ़ैज़े-फ़लक— आसमान की कृपा से, 3. मसर्रत— ख़ुशी, 4. आरजू— इच्छा, 5. लताफ़त— हँसी ख़ुशी

قطعات

ابھی کچھ اور صہبا ڈال دے ساغر میں اے ساقی
مٹی نہ تشنگی میری ابھی کچھ ہوش ہے باقی
پلا دے آج اتنی بے خودی میں زندگی گزرے
نہ ہووے اب سحر، بیتے نہیں جورات ہے باقی

اے ساقی آج پینے دے مجھے صہبا کو جی بھر کے
تری محفل میں آیا ہوں مجھے اب خوب پینے دے
بہت مشکل میں ہوتی ہے عنایت کی نظر تیری
عنایت کی نظر کے ساتھ میں تو مجھ کو جینے دے

اے ساقی کیا ہوا خالی اگر ہے جام اور ساغر
تری آنکھوں سے پی لوں گا مجھے تو مے ہی پینا ہے
ہے تیری مہر بانی بزم تیری اور نظر تیری
مجھے تو تیرے دامن کے تلے ہی عمر جینا ہے

کہاں ہیں ساز تیرے اور تیرے قدر داں سارے
اے ساقی آج کیوں خاموش ہے تیرا یہ میخانہ
پلا دے آج جی بھر کے یہ تیرے جشن کا دن ہے
اٹھوں سیراب ہو کر تیری محفل سے میں دیوانہ
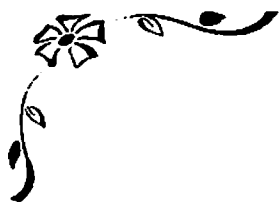
क़तआत

अभी कुछ और सहबा[1] डाल दे साग़र[2] में ऐ साक़ी
मिटी न तश्नगी[3] मेरी अभी कुछ होश है बाक़ी
पिलादे आज इतनी बेख़ुदी में ज़िन्दगी गुज़रे
न होवे अब सहर[4] बीते नहीं जो रात है बाक़ी

ऐ साक़ी आज पीने दे मुझे सहबा को जी भर के
तेरी महफ़िल में आया हूँ मुझे अब ख़ूब पीने दे
बहुत मुश्किल में होती है इनायत[5] की नज़र तेरी
इनायत की नज़र के साथ में तू मुझ को जीने दे

ऐ साक़ी क्या हुआ ख़ाली अगर है जाम और साग़र
तेरी आंखों से पी लूगाँ मुझे तो मय ही पीना है
है तेरी मेहरबानी बज़्म[6] तेरी और नज़र तेरी
मुझे तो तेरे दामन के तले ही उम्र जीना है

कहाँ हैं साज़ तेरे और तेरे क़द्रदाँ सारे
ऐ साक़ी, आज क्यों ख़ामोश है तेरा यह मयख़ाना
पिला दे आज जी भर के यह तेरे जश्न का दिन है
उठूँ सैराब[7] हो कर तेरी महफिल से मैं दीवाना

1. सहबा– शराब, 2. साग़र– प्याला, 3. तश्नगी– प्यास, 4. सहर– सुबह, 5. इनायत– कृपा, 6. बज़्म– महफ़िल, 7. सैराब– संतुष्ट

الگ الگ شعر

عشق میں قلب بے قرار ہوا
امتحاں اپنا بار بار ہوا

چلے اعتمادِ نظر آزمانے
چلے دیکھنے ہم جلے آشیانے

یاد تیری آج دل میں بے قیاس آتی رہی
ایک بجلی سی میری رگ رگ میں لہراتی رہی

وہ آئے کیا کہ ہم اپنے حواس کھو بیٹھے
کہ دل کی داستاں کہنے کی آس کھو بیٹھے

چلو ہم دو قدم کے واسطے ہی ہم سفر ہو لیں
جدھر سب جا رہے ہیں ہم بھی اے یارو! ادھر ہو لیں

अलग अलग शेर

इश्क़ में क़ल्ब[1] बेक़रार हुआ
इम्तिहाँ अपना बार बार हुआ

०

चले ऐतमादे-नज़र[2] आज़माने
चले देखने हम जले आशियाने

०

याद तेरी आज दिल में बेक़यास[3] आती रही
एक बिजली सी मेरी रग रग में लहराती रही

०

वह आए क्या कि हम अपने हवास खो बैठे
कि दिल की दास्ताँ[4] कहने की आस खो बैठे

०

चलो हम दो क़दम के वास्ते ही हम सफ़र होलें
जिधर सब जा रहे हैं हम भी ऐ यारो उधर होलें

---

1. क़ल्ब– दिल, 2. ऐतमादे-नज़र– नज़र का भरोसा, 3. बेक़यास– बहुत ज़्यादा
4. दास्ताँ– कहानी